केंद्रीय विद्यालय संगठन,

क्षेत्रीय संभाग, बेंगलूरु

सहायक सामग्री

कक्षा - दसवीं

विषय : हिन्दी

पाठ्यक्रम -'अ'

हिंदी पाठ्यक्रम -अ (कोड सं. 002)

कक्षा 10वीं हिंदी - अ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2024-25

खंड		भारांक
क	अपठित बोध	14
ख	व्यावहारिक व्याकरण	16
ग	पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक	30
घ	रचनात्मक लेखन	20

- भारांक-(80(वार्षिक बोर्ड परीक्षा)+20 (आंतरिक परीक्षा)

निर्धारित समय- 3 घंटे

भारांक-80

वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन				
खंड – क (अपठित बोध)				
		विषयवस्तु	उप भार	कुल भार
1		अपठित गद्यांश व काव्यांश पर बोध, चिंतन, विश्लेषण, सराहना आदि पर बहुविकल्पीय, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न		14
	अ	एक अपठित गद्यांश लगभग 250 शब्दों का इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पी प्रश्न (1x3=3), अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न (2×2=4) पूछे जाएँगे	7	
	ब	एक अपठित काव्यांश लगभग 120 शब्दों का इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पी प्रश्न (1x3=3), अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न (2×2=4) पूछे जाएँगे	7	
2		व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/ संरचना आदि पर अतिलघूत्तरात्मक/लघूत्तरात्मक प्रश्न। (1x16) (कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे)		16
		खंड – ख (व्यावहारिक व्याकरण)		
	1	रचना के आधार पर वाक्य भेद (1x4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	2	वाच्य (1x4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	3	पद परिचय (1x4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	4	अलंकार- (अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण) (1x4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	

3	खंड – ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)				
	अ	गद्य खंड पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग 2)		11	30
		1	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच **बहुविकल्पी प्रश्न** पूछे जाएँगे। (1x5)	5	
		2	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित पाठों में से विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे।(विकल्प सहित- 25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)	6	
	ब		**काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक) (क्षितिज भाग 2)**	11	
		1	क्षितिज(भाग 2) से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच **बहुविकल्पी प्रश्न** पूछे जाएँगे (1x5)	5	
		2	क्षितिज (भाग 2) से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)	6	
	स		**पूरक पाठ्यपुस्तक (कृतिका भाग – 2)**	8	
			कृतिका (भाग 2) से निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे। (4x2) (विकल्प सहित-50-60 शब्द-सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे)	8	
4	**खंड – घ (रचनात्मक लेखन)**				
	i	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन (6 x1 = 6)		6	20
	ii	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र (5 x 1= 5)		5	
	iii	रोजगार से संबंधित रिक्तियों के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त लेखन (5 x 1= 5) अथवा विविध विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लेखन (5 x 1= 5)		5	
	iv	विषय से संबंधित लगभग 40 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन (4 x 1 = 4) अथवा		4	

		संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश) (4 x 1 = 4)		
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन	अंक	20
	अ	सामयिक आकलन	5	
	ब	बहुविध आकलन	5	
	स	पोर्टफ़ोलियो	5	
	द	श्रवण एवं वाचन	5	
		कुल		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट – निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे–

क्षितिज, भाग – 2	काव्य खंड	• देव- सवैया, कवित्त (पूरा पाठ) • गिरिजाकुमार माथुर – छाया मत छूना (पूरा पाठ) • ऋतुराज – कन्यादान (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• महावीरप्रसाद द्विवेदी – स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (पूरा पाठ) • सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- मानवीय करुणा की दिव्य चमक (पूरा पाठ)
कृतिका, भाग – 2	• एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! (पूरा पाठ) • जार्ज पंचम की नाक (पूरा पाठ)	

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

अपठित गद्यांश

एवं

अपठित काव्यांश

<u>अपठित गद्यांश</u>

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

<u>गद्यांश-1</u>

सफलता चाहने वाले मनुष्य का प्रथम कर्तव्य यह देखना है कि उसकी रुचि किन कार्यों की ओर अधिक है। यह बात गलत है कि हर कोई मनुष्य हर एक काम कर सकता है। लार्ड वेस्टरफील्ड स्वाभाविक प्रवृत्तियों के काम को अनावश्यक समझते थे और केवल परिश्रम को ही सफलता का आधार मानते थे। इसी सिद्धांत के अनुसार उन्होंने अपने बेटे स्टेनहोप को जो सुस्त ढीला-ढाला, असावधान था, सत्पुरुष बनाने का प्रयास किया। वर्षों परिश्रम करने के बाद भी लड़का ज्यों का त्यों रहा और जीवन-भर योग्य न बन सका। स्वाभाविक प्रवृत्तियों को जानना कठिन भी नहीं है। बचपन के कामों को देखकर बताया जा सकता है कि बच्चा किस प्रकार का मनुष्य होगा। प्रायः यह संभावना प्रबल होती है कि छोटी आयु में कविता करने वाला कवि, सेना बनाकर चलने सेनापति, भुट्टे चुराने वाला चोर-डाकू,पुर्जे कसने वाला मैकेनिक और विज्ञान में रुचि रखने वाला वैज्ञानिक बनेगा।जब यह बात विदित हो जाए कि बच्चे की रुचि किस काम की ओर है, तब यह करना चाहिए कि उसे उसी विषय की ऊँची शिक्षा दिलाई जाए। ऊँची शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य अपने काम- धंधे में कम परिश्रम से अधिक सफल हो सकता है। जिनके काम-धंधे का पूर्ण प्रतिबिंब बचपन में नहीं दिखता, अपवाद ही हैं । प्रत्येक मनुष्य में एक विशेष कार्य को अच्छी तरह करने की शक्ति होती है। वह बड़ी दृढ़ और उत्कृष्ट होती है। वह देर तक नहीं छिपती। उसी के अनुकूल व्यवसाय चुनने से ही सफलता मिलती है। जीवन में यदि आपने सही कार्यक्षेत्र चुन लिया तो समझ लीजिए कि बहुत बड़ा काम कर लिया।

(क) लार्ड वेस्टरफील्ड का क्या सिद्धांत था ?

(i) परिश्रम ही सफलता का आधार है| (ii) कविता करने वाला कवि होगा
(iii) मनुष्य एक काम कर सकता है (iv) सेना बनाकर चलने वाला सेनापति होता है

(ख) स्टेनहोप के विषय में कौन सी बात सही नहीं है ?

(i) वह सुस्त ढीला-ढाला, असावधान था (ii) वह बड़ा होकर सत्पुरुष बन गया।
(iii) वह जीवन-भर योग्य न बना। (iv) पिता ने अपने सिद्धांत का स्टेनहोप पर परीक्षण किया।

(ग) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढिए। तत्पश्चात नीचे दिए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए।

कथन (A) : सफ़लता चाहने वाले मनुष्य को अपनी रुचि के कार्यों में उच्च शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।
कारण (R): उच्च शिक्षा प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्यक्षेत्र में सफ़ल हो सकता है।

(i) कथन (A) सही है , कारण (R) गलत है।
(ii) (ii) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है।
(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
(iv) कथन (A) (R) और कारण (A) (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) सही कार्यक्षेत्र चुनने के क्या लाभ हैं ?

(ङ) बालक आगे चलकर कैसा मनुष्य बनेगा इसका अनुमान कैसे लगाया जा सकता है?

<u>गद्यांश-2</u>

निंदा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निंदको को एक जगह बैठकर निंदा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए, दो चार ईश्वर भक्तों से जो रामधुन गा रहे हैं। निंदको की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसलिए संतों ने निंदको को “आंगन कुटी छवाय” पास रखने की सलाह दी है कुछ मिशनरी निंदक मैने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते पर चौबीस घंटे वे निंदा-कर्म में पवित्र भाव से लगे रहते हैं। प्रसंग आने पर ये अपने बाप की पगड़ी भी उसी आनंद से उछालते हैं, जिस आनंद से अन्य लोग दुश्मन की। निंदा इनके लिए टॉनिक होती है। ईर्ष्या- द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है। लेकिन इसमे वह मज़ा नहीं जो मिशनरी भाव निंदा करने में है। निंदकों को दंड देने की जरूरत नहीं वे

खुद ही दंडित होते हैं आप चैन से सोइए, वह जलन के कारण सो नहीं पाता। ईर्ष्या- द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है और निंदा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निंदक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। उसे और क्या दंड चाहिए? निरंतर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है, जैसे-एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी कविता लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

(क) लेखक ने किसकी जैसी एकाग्रता को दुर्लभ कहा है?

(i)	विद्यार्थियों की	(ii)	निंदकों की
(iii)	भक्तों की	(iv)	संतों की

(ख) निंदको को कितने पास रखने की सलाह संतो ने दी है ?

(i)	आंगन कुटी छवाय	(ii)	पड़ोस में
(iii)	बहुत दूर	(iv)	इनमें से कोई नहीं

(ग) निम्नलिखित कथन (A) और कारण (B) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। फिर नीचे दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन (A) निंदको की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है।

कारण (R) लगातार अच्छे काम करते जाने से निंदक का दंड भी सख्त होता जाता है।

(i) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।

(ii) कथन (A) गलत है। लेकिन कारण (R) सही है

(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) निन्दक का कष्ट क्यों बढ़ता जा रहा है?

(ङ) निंदक सो क्यों नहीं पाता?

<u>गद्यांश-3</u>

नागरिक के कर्तव्य और अधिकारों की समष्टि को नागरिकता कहा जाता है। नागरिकता ऐसी विशेषता है, जिसके अभाव में मनुष्य न तो समाज का आवश्यक अंग बन पाता है और न राज्य का। इसके बिना मनुष्य का जीवन एक प्रकार से या तो पशुवत् हो जाता है या महान् विरागी सन्यासी के समान, जिसका सांसारिकता से कोई संबंध नहीं होता। अतः नागरिकता हर मनुष्य को नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है। सदाचार का अर्थ है-सत् + आचार = सात्विक व्यवहार। किंतु साधारण अर्थ में इसका प्रयोग उन सभी व्यवहारों और कार्यों के लिए होता है जो समाज द्वारा हो और अच्छे सामाजिक क्रियाओं को नियंत्रित करता रहता है। इसकी आवश्यकता होती है. समाज को व्यवस्थित तथा स्पंदित रखने के लिए। झूठ न बोलना, चोरी न करना, किसी को अनावश्यक ढंग से न सताना आदि सदाचार माने जाते हैं। इन सब कार्यों का त्याग इसलिए आवश्यक होता है कि इनसे समाज में अव्यवस्था उत्पन्न होती है तथा समाज का ढाँचा लड़खड़ा जाता है। समाज उन्हीं गुणों का आदर-सम्मान करता है जो सामाजिक विधियों को दृढ़ बनाने में तथा बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय कार्यों में सहायक होते हैं।

(क) गद्यांश में ‘सांसारिकता से क्या अभिप्राय है?

(i)	सांसारिक जीवन से विरक्ति का भाव	(ii)	सांसारिक भोग-विलास के साधन
(iii)	सांसारिक कर्तव्यों और अधिकारों का निर्वहन	(iv)	सांसारिक जीवन से माया-मोह

(ख) गद्यांश के अनुसार निम्नलिखित में से किसे सदाचार माना जाता है ?

(i)	झूठ न बोलना	(ii)	चोरी न करना
(iii)	किसी को अनावश्यक रूप से न सताना	(iv)	ये सभी

(ग) निम्नलिखित कथन (A) और कारण (B) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। फिर नीचे दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन (A) सदाचार समाज को व्यवस्थित तथा स्पंदित रखने के लिए आवश्यक है

कारण (R) सदाचार द्वारा बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय कार्यों में सहायता होती हैं।

(i) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।

(ii) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है

(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है

(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है|

(घ) समाज द्वारा मनुष्य की दैनिक और सामाजिक क्रियाओं को नियंत्रित क्यों किया जाता है ?

(ङ) नागरिकता का क्या अर्थ है ?

<u>गद्यांश-4</u>

लोभ और अहंकार किसलिए जबकि एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर जाना है। लोभ का कोई अंत नहीं। जब सिकंदर जैसे लोग साथ नहीं ले जा पाए तो इतनी धन 3. दिए गए प्रश्नों संपदा की लालसा करने से क्या लाभ। यह एक अंधी दौड़ है, जिसमें आप कितना भी आगे निकल जाएँ, फिर भी किसी से आप पीछे रहेंगे ही और अंत में सभी कुछ यहीं छोड़कर चले जाएँगे। इसलिए ज्ञानी संत कह गए हैं। कि हमें अपनी आवश्यकताओं और कामनाओं को सीमित करना चाहिए, क्योंकि वे अंतहीन हैं और आप उसके भँवर में फँसकर अपनी सुख-शांति सब खो देंगे। यदि व्यक्ति परिग्रह-रहित जीवन यापन करें, यदि वह यह मानकर चलें कि उसका कुछ नहीं है, यह तो ईश्वर की देन है और वह इसका एक अभिरक्षक या सरंक्षक है, तो वह खोने-पाने के तनाव से मुक्ति पा सकता है। गीता में कहा गया है- मैं कौन हूँ, मैं क्या लाया था, मैं क्या ले जाऊँगा। यदि हम अपने जीवन को तनावरहित और खुशहाल बनाना चाहते हैं तो हमें व्यर्थ की धन-वैभव की लालसा और लोभ छोड़कर जीवन को ईश्वर की अमानत समझकर, ईश्वर का आशीर्वाद समझकर दूसरों की भलाई करते हुए एक संरक्षक की तरह कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए जीवनयापन करना होगा।

(क) धन-संपदा की लालसा करने से क्यों मना किया गया है?

(i) मृत्यु के बाद सब यहीं छूट जाना है। (ii) धन संपदा का जीवन में कोई महत्त्व नहीं होता है।

(iii) इससे जीवन में सुख-शांति आती है। (iv) सिकंदर अपने साथ कुछ नहीं ले जा पाया था।

(ख) जीवन को तनावरहित और खुशहाल रखने के लिए क्या करना चाहिए?

(i) धन-वैभव की लालसा का त्याग (ii) दूसरों की भलाई करते जीवन यापन

(iii) ईश्वर की भक्ति करना (iv) ये सभी

(ग) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढिए। तत्पश्चात नीचे दिए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए।

कथन (A) : हमें अपनी आवश्यकताओं और कामनाओं को सीमित करना चाहिए।

कारण (R): लालच एक अंधी दौड़ है, जिसमें आप कितना भी आगे निकल जाएँ, फिर भी किसी से आप पीछे रहेंगे ही और अंत में सभी कुछ यहीं छोड़कर चले जाएँगे।

(i) कथन (A) सही है , कारण (R) गलत है।

(ii) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता।

(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(iv)

(घ) लेख के अनुसार जीवन में कर्तव्य का निर्वाह कैसे करना चाहिए?

(ङ) हमें अपनी आवश्यकताओं और कामनाओं को सीमित करने को क्यों कहा गया है ?

गद्यांश-5

"डिजिटल इंडिया" एक प्रमुख योजना है जो भारत को आधुनिकता की ओर अग्रसर करने का प्रयास कर रही है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य है भारत को डिजिटल और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना। डिजिटल इंडिया के तहत, सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी और डिजिटल सुविधाओं का विस्तार किया है, जैसे कि ई-गवर्नेंस, डिजिटल बैंकिंग, डिजिटल शिक्षा, और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं।

इस योजना के अंतर्गत, सरकार ने भारत में इंटरनेट कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। गाँवों और शहरों में फाइबर ऑप्टिक केबल नेटवर्क और वायरलेस इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार किया जा रहा है। इसके साथ ही, डिजिटल भुगतान के लिए भी विभिन्न तकनीकी प्लेटफार्मों का विकास किया जा रहा है। आधार-आधारित भुगतान सिस्टम, डिजिटल वॉलेट, और बैंक अनुसंधान और प्रणाली के माध्यम से, सरकार ने वित्तीय संरचना को और अधिक डिजिटल बनाने का प्रयास किया है।

डिजिटल इंडिया का मुख्य लक्ष्य है सभी नागरिकों को इंटरनेट और डिजिटल सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करना ताकि उन्हें आर्थिक और सामाजिक विकास का अधिक लाभ मिल सके।

(क) डिजिटल इंडिया" योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- (i) सरकारी सेवाओं को आधुनिकीकरण
- (ii) भारत को डिजिटल और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना
- (iii) डिजिटल माध्यमों के माध्यम से जनता को जागरूक करना
- (iv) सभी विकल्प

(ख) "डिजिटल इंडिया" योजना के लाभ क्या हैं?
- (i) ई-गवर्नेंस को सुधारना
- (ii) डिजिटल बैंकिंग का विस्तार
- (iii) आर्थिक समृद्धि
- (iv) सभी विकल्प

(ग) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढिए। तत्पश्चात नीचे दिए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए।

कथन (A) : "डिजिटल इंडिया" योजना भारत को आधुनिकता की ओर अग्रसर करने का प्रयास कर रही है।

कारण (R) : डिजिटल भुगतान सिस्टम की भूमिका क्या है और कैसे यह वित्तीय संरचना को सुधारने में मदद कर रहा है?

- (i) कथन (A) सही है , कारण (R) गलत है।
- (ii) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है।
- (iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
- (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) डिजिटल इंडिया का मुख्य लक्ष्य क्या है ?

(ङ) "डिजिटल इंडिया" के प्रमुख चुनौतियाँ और उनका समाधान क्या हो सकता है?

अपठित गद्यांश - उत्तरमाला

गद्यांश -1

(क) (i) परिश्रम ही सफलता का आधार है|

(ख) (ii) वह बड़ा होकर सत्पुरुष बन गया।

(ग) (iv) कथन (A) (R) और कारण (A) (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(घ) जीवन में यदि आपने सही कार्यक्षेत्र चुन लिया तो समझ लीजिए कि बहुत बड़ा काम कर लिया।

(ङ) उसके बचपन के कामों को देखकर उसका भविष्य अनुमानित किया जा सकता है।

गद्यांश -2

(क) (ii) निंदकों की

(ख) (i) आंगन कुटी छवाय

(ग) (iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) निंदक का कष्ट बढ़ता जा रहा है क्योंकि लेखक ने लगातार अच्छे काम करने से उनका दंड भी सख्त होता जाता है।

(ङ) निंदक सो नहीं पाता क्योंकि उसे ईर्ष्या-द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है और निंदा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है।

गद्यांश -3

(क) (i) सांसारिक जीवन से विरक्ति का भाव

(ख) (iv) ये सभी

(ग) (iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है

(घ) समाज द्वारा मनुष्य की दैनिक और सामाजिक क्रियाओं को नियंत्रित किया जाता है ताकि समाज की व्यवस्था और संरचना सुचारु रहे।

(ङ) नागरिकता ऐसी विशेषता है, जिसके अभाव में मनुष्य न तो समाज का आवश्यक अंग बन पाता है और न राज्य का |

गद्यांश -4

(क) (i) मृत्यु के बाद सब यहीं छूट जाना है।

(ख) (iv) ये सभी

(ग) (ii) कथन (A) गलत है , कारण (R) सही है।

(घ) जीवन में कर्तव्य का निर्वाह व्यर्थ की धन-वैभव की लालसा और लोभ छोड़कर, दूसरों की भलाई करते हुए, ईश्वर की अमानत समझकर करना चाहिए।

(ङ) हमें अपनी आवश्यकताओं और कामनाओं को सीमित करने को कहा गया है क्योंकि वे अंतहीन हैं और हम उसके भँवर में फँसकर अपनी सुख-शांति सब खो देंगे।

गद्यांश -5

(क) (ii) भारत को डिजिटल और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना

(ख) (iv) सभी विकल्प

(ग) (i) कथन (A) सही है , कारण (R) गलत है।

(घ) डिजिटल इंडिया का मुख्य लक्ष्य है सभी नागरिकों को इंटरनेट और डिजिटल सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करना ताकि उन्हें आर्थिक और सामाजिक विकास का अधिक लाभ मिल सके।

(ङ) डिजिटल इंडिया की प्रमुख चुनौतियों में इंटरनेट कनेक्टिविटी, तकनीकी ज्ञान और योग्यता, डिजिटल सुरक्षा, और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुंच को बढ़ाने की चुनौतियाँ हैं। (ii) इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार को सक्रिय रूप से नई तकनीकी और पॉलिसी की तरफ बढ़ना होगा।

अपठित काव्यांश

2. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

काव्यांश - 1

ऋतु वसन्त तुम आओ ना,
वासन्ती रंग बिखराओ ना।
उजड़ रही आमों की बगिया,
बौर नये महकाओ ना।
सूनी वन-उपवन की डालें,
कोयल को बुलवाओ ना।
नूतन गीत सुनाओ ना,
ओ वसन्त तुम आओ ना।
ऊँचे-ऊँचे महलों में,
देखो जाम छलकते हैं...।
कहीं अँधेरी झोपड़ियों में,
दुधमुँहे रोज बिलखते हैं।
कुटिया के बुझते दीपक को, वनकर तेल जलाओ ना...
भूखी माँ के आँचल में तुम, दूध की धार बहाओ ना...
प्रिय वसन्त तुम आओ ना...
कोई धोता जूठे बर्तन,
कोई कूड़ा बीन रहा।
पेट की आग मिटाने को,
रोटी कोई छीन रहा।
काम पे जाते बच्चे के, हाथों में किताब थमाओ ना...
घना अँधेरा छाया है, तुम ज्ञान के दीप जलाओ ना...
ऋतु वसंत तुम आओ ना।

(क) उजड़ रही आमों की बगिया में वसन्त को क्या करने के लिए कहा है ?
- (i) गीत गाने के लिए
- (ii) नए बौर महकाने के लिए और कोयल को बुलवाने के लिए
- (iii) देखभाल करने के लिए
- (iv) कोयल को गाने के लिए

(ख) अँधेरी झोपड़ियों की हालत क्या है ?
- (i) वहाँ दुधमुंहे बच्चे हँस रहे हैं
- (ii) वहाँ उजाला होने वाला है
- (iii) वहाँ दुधमुंहे बच्चे भूख के कारण बिलख रहे हैं
- (iv) अँधेरी झोपड़ियों की हालत ठीक है

(ग) वसन्त से कुटिया में .... कहा है। (वाक्य पूरा कीजिए।)
- (i) तेल बनकर बुझते दीपक को जलाने और दूध की धार बहाने के लिए
- (ii) बौर खिलाने के लिए
- (iii) कोयल को बुलाने के लिए
- (iv) गीत गाने के लिए

(घ) छोटे बच्चे मजबूरी में क्या-क्या कर रहे हैं ?

(ङ) काम पर जाते बच्चे के लिए वसन्त को क्या करने के लिए कहा है और क्यों ?

काव्यांश - 2

जीवन तो नाम है चिरंतन संघर्ष का
जीवन तो नाम है आशा और हर्ष का।
मँझधार में है डोल रही, नैया तो क्या हुआ?
पास नहीं दिखता कोई खिवैया तो क्या हुआ?
डर क्या यदि तूफानों ने डाल दिया है घेरा
बाल भी बाँका कभी नहीं हो सकेगा तेरा
आशा और साहस की, दोनों पतवारें थाम,
मुड़ना नहीं पीछे, आगे बढ़ना तेरा काम
लड़ तूफानों से और गीत गा उत्कर्ष का।
इन उत्तुंग लहरों को, चरण तेरे छूना है,
देखकर संघर्ष तेरा, जोश हुआ दूना है।
मत हो भयभीत देखकर तू लहरों का नर्तन,
तूफान हों छाए तो मत कर कातर क्रंदन,
निराश न होना- वह देख सामने किनारा,
हार गए अँधेरे, उग रहा नूतन उजियारा
पल है यह, जीवन-अनुभव के निष्कर्ष का
जीवन तो नाम है चिरंतन संघर्ष का

(क) कविता के आधार पर बताइए कि जीवन किसे कहते हैं ?

(i) आराम करने को (ii) चिरंतन संघर्ष करने, मन में आशा और हर्ष को स्थान देने को
(iii) संघर्ष से दूर भागने के प्रयास को (iv) मौज-मस्ती को

(ख) 'नैया का मँझधार में डोलना, पास में किसी खिवैया का नहीं दिखना'- किस स्थित की ओर संकेत करता है ?

(i) आशा की ओर (ii) निराशा की ओर
(iii) परिश्रम की ओर (iv) उत्साह की ओर

(ग) 'कभी बाल भी बाँका नहीं होना' का क्या अर्थ

(i) कुछ भी न बिगड़ना (ii) चोट न आना
(iii) परिवर्तन न होना (iv) नुकसान न होना

(घ) जीवन में आगे बढ़ने के लिए क्या-क्या सहायक है ?

(ड) ऊँची-ऊँची लहरें तुम्हारा संघर्ष देखकर ..... चाहती हैं ? (वाक्य पूरा कीजिए।)

काव्यांश - 3

जीवन की मुस्कान किताबें
बहुत बड़ा वरदान किताबें।
गूंगे का मुँह बनकर बोलें
बहरे के हैं कान किताबें।
अन्धे की आँखें बन जाएँ
ऐसी हैं दिनमान किताबें।
हीरे मोती से भी बढ़कर
बेशकीमती खान किताबें।
जिन के आने से मन हरषे
ऐसी हैं मेहमान किताबें।

क्या बुरा यहाँ क्या है अच्छा
करती हैं पहचान किताबें।
धार प्रेम की बहती इनमें
फैलाती हैं ज्ञान किताबें।
राहों की हर मुश्किल को
कर देती आसान किताबें।
कभी नहीं ये बूढ़ी होती
रहती सदा जवान किताबें।

(क) इनमें से किताबें क्या नहीं हैं ? जो कथन सही न हो उसे छाँटकर लिखिए-
(i) जीवन की मुस्कान (ii) अपंग की विरोधी
(iii) बहरे के कान (iv) अन्धे की आँखें

(ख) किताबें हीरे मोती से भी बढ़कर .... हैं। (सही शब्द से वाक्य पूरा कीजिए)
(i) सस्ती (ii) हानिकारक
(iii) व्यर्थ (iv) बेशकीमती

(ग) किताबें किसकी पहचान करती हैं ?
(i) सब की (ii) चोर की
(iii) अच्छे और बुरे की (iv) केवल शत्रुओं की

(घ) राहों की हर मुश्किल को किताबें कैसे आसान कर देती हैं ?

(ड) किताबें सदा जवान कैसे रहती हैं ?

काव्यांश - 4

बात सभी ने यह है मानी।
हवा सुबह की बड़ी सुहानी।
सदा ताज़गी देती है यह।
आलस को हर लेती है यह ॥
यह रोगी न होने देती।
तनिक न सेहत खोने देती।
सुबह सैर पर जाकर देखो।
हवा निराली पाकर देखो।
अगर सैर पर नित जाओगे।
अच्छी सेहत तुम पाओगे।

(क) इस कविता में किसका गुणगान किया गया है?
(i) सुबह की ताज़गी भरी हवा का (ii) सुबह-सुबह योगाभ्यास करने का
(iii) सुबह-सवेरे कसरत करने का (iv) इन सभी का

(ख) सुबह की हवा के बारे में क्या बताया गया है?
(i) सुबह की हवा ताज़गी देती है। (ii) यह स्वस्थ रखती है।
(iii) यह अच्छी सेहत देती है। (iv) उपर्युक्त सभी

(ग) सुबह सैर पर जाने से क्या लाभ मिलेगा?

(i) व्यक्ति धनवान बनेगा ।   (ii) अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा

(iii) अच्छे दोस्त बनेंगे   (iv) इनमें कोई नहीं

(घ) इस कविता का सबसे उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ?

(ङ) कौन रोगी न होने देती है ?

काव्यांश - 5

रिमझिम-रिमझिम सी बूंदे,
जग के आंगन में आई।
अपने लघु उज्जवल तन में,
कितनी सुंदरता लाई।
मेघों ने गरज-गरजकर,
मादक संगीत सुनाया।
इस हरी भरी संध्या ने,
हमको उन्मत्त बनाया।
सूखी सरिताओं ने फिर,
सुंदर नवजीवन पाया।

(क) कविता में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?

(i) शरद ऋतु   (ii) ग्रीष्म ऋमु

(iii) वर्षा ऋतु   (iv) शिशिर ऋतु

(ख) सूखी सरिताओं ने क्या पाया?

(i) मृत्यु   (ii) हरियाली

(iii) नवजीवन   (iv) उन्माद

(ग) काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक-

(i) सुख का संसार   (ii) वर्षा ऋतु

(iii) वन-गमन   (iv) वसंत ऋतु

(घ) मेघों ने क्या सुनाया?

(ङ) इस कविता में 'संध्या' शब्द के साथ कौन सा विशेषण है ?

अपठित काव्यांश - उत्तरमाला

काव्यांश -1

(क) (iii) देखभाल करने के लिए

(ख) (iii) वहाँ दुधमुंहे बच्चे भूख के कारण बिलख रहे हैं

(ग) (i) तेल बनकर बुझते दीपक को जलाने और दूध की धार बहाने के लिए

(घ) छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं, लेकिन हाथों में किताबें नहीं हैं।

(ङ) वसंत से कहा गया है कि वह ज्ञान के दीप जलाए क्योंकि अँधेरा छाया है, जिससे बच्चों को किताबें पढ़ने की सहायता मिले।

काव्यांश -2

(क) (ii) चिरंतन संघर्ष करने, मन में आशा और हर्ष को स्थान देने को

(ख) (ii) निराशा की ओर

(ग) (i) कुछ भी न बिगड़ना

(घ) जीवन में आगे बढ़ने के लिए आशा और साहस की, दोनों पतवारें थामने की जरुरत है।

(ड) ऊँची-ऊँची लहरें तुम्हारा संघर्ष देखकर जीत की आशा करती हैं।

काव्यांश -3

(क) (ii) अपंग की विरोधी

(ख) (iv) बेशकीमती

(ग) (iii) अच्छे और बुरे की

(घ) किताबें ज्ञान की बातें और सिद्धांतों को सिखाकर हमें सही दिशा में ले जाती हैं, जिससे हमें सही निर्णय लेने में मदद मिलती है।

(ड) किताबें सदा जवान रहती हैं क्योंकि वे हमें नई जानकारी, नए विचार और नये संदेश प्रदान करती रहती हैं। यह हमें हमेशा अग्रसर और उत्साहित रखती हैं।

काव्यांश -4

(क) (iv) इन सभी का

(ख) (iv) उपर्युक्त सभी

(ग) (ii) अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा

(घ) सुबह की महत्ता

(ङ) सुबह की हवा

काव्यांश -5

(क) (i) शरद ऋतु

(ख) (iv) उन्माद

(ग) (ii) वर्षा ऋतु

(घ) मेघों ने गरज-गरजकर मादक संगीत सुनाया।

(ङ) हरी भरी

व्यावहारिक

व्याकरण

वाक्य-भेद

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह, जो व्यवस्थित हो वाक्य कहलाता है। वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है। वाक्य में आकांक्षा का होना आवश्यक है।

आकांक्षा - वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने की जो स्वाभाविक उत्कंठा जागती है, उसे आकांक्षा कहते हैं।

जैसे - दिन में काम करते हैं।

इस वाक्य को सुनकर हम प्रश्न करते हैं- कौन लोग काम करते हैं? यदि हम कहें कि दिन में सभी काम करते हैं, तो 'सभी' कह देने से प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और वाक्य ठीक हो जाता हैं। अतः इस वाक्य में 'सभी' शब्द की आकांक्षा थी जिसकी पूर्ति से वाक्य पूरा हो गया।

1. उद्देश्य - जिसके विषय में कुछ कहा जाए।
2. विधेय - उद्देश्य के विषय

रचना की दृष्टि से वाक्य - भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

1. सरल या साधारण वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य

सरल या साधारण

1 **परिभाषा** - सरल या साधारण वाक्य इसमें एक या एक से अधिक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे -

1. वह जोर-जोर से रोया।
2. मैं और मेरा भाई दिल्ली जाएँगे।
3. वे हर दिन दूध पीते हैं।
4. मोहन घर जा रहा होगा।
5. वह अत्याचार किए जा रहा था।
6. राम सो रहा है।
7.राजू खाना खा रहा है।
8.किसान फलों के पेड़ भी लगाते हैं।
9. जवान देश की रक्षा करते हैं।
10.वर्षा हो रही है।
11.वह स्कूल चला गया।
12.वह बहुत नादान है।
13.मैंने एक नई साइकिल खरीदी।
14.उसने अपना काम पूरा कर लिया।
15.वह आ रहा है।

ध्यान दें - स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य भी सरल वाक्य होता है।

संयुक्त वाक्य

2 **परिभाषा** - संयुक्त वाक्य - दो या दो से अधिक समान स्तरीय (समानाधिकरण) उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। जैसे -

1. हम लोग पुणे घूमने गए और वहाँ चार दिन रहे ।
2. यहाँ आप रह सकते हैं या आपका भाई रह सकता है।
3. वे बीमार हैं, अतः आने में असमर्थ हैं।

ध्यान दें - समानाधिकरण उपवाक्य आश्रित न होकर एक-दूसरे के पूरक होते हैं। इन उपवाक्यों का स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग हो सकता है।
नोट - जिन समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों पदों और वाक्यों को परस्पर जोड़ा जाता है।
उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।
जैसे - सुनंदा खड़ी थी और अलका बैठी थी।
इस वाक्य में 'और' समुच्चयबोधक शब्द द्वारा दो समान वाक्य परस्पर जुड़े हैं।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक के भेद **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** चार प्रकार के होते हैं :-

(क) **संयोजक** - जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं।
जैसे- और, तथा, एवं व आदि संयोजक शब्द हैं।

(ख) **विभाजक** - शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करने वाले शब्द विभाजन या विकल्पक कहलाते हैं। जैसे- या, चाहे अथवा, अन्यथा आदि ।

(ग) **विरोध** - दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं।
जैसे - परन्तु, पर, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि।

(घ) **परिणामसूचक** - दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर परिणाम को दर्शाने वाले शब्द परिणामसूचक कहलाते हैं।
जैसे - फलतः, परिणामस्वरूप, इसलिए, अतः, अतएव, फलस्वरूप, अन्यथा आदि ।

संयुक्त वाक्य के कुछ उदाहरण -

- उसकी तबीयत खराब है **इसलिए** मैं उसका ध्यान रखूंगा।
- मुझे भीड़ में चलना पसंद नहीं **इसलिए** मैं अकेले चलता हूं।
- मैंने उसे पुस्तक दी **और** वह चला गया।
- अपना काम भी करो **तथा** दूसरों की सहायता भी करो।
- मैंने खाना खाया **और** सो गया।
- वह सुबह गया और शाम को लौट आया।
- जल्दी चलो, नहीं **तो** पकड़े जाओगे।
- पुस्तक खो गई थी **परंतु** मुझे मिल गई।
- वह धनी है **पर** लोग ऐसा नहीं समझते।
- तुम्हें **फिर** यहां पर देखकर मैं खुश हूँ।
- उसने मेट्रो की सवारी की **एवं** ए.सी. का आनंद लिया।
- राधा ने मेहनत की **और** सफल हो गई।
- तुम बार-बार जाती हो फिर वापस आ जाती हो।
- तुम्हारी माताजी मंदिर गई है और तुम्हारे पिताजी दफ्तर गए हैं।
- मैं स्टेशन पर झटपट पंहुचा फिर भी बस छूट गई।

<u>मिश्र वाक्य</u>

परिभाषा - मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र (प्रधान) होता है। और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। मिश्र वाक्य के उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं।

जैसे- मैंने देखा कि बाज़ार में चहल-पहल है।

इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं मैंने देखा, बाज़ार में चहल-पहल है। ये दोनों उपवाक्य 'कि' व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं। इनमें

मुख्य उपवाक्य हैं- <u>मैंने देखा</u> ।

आश्रित उपवाक्य है- <u>बाजार में चहल-पहल है</u>।

(मिश्र वाक्य के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जब, जहाँ, जिसने, ज्योंही, जिधर-उधर, जैसे-वैसे, जितना-उतना, क्योंकि, यदि तो, ताकि, यद्यपि तथापि, अर्थात् मानो आदि व्याधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं।)

नोट - किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्याधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

व्याधिकरण समुच्चयबोधक के भेद **व्याधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद** होते हैं -

(क) **कारण सूचक**- दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर, होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को कारण सूचक कहते हैं। जैसे कि, क्योंकि, इसलिए, चूँकि, ताकि आदि ।

(ख) **संकेत सूचक**- जो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं; उन्हें संकेतसूचक कहते हैं। जैसे-यदि तो, जो तो, यद्यपि तथापि, यद्यपि; परन्तु आदि ।

(ग) **उद्देश्य सूचक**- दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्य सूचक कहलाते हैं। जैसे- इसलिए कि, ताकि, जिससे कि आदि।

(घ) **स्वरूप सूचक**- मुख्य उपवाक्य अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं। जैसे-यानि, मनो, की अर्थात् आदि ।

प्रधान व आश्रित उपवाक्य की पहचान –

1. प्रधान उपवाक्य वह होता है, जिसकी क्रिया मुख्य होती है। मिश्र वाक्य में मुख्य क्रिया जानने के लिए मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में रूपांतरित करते हैं।

2. रूपांतरित करने पर जिस उपवाक्य की क्रिया परिवर्तित हो जाती है, वह आश्रित उपवाक्य और जिस उपवाक्य की क्रिया अपरिवर्तित रहती है, वह प्रधान या मुख्य उपवाक्य होता है।

जैसे- यदि तुम परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते।

इस वाक्य का सरल वाक्य में रूपांतरण 'तुम परिश्रम करने पर अवश्य सफल होते।' स्पष्ट है यहाँ पहले उपवाक्य की क्रिया परिवर्तित हुई है, अतः यह आश्रित उपवाक्य है और दूसरे उपवाक्य की क्रिया अपरिवर्तित रहती है, अतः यह प्रधान या मुख्य उपवाक्य है।

मिश्र उपवाक्य में आनेवाले आश्रित उपवाक्य के भेद ये आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते है -

(क) संज्ञा उपवाक्य

(ख) विशेषण उपवाक्य

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य

क्रिया विशेषण उपवाक्य चार प्रकार के होते हैं -

(क) **<u>कालवाचक उपवाक्य</u>**

1. ज्यों ही मैं स्टेशन पहुँचा, गाड़ी ने सीटी बजा दी ।
2. जब मैं घर पहुँचा तो वर्षा हो रही थी।

(ख) स्थानवाचक उपवाक्य

1. जहाँ तुम पढ़ते थे, मेरा भाई भी वहीं पढ़ता हैं।
2. तुम जिधर जा रहे हो, उधर आगे रास्ता बंद है।
3. वहाँ इस वर्ष अकाल पड़ सकता है, जहाँ वर्षा नहीं हुई।

(ग) रीतिवाचक उपवाक्य

1. आपको वैसा ही करना है, जैसा मैं कहता हूँ।
2. वह उसी तरह खेलेगा, जैसा उसने सीखा है।

(घ) परिमाणवाचक उपवाक्य

1. जितना तुम पढ़ोगे, उतना समझ आएगा।
2. वह उतना ही अधिक थकेगा, जितना अधिक दौड़ेगा ।
3. जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं।

मिश्र वाक्य के उदाहरण -

1- मिश्र वाक्य – **जब** भी मैं विकास के घर गया, मेरा आदर सत्कार हुआ।
2- मिश्र वाक्य – विशाल ने **जो** मोबाइल खरीदा है, वह नया है।
3- मिश्र वाक्य – शिक्षक ने कहा **कि** सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
4- मिश्र वाक्य – **जैसे** ही हम बस से उतरे, रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
5- मिश्र वाक्य – **ज्योंही** गुरुजी आए, भक्त शान्त हो गए।
6- मिश्र वाक्य – **जब** दुर्घटना की खबर सुनी, **तब** मन दुखी हो गया।
7- मिश्र वाक्य – **ज्यों** ही भीखमंगा दिखा, मधुसूदन को दया आ गई।
8- मिश्र वाक्य – **जो** लोग परिश्रमी थे, वे सफ़ल हो गए
9- मिश्र वाक्य – **जैसे** ही छुट्टी हुई, बच्चे घर चले गए।
10- मिश्र वाक्य – **यद्यपि** रूबी घर गई **तथापि** काम में नहीं लगी।
11- मिश्र वाक्य – **जब** भी मैं विकास के घर गया, मेरा आदर सत्कार हुआ।
12- मिश्र वाक्य – विशाल ने **जो** मोबाइल खरीदा है, वह नया है
13- मिश्र वाक्य – शिक्षक ने कहा **कि** सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
14- मिश्र वाक्य – **जैसे ही** हम बस से उतरे, रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
15- मिश्र वाक्य – **ज्योंही** गुरुजी आए, भक्त शान्त हो गए।

वाक्य रूपांतरण

एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलना वाक्य रचनांतरण/ रूपांतरण कहलाता है। रचना की दृष्टि से वाक्य-रचनांतरण की प्रक्रिया निम्नलिखित है-
सरल वाक्य को मिश्रवाक्य अथवा संयुक्त वाक्य में बदलना; मिश्र वाक्य को सरल वाक्य अथवा संयुक्त वाक्य में बदलना तथा संयुक्त वाक्य को सरल और मिश्र वाक्य में बदलना इस कोटि के अंतर्गत आता है। यह ध्यान रखने योग्य है कि वाक्य-रचना बदलनी चाहिए, किंतु अर्थ नहीं बदलना चाहिए।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

1. सरल वाक्य- मोहन हिन्दी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया है।
   संयुक्त वाक्य- मोहन को हिन्दी पढ़ना है इसलिए वह शास्त्रीजी के यहाँ गया है।
2. सरल वाक्य - हम लोग तैरने के लिए नदी पर गए थे।
   संयुक्त वाक्य - हम लोगों को तैरना था इसलिए हम नदी पर गए थे।

3. सरल वाक्य- गड्डा खोदकर मजदूर चले गए।

संयुक्त वाक्य- मजदूरों ने गड्डा खोदा और चले गए।

4. सरल वाक्य – राधा नाचती-गाती है।

संयुक्त वाक्य – राधा नाचती और गाती है।

5. सरल वाक्य – मोहन हँसकर बोला।

संयुक्त वाक्य – मोहन हँसा और बोला।

6. सरल वाक्य – तुम पढ़कर सो जाना।

संयुक्त वाक्य – तुम पढ़ना और सो जाना।

7. सरल वाक्य – अंकित की कलम छूटकर गिर गई।

संयुक्त वाक्य – अंकित की कलम छूटी और गिर गई।

8. सरल वाक्य – बादल घिरते ही मोर नाचने लगा।

संयुक्त वाक्य – बादल घिरे और मोर नाचने लगा।

9. सरल वाक्य – राम प्रथम आते ही खेलने लगा।

संयुक्त वाक्य – राम प्रथम आया तथा खेलने लगा।

10. सरल वाक्य – सूरज के निकलते ही फूल खिल उठे।

संयुक्त वाक्य – सूरज निकला और फूल खिल उठे।

<u>सरल वाक्य से मिश्र वाक्य</u>

1- सरल वाक्य – मोहन हँसकर बोला।

मिश्र वाक्य – वह मोहन है जो हँसकर बोला।

2- सरल वाक्य – तुम पढ़कर सो जाना।

मिश्र वाक्य – जब तुम पढ़ लोगे तब सो जाना।

3- सरल वाक्य – अंकित की कलम छूटकर गिर गई।

मिश्र वाक्य – जो कलम अंकित से छूटी, वह गिर गई।

4- सरल वाक्य – बादल घिरते ही मोर नाचने लगा।

मिश्र वाक्य – जैसे ही बादल घिरे, मोर नाचने लगा।

5- सरल वाक्य – राम आते ही खेलने लगा।

मिश्र वाक्य – राम जैसे ही आया वह, खेलने लगा।

6- सरल वाक्य – सूरज के निकलते ही फूल खिल उठे।

मिश्र वाक्य – सूरज निकला और फूल खिल उठे।

7- सरल वाक्य – अभिजीत तथा दीपक खेल-कूद रहे हैं।

मिश्र वाक्य – जो खेल एवं कूद रहे हैं, वे अभिजीत तथा दीपक हैं।

8- सरल वाक्य – सूरज पढ़-लिखकर अधिकारी बना।

मिश्र वाक्य – जैसे ही सूरज पढ़-लिख गया, वह अधिकारी बन गया।

9- सरल वाक्य – अभिषेक थैला लेकर चला गया।

मिश्र वाक्य – अभिषेक तब चला गया जब उसने थैला लिया

10- सरल वाक्य - राधा नाचती-गाती है।

मिश्र वाक्य - जो नाचती-गाती है, वह राधा है।

<u>मिश्र वाक्य से सरल वाक्य</u>

1- मिश्र वाक्य – जब भी मैं विकास के घर गया, मेरा आदर सत्कार हुआ।

सरल वाक्य – विकास के घर जाने पर मेरा आदर सत्कार हुआ।

2- मिश्र वाक्य – विशाल ने जो मोबाइल खरीदा है, वह नया है।
सरल वाक्य – विशाल ने एक नया मोबाइल खरीदा है।

3- मिश्र वाक्य – शिक्षक ने कहा कि सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
सरल वाक्य – शिक्षक ने सबको अपना गृहकार्य स्वयं करने को कहा है।

4- मिश्र वाक्य – जैसे ही हम बस से उतरे, रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
सरल वाक्य – हमारे बस से उतरते ही रिक्शा वाले दौड़ पड़े।

5- मिश्र वाक्य – ज्योंही गुरुजी आए, भक्त शान्त हो गए।
सरल वाक्य – गुरुजी के आते ही भक्त शान्त हो गए।

6- मिश्र वाक्य – जब दुर्घटना की खबर सुनी, तब मन दुखी हो गया।
सरल वाक्य – दुर्घटना की खबर सुनकर मन दुखी हो गया।

7- मिश्र वाक्य – ज्यों ही भीखमंगा दिखा, मधुसूदन को दया आ गई।
सरल वाक्य – भीखमंगे को देखकर मधुसूदन को दया आ गई।

8- मिश्र वाक्य – जो लोग परिश्रमी थे, वे सफ़ल हो गए।
सरल वाक्य – परिश्रमी लोग सफ़ल हो गए।

9- मिश्र वाक्य – जैसे ही छुट्टी हुई, बच्चे घर चले गए।
सरल वाक्य – छुट्टी होते ही बच्चे घर चले गए।

10- मिश्र वाक्य – यद्यपि रूबी घर गई तथापि काम में नहीं लगी।
सरल वाक्य – रूबी घर जाकर भी काम में नहीं लगी।

<u>मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य</u>

1- मिश्र वाक्य – जब भी मैं विकास के घर गया, मेरा आदर सत्कार हुआ।
संयुक्त वाक्य – विकास के घर मेरा आदर भी हुआ और सत्कार भी।

2- मिश्र वाक्य – विशाल ने जो मोबाइल खरीदा है, वह नया है।
संयुक्त वाक्य – विशाल ने एक मोबाइल खरीदा है और वह नया है।

3- मिश्र वाक्य – शिक्षक ने कहा कि सबको अपना गृहकार्य स्वयं करना है।
संयुक्त वाक्य – शिक्षक ने गृहकार्य करने को कहा है और स्वयं करने को कहा है।

4- मिश्र वाक्य – जैसे ही हम बस से उतरे, रिक्शा वाले दौड़ पड़े।
संयुक्त वाक्य – हम बस से उतरे और रिक्शा वाले दौड़ पड़े।

5- मिश्र वाक्य – ज्योंही गुरुजी आए, भक्त शान्त हो गए।
संयुक्त वाक्य – गुरुजी आए और भक्त शान्त हो गए।

6- मिश्र वाक्य – जब दुर्घटना की खबर सुनी, तब मन दुखी हो गया।
संयुक्त वाक्य – दुर्घटना की खबर सुनी और मन दुखी हो गया।

7- मिश्र वाक्य – ज्यों ही भीखमंगा दिखा, मधुसूदन को दया आ गई।
संयुक्त वाक्य – भीखमंगा दिखा और मधुसूदन को दया आ गई।

8- मिश्र वाक्य – जो लोग परिश्रमी थे, वे सफ़ल हो गए ।
संयुक्त वाक्य – परिश्रमी लोगों ने परिश्रम किया और सफ़ल हो गए।

9- मिश्र वाक्य – जैसे ही छुट्टी हुई, बच्चे घर चले गए।
संयुक्त वाक्य – छुट्टी हुई और बच्चे घर चले गए।

10- मिश्र वाक्य – यद्यपि रूबी घर गई तथापि काम में नहीं लगी।
संयुक्त वाक्य – रूबी घर गई लेकिन काम में नहीं लगी।

अतिलघु प्रश्नोत्तर

1. 'सीमा यहाँ आई और रेखा बाहर गई। रचना के आधार पर सही वाक्य भेद है?
2. उद्देश्य में सम्मिलित होता है?
3. विधेय के अंतर्गत क्या आता?
4. रचना की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद होते है?
5. समानाधिकरण उपवाक्य क्या होते हैं?:
6. रेखा ज्यों ही घर पहुँची, वर्षा शुरू हो गई। यह किस तरह का वाक्य है:

लघु प्रश्नोत्तर

1. वाक्य के प्रमुख घटक कितने हैं?
2. मिश्र वाक्य के उपवाक्यों का विवेचन उदाहरण देकर कीजिए?
3. मिश्र वाक्य की परिभाषा देते हुए एक उदाहरण दीजिए?
4. रचना के आधार पर वाक्य को कितने भेद में विभाजित किया गया है?
5. सरल वाक्य और मिश्र वाक्य के एक-एक उदाहरण देकर परिभाषित कीजिए।

वाच्य

'वाच्य' का शाब्दिक अर्थ होता है '**बोलने का विषय**'

वाच्य की परिभाषा -

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया द्वारा बताए गए विषय में कर्ता, कर्म, अथवा भाव में से
कौन प्रमुख है, उसे वाच्य कहते हैं। **दूसरे शब्दों में** - वाच्य क्रिया का वह रूप है, जिससे यह ज्ञात होता है कि वाक्य में कर्ता प्रधान है, कर्म प्रधान है अथवा भाव प्रधान है। क्रिया के लिंग एवं वचन उसी के अनुरूप होते हैं।

इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन या तो कर्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।
वाच्य, क्रिया के उस रूपान्तरण को कहते हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि वाक्य में क्रिया कर्ता के साथ है, कर्म के साथ अथवा इन दोनों में से किसी के भी साथ न होकर केवल क्रिया के कार्य व्यापार (भाव) की प्रधानता है।

जैसे -

राधा पत्र लिखती है।

पत्र राधा द्वारा लिखा जाता है।

तुमसे लिखा नहीं जाता।

प्रथम वाक्य में लिखना क्रिया का संबंध कर्ता यानि राधा से है। दूसरे वाक्य में कर्म प्रधान है। जिसमें पत्र (कर्म) उद्देश्य के स्थान पर आया है और इसी की प्रधानता है। 'तुमसे लिखा नहीं जाता' वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से है और न ही कर्म से, इसका सम्बन्ध भाव से है।

वाच्य में तीन की प्रधानता होती है

1. कर्ता
2. कर्म
3. भाव

जैसे -

1. माधव क्रिकेट खेलता है। (क्रिया कर्ता के अनुसार)
2. माधव द्वारा क्रिकेट खेला जाता है। (क्रिया कर्म के अनुसार)
3. माधव से क्रिकेट खेला जाता है। (क्रिया भाव के अनुसार)

हिन्दी में तीन मुख्य वाच्य हैं -

<u>(क) कर्तृवाच्य</u> - जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, उन्हें कर्तृवाच्य कहते है। इन वाक्यों में अकर्मक तथा सकर्मक दोनों क्रियाएँ हो सकती हैं। इनमें कर्ता प्रमुख होता है और कर्म गौण होता है।

पहचान - कर्ता प्रमुख, क्रिया कर्ता के अनुरूप, कर्ता प्रथमा विभक्ति में।

उदाहरण -

लक्ष्य चित्र बना रहा है। (सकर्मक)

गीता ने मिठाई खरीदी । (सकर्मक)

राम पुस्तक पढ़ रहा है। (सकर्मक) पिताजी आ रहे हैं। (अकर्मक)

<u>(ख) कर्मवाच्य -</u> जिस वाक्य में कर्ता गौण अथवा कर्म प्रधान होता हैं, उन्हें कर्मवाच्य कहते हैं। कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। । इस कारण वाक्य में कर्ता का लोप है या कर्ता के साथ द्वारा, के द्वारा या से का प्रयोग होता हैं।

उदाहरण - कर्म प्रमुख, क्रिया कर्म के अनुरूप, कर्ता तृतीया विभक्ति में

1. छात्रों के द्वारा चित्र बनाए गए । (कर्ता + द्वारा) परीक्षा में प्रश्न पत्र बाँटे गए। (कर्ता का लोप)
2. बालक से पत्र लिखा जाता है । (कर्ता + से)
3. मुझसे यह दरवाजा नहीं खोला जाता । (कर्ता से) असमर्थता बताने के लिए नहीं के साथ
4. कर्मवाक्य का प्रयोग । मोहन से खाना नहीं खाया जाता। (कर्ता से) कर्मवाक्य का प्रयोग ।
5. असमर्थता बताने के लिए नहीं के साथ

विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि कर्मवाच्य में कर्ता का लोप होता हैं या कर्ता के साथ द्वारा, के द्वारा या से जोड़ा जाता है। इस कारण कर्ता गौण हो जाता है तथा उसमे सकर्मक क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं।

<u>(ग) भाववाच्य</u> - जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष में हो, तो भाववाच्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो, न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है। इसमें मुख्यतः अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है।

उदाहरण-

1. अब मुझसे नहीं चला जाएगा।
2. गर्मियों में खूब नहाया जाता है।
3. तुमसे खाना नहीं खाया जा रहा है।
4. अब खेला जाए ।
5. थोड़ी देर सो लिया जाए।

उक्त वाक्यों में क्रिया कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भावानुसार है, अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण हैं।

<u>ध्यान रखने योग्य कुछ बातें हैं-</u>

1. भाववाच्य का प्रयोग विवशता, असमर्थता व्यक्त करने के लिए होता है।
2. भाववाच्य में प्रायः अकर्मक क्रिया होता है।
3. भाववाच्य में क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एकवचन में होती है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना कर्मवाच्य बनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का सामान्य भूतकाल में परिवर्तन ।

1. क्रिया को परिवर्तित रूप के साथ काल, पुरुष, वचन तथा लिंग के अनुसार उसका रूप जोड़ना।
2. कर्ता के साथ द्वारा, के द्वारा या से लगाइए।
3. यदि कर्म के साथ विभक्ति लगी हो तो उसे हटा दीजिए ।

उदाहरण -

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. छात्रों ने पत्र लिखा।	1. छात्रों द्वारा पत्र लिखा गया।
2. मोहन क्रिकेट नहीं खेलता है।	2. मोहन से क्रिकेट नहीं खेला जाता है।
3. यह कविता किसने लिखी है?	3. यह कविता किसके द्वारा लिखे गये है?
4. मैंने पत्र लिखा।	4. मेरे द्वारा पत्र लिखा गया।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :

1. कर्ता के साथ से या के द्वारा लगाएँ।
2. मुख्य क्रिया को, सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदल कर उसके साथ धातु के एकवचन पुल्लिंग अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की क्रिया का है। जैसे-

• खेलेंगे	खेला जाएगा।
* सोते हैं	सोया जाता है।
* खा रहे थे	खाया जा रहा था।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य

*सीता सो गई।	सीता से सोया गया।
* घायल बिस्तर से नहीं उठा ।	घायल से बिस्तर से उठा नहीं जाता ।
* मैं चल नहीं सकता।	मुझसे चला नहीं जाता।
* पक्षी उड़ेंगे।	पक्षियों द्वारा उड़ा जाएगा।

विशेष - सामान्यतः भाववाच्य का प्रयोग निषेधार्थक अर्थ में होता है।

प्रश्न :

1. जिस वाक्य में कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप बदलता हैं, उसे क्या कहते है?
2. जिस वाक्य में कर्म के अनुसार क्रिया का रूप बदलता हैं, उसे क्या कहते है?
3. प्रधानमंत्री द्वारा भाषण दिया गया। इसमें कौन सा वाच्य है?
4. मीना उपन्यास पढ़ती है। इसमें कौन सा वाच्य है?
5. माँ से चला भी नहीं जाता। इसमें कौन सा वाच्य है?

उत्तर माला

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. कर्मवाच्य
4. कर्तृवाच्य
5. भाववाच्य

प्रश्न अभ्यास

(1) हम स्वामी दयानंद को नहीं भूल सकते।
(2) छात्रों द्वारा पत्र लिखे जाते हैं।
(3) हम नहीं हँस सकते।
(4) गोपाल से पत्र लिखा जाता है।
(5) सौता नहीं लिखती।

(6) शीला पत्र लिख रही है।
(7) सीता से खाया नहीं जाता।
(8) मैं इस गर्मी में सो नहीं सकता।
(9) भगवान हमारी रक्षा करता है।
(10) मुझसे बैठा नहीं जाता।
(11) मोहन नहीं चल रहा।
(12) सौम्या सुबह को उठ नहीं सकी।
(13) सुमित द्वारा कविता पढ़ी गई।
(14) रीमा चित्र बनाती है।
(15) सास लड़ नहीं सकी।
(16) राजा द्वारा प्रजा को कष्ट दिए गए।
(17) कलाकार मूर्ति गढ़ता है।
(18) आज घूमने चला जाए।
(19) करीम पतंग उड़ा रहा है।
(20) बच्चा खूब रोया।

<u>उत्तर माला</u>

1. कर्मवाच्य
2. कर्तृवाच्य
3. भाववाच्य
4. कर्तृवाच्य
5. कर्मवाच्य
6. कर्तृवाच्य
7. भाववाच्य
8. भाववाच्य
9. कर्तृवाच्य
10. भाववाच्य
11. कर्मवाच्य
12. कर्तृवाच्य
13. भाववाच्य
14. भाववाच्य
15. कर्तृवाच्य
16. भाववाच्य
17. कर्तृवाच्य
18. भाववाच्य
19. कर्मवाच्य
20. भाववाच्य

(क) **भाववाच्य में बदलिए-**

21. बच्चा रोता है।
22. मैं अब चल नहीं सकता।
23. मैं इस तरह बैठ ही नहीं सकता।
24. मैं चुपचाप नहीं रह सकता।

25. मैं अब सो नहीं सकता।
26. आओ, आज नहर में तैर लें।
27. बच्चा नहीं पढ़ता।

(ख) कर्मवाच्य में बदलिए-

28. मैंने खाना खाया।
29. ज्योति कार अच्छी तरह नहीं चलाती।
30. मैं दरवाजा नहीं खोल सकता।
31. लेखक पुस्तक लिख रहा है।
32. मंत्री जी कंबल बाँट रहे हैं।

(ग) कर्तृवाच्य में बदलिए -

33. अमित से दौड़ा नहीं जाता।
34. मोहन से पढ़ा नहीं जाता।

<u>उत्तर माला</u>

(21) बच्चों से रोया जाता है।

(22) मुझसे अब चला नहीं जाता।

(23) मुझसे इस तरह बैठा ही नहीं जा सक

(24) मुझसे चुपचाप नहीं रहा जाता।

(25) मुझसे अब सोया नहीं जाता।

(26) आओ, नहर में तैरा जाए।

(27) बच्चे से पढ़ा नहीं जाता।

(28) मुझसे खाना खाया जाएगा।

(29) ज्योति से कार अच्छी तरह नहीं चलाई जाती।

(30) मुझसे दरवाजा नहीं खोला जा सकता।

(31) लेखक से पुस्तक लिखी जा रही है।

(32) मंत्री जी द्वारा कंबल बाँट जा रहा हैं।

(35) अमित दौड़ा नहीं सकता।

(34) मोहन पढ़ा नहीं सकता।

पद परिचय

पद परिचय - जब किसी शब्द को व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तो वह पद कहलाता है | वाक्य में प्रयुक्त इन पदों का व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है | अर्थात वाक्यों में प्रयुक्त प्रद व्याकरण की दृष्टि से क्या है (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, अव्यय, प्रयुक्त पद का लिंग, वचन तथा वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों से संबंध) वाक्य में उनकी स्थिति की विस्तृत जानकारी देना ही पद-परिचय है |

उदाहरणः- परमेश्वर ने चित्र बना लिया।

'परमेश्वर' शब्द का पद-परिचय- 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. पुल्लिंग 3. एकवचन
4. कर्ता कारक 5. 'बना लिया' क्रिया का कर्ता।

पद के 8 भेद होते हैं-

संज्ञा	-	संज्ञा की तीनों भेद, लिंग, वचन, कारक
सर्वनाम	-	सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक
विशेषण	-	विशेषण के भेद, लिंग, वचन, विशेष्य, प्रविशेषण
क्रिया	-	अकर्मक, सकर्मक, लिंग, वचन, काल
क्रिया विशेषण	-	भेद, जिस क्रिया की विशेषता बताई गई हो उसके बारे में निर्देश
समुच्चयबोधक	-	भेद, संयुक्त शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों का उल्लेख
संबंधबोधक	-	भेद, पदों, वाक्यांशों से संबंध का निर्देश
विस्मयादिबोधक	-	भेद का नाम, निर्देश

पद परिचय से सम्बंधित सूचनाएं -

विकारी पद

1. **संज्ञा** - संज्ञा का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं क्रिया के साथ सम्बन्ध |

   उदाहरण - सोहन पुस्तक पढ़ता है |

   सोहन - पद परिचय
   भेद - संज्ञा - व्यक्तिवाचक संज्ञा
   लिंग - पुल्लिंग
   वचन - एकवचन
   कारक - कर्ता कारक
   पढ़ता है क्रिया का कर्ता

   संज्ञा का परिचय - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान एवं भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं |

   संज्ञा के भेद - 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा - (भारत, जयपुर, ताजमहल, रामायण)
   2. जातिवाचक संज्ञा - (देश, शहर, पुस्तक, पशु, पेड़)
   3. भाववाचक संज्ञा - (बचपन, ईमानदार, सुंदरता, क्रोध)

2. **सर्वनाम** - सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं क्रिया के साथ सम्बन्ध |

   उदाहरण - तुम कहाँ जा रही हो |

   तुम - पद परिचय
   भेद- सर्वनाम - पुरुषवाचक सर्वनाम
   लिंग - स्त्रीलिंग
   वचन - एकवचन
   कारक - कर्ता
   जा रही हो क्रिया का कर्ता

<u>सर्वनाम का परिचय</u> - संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है |

<u>सर्वनाम के भेद -</u>

1. पुरूषवाचक सर्वनाम
   - ❖ उत्तम पुरुष - (मैं, हम , मुझे , हमारा , हमने, मैंने)
   - ❖ माध्यम पुरुष - (तुम, तुमने, तुझे, तुम्हारा, आप, आपका, आपको)
   - ❖ अन्य पुरुष - (वे, वह , उनको , उसने, उसको)
2. निश्चय वाचक सर्वनाम - यह , वह
3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम - कोई, कुछ
4. संबंध बोधक सर्वनाम - जो, सो,
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, क्या, किसने, कहाँ
6. निजवाचक सर्वनाम - अपना, स्वयं, खुद, निज

3. **<u>विशेषण</u>** - विशेषण का भेद, लिंग, वचन, विशेष्य |

उदाहरण - राम <u>सुन्दर</u> चित्र बनाता है |

सुन्दर - <u>पद परिचय</u>

भेद - विशेषण - गुणवाचक विशेषण
लिंग - पुल्लिंग
वचन - एकवचन
विशेष्य - राम

<u>विशेषण का परिचय</u> - संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते है |

<u>विशेषण के भेद</u> -

1. गुणवाचक विशेषण - (सफ़ेद, काला, गौरा, हारा, ईमानदार, बुरा, अच्छा)

   उदाहरण :-- मैंने नई पुस्तकें खरीदी

   नई :- गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन, पुस्तकें विशेष (संज्ञा)
2. संख्यावाचक विशेषण-
   - ❖ निश्चित संख्यावाचक - (एक व्यक्ति, दस कमरे, पाँच पेन)
   - ❖ अनिश्चित संख्यावाचक - (कुछ आदमी, कई पेड़)
3. परिमाण वाचक विशेषण -
   - ❖ निश्चित परिमाण वाचक - (चार मीटर, एक लीटर, दो किलो)
   - ❖ अनिश्चित परिमाण वाचक - (थोड़ा, कम, ज्यादा)
4. सार्वनामिक या संकेत वाचक विशेषण - संज्ञा के पहले आकार उसकी विशेषता बताने वाले विशेषण शब्द जैसे - मेरे पिताजी , उसका घर, ये लड़के आदि)

   उदाहरण : **<u>यह</u>** बालक बहुत मेधावी है ।

4. **<u>क्रिया</u>** - क्रिया का भेद, लिंग, वचन, वाच्य, काल एवं कर्ता या कर्म के साथ सम्बन्ध |

उदाहरण - सीता चित्र <u>बनाता थी|</u>

बनाता थी - <u>पद परिचय</u> भेद -

क्रिया -	सकर्मक क्रिया
लिंग-	स्त्रीलिंग
वचन -	एकवचन
वाच्य-	कर्त वाच्य
काल -	भूतकाल
क्रिया का कर्ता -	सीता

<u>क्रिया का परिचय</u> - जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना पाया जाता है उन्हें क्रिया कहते है |

<u>क्रिया के भेद</u> - मुख्य रूप से क्रिया दो प्रकार की होती है -

1. सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म होता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है|

   जैसे - राम हॉकी खेल रहा है |

2. अकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है और क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है | जैसे - बालक सो रहा है |

<u>अविकारी पद</u>

<u>अव्यय</u> - भेद, वाक्य में सम्बन्ध |

उदाहरण -_वह <u>धीरे-धीरे</u> चलता है | **धीरे-धीरे - पद परिचय**

भेद - क्रिया विशेषण - रीतिवाचक क्रियाविशेषण

चलता है क्रिया की रीति से सम्बंधित विशेषता बता रहा है |

उदाहरण - <u>अरे!</u> आप आ गए | **अरे! - पद परिचय**

भेद - अव्यय - विस्मयादिबोधक अव्यय

आश्चर्य का भाव प्रकट हो रहा है |

5. **<u>क्रिया विशेषण का परिचय</u>** - जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते है, उसे क्रिया विशेषण कहते है |

<u>क्रिया विशेषण के भेद</u> - क्रिया-विशेषण के चार भेद होते है |

1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण- जिन शब्दों से क्रिया के होने के तरीके का पता चलता है | जैसे- धीरे-धीरे, जल्दी से, तेजी से |

उदाहरण :-- मोहन सफाई धीरे-धीरे कर रहा है।

धीरे धीरे :-- रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'कर रहा है' क्रिया की विशेषता ।

2. काल वाचक विशेषण - जिन शब्दों से क्रिया के होने के समय का पता चलता है | जैसे- आज, कल, अभी-अभी, हमेशा आदि |

3. स्थान वाचक क्रिया-विशेषण - जिन शब्दों से क्रिया के होने के स्थान पता चलता है | जैसे - यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, इधर, उधर आदि |

उदाहरणः- 'चुन्नु-मुन्नु बाहर गए'।

बाहरः- क्रिया विशेषण, स्थानवाचक , 'गए' क्रिया के स्थान की विशेषता।

4. परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण - जिन शब्द से क्रिया की मात्र का पता चलता है | जैसे - बहुत, कम, ज्यादा आदि |

क्रिया का पद परिचय

क्रिया का भेद :-- अकर्मक, सकर्मक,प्रेरणार्थक, पूर्वकालिक , नामधातू आदि।

लिंग :-- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

वचन:-- एकवचन, बहुवचन

पुरुष :-- उत्तम, मध्यम ,अन्य

काल :-- भूत ,वर्तमान, भविष्य

वाच्य :-- कर्त वाच्य, कर्मवाच्य ,भाव वाच्य

संबंध :-- कर्ता और कर्म का संकेत

6. **<u>संबंधबोधक अव्यय</u>** - के कारण, के सामने, के साथ, के लिए, के हेतु, की जगह, की तुलना, की जगह, के बिना, के अतिरिक्त, के बदले आदि |

संबंधबोधक का पद परिचय

संबंध बोधक के भेद :-- समता,संग्रह,साधन,विरोध, काल, दिशा , स्थान आदि ।

संबंध :-- संज्ञा ,सर्वनाम, जिनसे संबंध ।

उदाहरण :-- चंचल के बिना मीनाक्षी त्रिवेंद्रम नहीं जाएगी।

के बिना :-- व्यतिरेक वाचक संबंधबोधक, चंचल और मीनाक्षी में संबंध सूचक।

7. **<u>समुच्चय बोधक अव्यय</u>** - तथा, किन्तु,लेकिन,और, या, अथवा, इसलिए, यदि, ताकि, जिसमें आदि |

समुच्चयबोधक का पद परिचय

भेद :-- संयोजक, विभाजक, कारण वाचक, स्थान वाचक, उद्देश्य वाचक आदि।

संबंध :-- वाक्य के उन पदों का उल्लेख जिन्हें जोड़ा जा रहा है

उदाहरण :-- मोहन फल नहीं लाया <u>इसलिए</u> बच्चों ने फल नहीं खाए

इसलिए :--समानाधिकरण 'मोहन फल नहीं लाया और बच्चों ने फल नहीं खाए ' उपवाक्यो को जोड़ने का कार्य।

8. **<u>विस्मयादि बोधक अव्यय</u>** - अरे!, वाह ! , ओह! शाबाश ! आदि |

विस्मयादिबोधक का पद परिचय

भेद :-- विस्मय, प्रशंसा, हर्ष, शोक, घृणा, भाई, स्वीकृति आदि

उदाहरण :-- वाह! इला मां बन गई।

वाह! :-- प्रसन्नता सूचक ,विस्मयादिबोधक अव्यय।

<u>निपात</u> - जो किसी पद या पदबंध के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का 'बल' देते हैं | जैसे - ही, भी, तो, मात्र आदि |

उदाहरण :-- सेवक बातें कर रहे थे।

कर रहे थे :-- अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, अन्य पुरुष, पूर्ण भूतकाल, कर्तवाच्य , सेवक कर्ता की क्रिया

उदाहरण

धवल वहां दसवीं कक्षा में बैठा है।

धवल :- व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग ,एकवचन, कर्ता कारक, बैठा क्रिया का कर्ता।

वहां :- स्थान वाचक क्रिया विशेषण 'बैठा है' क्रिया की विशेषता।

कक्षा में :- जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग ,एकवचन, अधिकरण कारक। बैठा है' क्रिया से संबंध।

दसवीं :-- संख्यावाचक विशेषण, स्त्रीलिंग ,एकवचन, कक्षा संज्ञा की विशेषता।

बैठा है :-- अकर्मक क्रिया ,पुल्लिंग ,एकवचन ,अन्य पुरुष, कर्त वाच्य वर्तमान काल।

<u>पद-परिचय से संबन्धित उदाहरण -</u>

रेखांकित अंशों का पद-परिचय होगा-

1. 'ड्राइवर ने **<u>ज़ोर से</u>** ब्रेक मारे |'

   <u>जोर से-</u> रीतिवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया-मारे।

2. 'वह **<u>आज</u>** चला जाएगा'

   <u>आज</u> - कालवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य- क्रिया चला जाएगा

3. 'सुदर्शन **<u>विद्यालय</u>** अभी-अभी आया है |

   <u>विद्यालय</u> - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक

4. 'वह **<u>रामायण</u>** पढ़ रहा है |

   <u>रामायण</u> - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, पढ़ रहा है क्रिया का कर्म

5. '**<u>वे</u>** जयपुर जा रहे हैं |

   <u>'वे</u> - पुरूषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक, पढ़ रहा है क्रिया का कर्म

6. '**<u>आप</u>** बैठ सकते है |

   आप - पुरूषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, बैठ सकते है क्रिया का कर्ता

7. ‘आनंद बहुत **भाग्यशाली** है|’

भाग्यशाली - गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता की विशेषता

8. ‘उसने बाजार से **दो मीटर** कपड़ा खरीद लिया है |’

दो मीटर - परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्म की विशेषता

9. ‘नरेंद्र पतंग **उड़ाता है** |’

उड़ाता है - सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल, कर्तृ वाच्य, कर्ता- नरेंद्र

10. ‘कल मैंने सीमा को जाते हुए **देखा था** |’

देखा था - सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, भूत काल, कर्म वाच्य, कर्ता- मैंने

11. ‘वीरों की **सदा** जीत होती है|’

सदा - कालवाचक क्रियाविशेषण, विशेष्य क्रिया-जीत होती है

12. ‘पिताजी के साथ **एक** बालक भी आ रहा है|’

एक - संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य- बालक

13. ‘**वाह!** तुमने बहुत अच्छा काम किया है |’

‘**वाह!** - विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्ष सूचक

14. ‘घर के **साथ ही** एक बगीचा है |’

साथ ही - संबंधबोधक अव्यय, घर और बगीचे के बीच संबंध दर्शा रहा है |

15. ‘मैं कल बीमार था **इसलिए** विद्यालय नहीं आया|’

इसलिए - समुच्चयबोधक अव्यय, दो वाक्य को जोड़ने का कार्य

16. **मधुरिमा** दिल्ली जा रही है।

मधुरिमा - व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन ,कर्ता कारक

17. मैं **दसवीं** कक्षा में पढ़ता हूं।

दसवीं - विशेषण, संख्यावाचक, क्रम सूचक ,स्त्रीलिंग, एकवचन

18. वह कक्षा में **सो जाता है।**

सो जाता है। - अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल

19. **वाह!** कितना सुंदर दृश्य है।

वाह! - अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्ष सूचक

20. कल प्राचार्य जी प्रत्येक कक्षा में **गए।**

गए। - क्रिया, अकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल

अलंकार

परिभाषा :- अलंकार शब्द की रचना दो शब्दों के मेल से हुई है- 'अलं' तथा 'कार'। 'अलं' का अर्थ है-'शोभा' या सौन्दर्य'। 'कार' शब्द 'कर्' धातु से बना रूप है, जिसका अर्थ है- 'करनेवाला'। इस तरह अलंकार शब्द का अर्थ "शोभा करने वाले' |

अलंकार शब्द का प्रयोग हम सजावट, श्रृगार, आभूषण, गहना आदि के लिए करते हैं । साहित्य में अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य-सौंदर्य के लिए होता है। संस्कृत के विद्वानों के अनुसार- 'अलंकरोति इति अलंकार:' अर्थात् जो अलंकृत करे या शोभा बढ़ाए, उसे अलंकार कहते हैं। दूसरे शब्दों में, काव्य की सुंदरता बढ़ाने वाले गुण-धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकारों के दो भेद है-शब्दालंकार और अर्थालंकार ।

1. शब्दालंकार:- जहाँ कविता में शब्दों के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न करते हैं अर्थात कविता का सौंदर्य “शब्द” पर आश्रित होता है वहां शब्दालंकार होता है |कुछ शब्दालंकार जैसे- अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि |

2. अर्थालंकार:- जहाँ कविता में सौंदर्य भाव से संबंधित होता है, शब्दों से नहीं | अर्थालंकार में चमत्कार "भाव की अनुभूति" से उत्पन्न होता है | कुछ अर्थालंकार जैसे- उपमा, रूपक,उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अतिश्योक्ति आदि |

1. **उपमा अलंकार**- जब काव्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अत्यंत प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से की जाती है तो उसे उपमा अलंकार कहते हैं I
जैसे- पीपर पात सरिस मन डोला।
यहाँ मन के डोलने की तुलना पीपल के पत्ते से की गई है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।
उपमा अलंकार के अंग-इस अलंकार के चार अंग होते हैं -
उपमेय-जिसकी उपमा दी जाय। उपर्युक्त पंक्ति में मन उपमेय है।
उपमान-जिस प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से उपमा दी जाती है।
समान धर्म-उपमेय-उपमान की वह विशेषता जो दोनों में एक समान है।
उपर्युक्त उदाहरण में 'डोलना' समान धर्म है।
वाचक शब्द-वे शब्द जो उपमेय और उपमान की समानता प्रकट करते हैं।
उपर्युक्त उदाहरण में 'सरिस' वाचक शब्द है।

उपमा अलंकार की पहचान
जहां वाचक शब्द सा, सम, सी, सरिस, समान, ज्यों शब्द आए वहां उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के अन्य उदाहरण

- हरि पद कोमल कमल से।
- हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी।
- मखमल के झूल पडे हाथी-सा टीला।
- वह किसलय के से अंग वाला कहां है?
- उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी-सी उदित हुई ।
- यह देखिए अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे।
- तब तो बहता समय शिला-सा थम जएगा।
- नील गगन सदृश शांत था सो रहा।
- गंगा तेरा नीर अमृत सम उत्तम है।
- पीपर पात सरिस मन डोला।
- निर्मल तेरा नीर अमृत सम उत्तम।
- कबिरा माया मोहिनी जैसे मीठी खांड।

2. **रूपक अलंकार -** जब रूप-गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय पर उपमान का भेदरहित आरोप होता है तो उसे रूपक अलंकार कहते हैं।
रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में भिन्नता नहीं रह जाती है; **जैसे-चरण कमल बंदी हरि राई ।**
यहाँ हरि के चरणों (उपमेय) में कमल (उपमान) का आरोप है। अत: रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण -
- मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।
मुनि के चरणों (उपमेय) पर कमल (उपमान) का आरोप।
- भजमन चरण कँवल अविनाशी।

ईश्वर के चरणों (उपमेय) पर कँवल (कमल) उपमान का आरोप।
- बंद नहीं, अब भी चलते हैं नियति नटी के क्रियाकलाप।
प्रकृति के कार्य व्यवहार (उपमेय) पर नियति नटी (उपमान) का अरोप।
- सिंधु-बिहंग तरंग-पंख को फड़काकर प्रतिक्षण में।
सिंधु (उपमेय) पर विहंग (उपमान) का तथा तरंग (उपमेय) पर पंख (उपमान) का आरोप।
- अंबर पनघट में डुबो तारा-घट उषा नागरी।
अंबर (उपमेय) पर पनघट (उपमान) का तथा तारा (उपमेय) पर घट (उपमान) का आरोप।
- माया दीपक नर पतंग भ्रमि-भ्रमि इवै पडंत।
- शशि-मुख पर घूंघट डाले।
- प्रीति-नदी में पांउ न बोरयो।
- शशि-मुख पर घूंघट डाले।
- मैया मैं तो चंद्र खिलौना लै हों।
- पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
- आए महंत वसंत।
- बीति विभावरी जाग री, अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा नागरी।

3. **उत्प्रेक्षा** : जहाँ उपमेय (सामान्य वस्तु) में उपमान (प्रसिद्ध वस्तु)की संभावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द हैं जैसे :- मानो, मनो, मनु, मनहुँ, जानो, जनु आदि।
उदहारण : सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि सैल पर आतप परयो प्रभात ।।
प्रस्तुत दोहे में 'पीत पट' में 'नीलमणि सैल पर प्रभात के आतप' के आरोप की 'मानो' शब्द द्वारा संभावना की गई है|
अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के ।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सेंवर के ।।
प्रस्तुत पंक्ति में "मेघ" में "पाहुन" के आरोप की "ज्यों" शब्द द्वारा संभावना की गई है |
अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अन्य उदाहरण
- सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण रंग का घडा।
- पद्मावती सभी सखी बुलाई। मनु फुलवारी सबै चलि आई।
- ले चला साथ तुझे मैं कनक, ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक
- हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुं पारस पायहुं रंका।
- करत प्रबेस मिटे दुख-दावा, जनु जगि परमारथ पावा।
- मिटा मोदु मन भए मलीने, वधि निधि दीन्हे लेत जनु छीन्हे
- उस काल मारे क्रोध के तन कांपने उसका लगा।
मानो हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा
- हिमकणों से पूर्ण मानव हो गए पंकज नए।
- मनहु नीलमणि सैल पर आतप पर्यो प्रभात।
- मनहु रंक निधि लूटन लागी।

4. **मानवीकरण**:- जहाँ किसी जड़ प्रकृति या निर्जीव वस्तु पर मानवीय भावनाओं या क्रियाओं का आरोप होता है वहां मानवीकरण अलंकार होता है | हम यह भी कह सकतें हिं कि जहाँ किसी अचेतन वस्तु में कवि मानव की तरह गतिविधि या भावनाओं को दर्शाते हैं वह मानवीकरण अलंकार होता है |
उदहारण : तनकर भाला यह बोल उठा

राणा मुझको विश्राम न दे
मुझको शोणित की प्यास लगी
बढ़ने दे, शोणित पीने दे।

प्रस्तुत पंक्तियों में भाला एक निर्जीव वस्तु है जो राणा से बात कर रहा है और उसे प्यास लगी है | "प्यास लगना" "बात करना" दोनों मानवीय क्रियाएं हैं जो निर्जीव भाले में दर्शाई गई हैं |इस प्रकार यहाँ मानवीकरण अलंकार है |

दिवावसन का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या-सुंदरी परी -सी धीरे-धीरे

यहाँ संध्या को एक सुंदरी के रूप से धीरे-धीरे आसमान से उतरता हुआ दिखाया गया है | अत: यहाँ मानवीकरण अलंकार है |

अन्य उदाहरण :

- प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।
- है वसुंधरा बिखरे देती, मोती सबके सोने पर।
- मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।
- आए महंत वसंत।
- हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
- पेड झुक झांकने लगे गरदन उचकाए।
- हैं कईं पत्थर किनारे पी रहे चुपचाप पानी।
- बीती विभावरी जाग री।
- मेघ आए हैं बन-ठन के संवर के।
- बूढे पीपल ने अगे बढकर जुहार की।

5. **अतिशयोक्ति**:- हाँ वर्ण्य वस्तु (उपमेय) की लोक सीमा से बढ़कर प्रशंसा की जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अतिशयोक्ति का शाब्दिक अर्थ होता है-बढ़ा-चढ़ाकर कही गई उक्ति। इसमें किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होता है।

उदाहरण:

आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार ।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।।

राणा अभी सोच ही रहे थे कि घोड़ा नदी के पार हो गया। यह यथार्थ में असंभव है। काव्य की इन पंक्तियों में राणा प्रताप के घोड़े की शक्ति और स्फूर्ति का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है, अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग ।।

हनुमान की पूँछ में आग लगने से पूर्व ही सारी लंका के जलने की बात अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर कही गई है, अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- प्राण छूटै प्रथमै रिपु के रघुनायक सायक छूट न पाए।
- देख लो साकेत नगरी है यही। स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।
- देखि सुदामा की दीन-दशा करुणा करके करुणानिधि रोए।

पानी परात कौ हाय छुऔ नहिं नैनन के सौं पग होए।

- स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।
- धड से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।
- नितप्रति पुन्योई रहै आनन-ओप-उजास।
- बिच हों सूखि गुलाबु गौ, छोटौ छुई न गात।
- खिले हजारों चांद तुम्हारे नयनों के आकाश में।
- बांधा था विधु को किसने, इन काली जंजीरों से।
  मणिवाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।

*****

पाठ्य - पुस्तक
(क्षितिज भाग-2)

काव्य खंड

कवि परिचय

सूरदास

कवि सूरदास का जन्म सन 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार इनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ था जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार इनका जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही माना जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। सुर 'वात्सल्य' और 'श्रृंगार' के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनकी मृत्यु 1583 में पारसौली में हुई ।

प्रमुख कार्य

ग्रन्थ - सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली।

(1)

उधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी में पाँव न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी।

अर्थ - इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से व्यंग्य करती हैं, कहती हैं कि तुम बहुत ही भाग्यशाली हो जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम और स्नेह से वंचित हो। तुम कमल के उस पत्ते के समान हो जो रहता तो जल में है परन्तु जल में डूबने से बचा रहता है। जिस प्रकार तेल की गगरी को जल में भिगोने पर भी उसपर पानी की एक भी बूँद नहीं ठहर पाती,ठीक उसी प्रकार तुम श्री कृष्ण रूपी प्रेम की नदी के साथ रहते हुए भी उसमें स्नान करने की बात तो दूर तुम पर तो श्रीकृष्ण प्रेम की एक छींट भी नहीं पड़ी। तुमने कभी प्रीति रूपी नदी में पैर नही डुबोए। तुम बहुत विद्यवान हो इसलिए कृष्ण के प्रेम में नही रंगे परन्तु हम भोली-भाली गोपिकाएँ हैं इसलिए हम उनके प्रति ठीक उस तरह आकर्षित हैं जैसे चीटियाँ गुड़ के प्रति आकर्षित होती हैं। हम उनके प्रेम में लीन हैं।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि असार आस आवन की,तन मन विथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि,विरहिनि विरह दही।
चाहति हुती गुहारि जितहिं तैं, उर तैं धार बही ।
'सूरदास'अब धीर धरहिं क्यौं,मरजादा न लही।।

अर्थ - इन पंक्तियों में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उनकी मन की बात मन में ही रह गयी। वे कृष्ण से बहुत कुछ कहना चाहती थीं परन्तु अब वे नही कह पाएंगी। वे उद्धव को अपने सन्देश देने का उचित पात्र नही समझती हैं और कहती हैं कि उन्हें बातें सिर्फ कृष्ण से कहनी हैं, किसी और को कहकर संदेश नहीं भेज सकती। वे कहतीं हैं कि इतने समय से कृष्ण के लौट कर आने की आशा को हम आधार मान कर तन मन, हर प्रकार से विरह की ये व्यथा सह रहीं थीं ये सोचकर कि वे आएँगे तो हमारे सारे दुख दूर हो जाएँगे। परन्तु श्री कृष्ण ने हमारे लिए ज्ञान-योग का संदेश भेजकर हमें और भी दुखी कर दिया। हम विरह की आग मे और भी जलने लगीं हैं। ऐसे समय में कोई अपने रक्षक को पुकारता है परन्तु हमारे जो रक्षक हैं वहीं आज हमारे दुःख का कारण हैं। हे उद्धव, अब हम धीरज क्यूँ धरें, कैसे धरें। जब हमारी आशा का एकमात्र तिनका भी डूब गया। प्रेम की मर्यादा है कि प्रेम के बदले प्रेम ही दिया जाए पर श्री कृष्ण ने हमारे साथ छल किया है उन्होने मर्यादा का उल्लंघन किया है।

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद -नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस - निसि, कान्ह- कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौपौं, जिनके मन चकरी ।।

अर्थ - इन पंक्तियों में गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण उनके लिए हारिल की लकड़ी हैं। जिस तरह हारिल पक्षी लकड़ी के टुकड़े को अपने जीवन का सहारा मानता है उसी प्रकार श्री कृष्ण भी गोपियों के जीने का आधार हैं। उन्होंने मन कर्म और वचन से नन्द बाबा के पुत्र कृष्ण को अपना माना है। गोपियाँ कहती हैं कि जागते हुए, सोते हुए दिन में, रात में, स्वप्न में हमारा रोम-रोम कृष्ण नाम जपता रहा है। उन्हें उद्धव का सन्देश कड़वी ककड़ी के समान लगता है। हमें कृष्ण के प्रेम का रोग लग चुका है अब हम आपके कहने पर योग का रोग नहीं लगा सकतीं क्योंकि हमने तो इसके बारे में न कभी सुना, न देखा और न कभी इसको भोगा ही है। आप जो यह योग सन्देश लायें हैं वो उन्हें जाकर सौपें जिनका मन चंचल हो चूँकि हमारा मन पहले ही कहीं और लग चुका है।

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं हीं , अब गुरु ग्रंथ पढाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी , जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के , पर हित डोलत धाए।
अब अपने मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
तें क्यौं अनीति करैं आपुन ,जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै ' सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

अर्थ - गोपियाँ कहतीं हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है। गोपियाँ बात करती हुई व्यंग्यपूर्वक कहती हैं कि वे तो पहले से ही बहुत चालाक थे पर अब उन्होंने बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिए हैं जिससे उनकी बुद्धि बढ़ गई है तभी तो हमारे बारे में सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने हमारे पास उद्धव से योग का सन्देश भेजा है। उद्धव जी का इसमे कोई दोष नहीं है, ये भले लोग हैं जो दूसरों के कल्याण करने में आनन्द का अनुभव करते हैं। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं की आप जाकर कहिएगा कि यहाँ से मथुरा जाते वक्त श्रीकृष्ण हमारा मन भी अपने साथ ले गए थे, उसे वे वापस कर दें। वे अत्याचारियों को दंड देने का काम करने मथुरा गए हैं परन्तु वे स्वयं अत्याचार करते हैं। आप उनसे कहिएगा कि एक राजा को हमेशा चाहिए की वो प्रजा की हित का ख्याल रखे। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचने दे, यही राजधर्म है।

कठिन शब्दों के अर्थ

• बड़भागी - भाग्यवान	• मरजादा - मर्यादा
• अपरस - अछूता	• न लही - नहीं रही
• तगा - धागा	• जक री - रटती रहती हैं
• पुरइन पात - कमल का पत्ता	• सु - वह
• माहँ - में	• ब्याधि - रोग
• पाऊँ - पैर	• करी - भोगा
• बोरयौ - डुबोया	• तिनहिं - उनको
• परागी - मुग्ध होना	• मन चकरी - जिनका मन स्थिर नही रहता।
• अधार - आधार	• मधुकर - भौंरा
• आवन - आगमन	• हुते - थे
• बिरहिनि - वियोग में जीने वाली।	• पठाए - भेजा
• हुतीं - थीं	• आगे के - पहले के

प्रश्न

1. **गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?**

उत्तर

गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन हैं। वे कृष्णरूपी सौन्दर्य तथा प्रेम-रस के सागर के सानिध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। वे प्रेम बंधन में बँधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित हैं।

2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर

गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की है -

(1) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की है जो नदी के जल में रहते हुए भी जल की ऊपरी सतह पर ही रहता है। अर्थात् जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। श्री कृष्ण का सानिध्य पाकर भी वह श्री कृष्ण के प्रभाव से मुक्त हैं।

(2) वह जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। उद्धव पर श्री कृष्ण का प्रेम अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाया है, जो ज्ञानियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर

गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। उनका कहना है की वे कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात साक्षात प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं ।

4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर

गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण को आना था परन्तु उन्हों ने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह वेदना और भी बढ़ गयी । इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर

'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात की जा रही है। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ उनके वियोग में जल रही थीं। कृष्ण के आने पर ही उनकी विरह-वेदना मिट सकती थी, परन्तु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव को यह संदेश देकर भेज दिया की गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग-साधना में लग जाएँ । प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों की प्रेम रस के उत्तर मैं योग की शुष्क धारा भेज दी । इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी । वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं आए

6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर

गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वे अपनों को हारिल पक्षी व श्रीकृष्ण को लकड़ी की भाँति बताया है। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने हृदय में

दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे जागते, सोते स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं। साथ ही गोपियों ने अपनी तुलना उन चीटियों के साथ की है जो गुड़ (श्रीकृष्ण भक्ति) पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती है।

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है ?

उत्तर

गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनका मन चंचल है और इधर-उधर भटकता है। उद्धव अपने योग के संदेश में मन की एकाग्रता का उपदेश देतें हैं, परन्तु गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है। इस प्रकार योग-साधना का उपदेश उनके लिए निरर्थक है। योग की आवश्यकता तो उन्हें है जिनका मन स्थिर नहीं हो पाता, इसीलिये गोपियाँ चंचल मन वाले लोगों को योग का उपदेश देने की बात कहती हैं।

8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर

प्रस्तुत पदों में योग साधना के ज्ञान को निरर्थक बताया गया है। यह ज्ञान गोपियों के अनुसार अव्यवहारिक और अनुपयुक्त है। उनके अनुसार यह ज्ञान उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगलना बड़ा ही मुश्किल है। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से आगे कहते हैं कि ये एक बीमारी है। वो भी ऐसा रोग जिसके बारे में तो उन्होंने पहले कभी न सुना है और न देखा है। इसलिए उन्हें इस ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। उन्हें योग का आश्रय तभी लेना पड़ेगा जब उनका चित्त एकाग्र नहीं होगा। परन्तु कृष्णमय होकर यह योग शिक्षा तो उनके लिए अनुपयोगी है। उनके अनुसार कृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से भक्ति करने वाले को योग की ज़रूरत नहीं होती।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?

उत्तर

गोपियों के अनुसार राजा का धर्म उनकी प्रजा की हर तरह से रक्षा करना तथा नीति से राजधर्म का पालन करना होता है। एक राजा तभी अच्छा कहलाता है जब वह अनीती का साथ न देकर नीती का साथ दे।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन सा परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

उत्तर

गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब राजनीति सिख ली है। उनकी बुद्धि पहले से भी अधिक चतुर हो गयी है। पहले वे प्रेम का बदला प्रेम से चुकाते थे, परंतु अब प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। कृष्ण पहले दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित रहते थे, परंतु अब अपना भला ही देख रहे हैं। उन्होंने पहले दूसरों के अन्याय से लोगों को मुक्ति दिलाई है, परंतु अब नहीं। श्रीकृष्ण गोपियों से मिलने के बजाय योग के शिक्षा देने के लिए उद्धव को भेज दिए हैं। श्रीकृष्ण के इस कदम से गोपियों के मन और भी आहत हुआ है। कृष्ण में आये इन्ही परिवर्तनों को देखकर गोपियाँ अपनों को श्रीकृष्ण के अनुराग से वापस लेना चाहती है।

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए?

उत्तर

गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषताएँ इस प्रकार है -

(1) तानों द्वारा (उपालंभ द्वारा) - गोपियाँ उद्धव को अपने तानों के द्वारा चुप करा देती हैं। उद्धव के पास उनका कोई जवाब नहीं होता। वे कृष्ण तक को उपालंभ दे डालती हैं। उदाहरण के लिए -

इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।

(2) तर्क क्षमता - गोपियों ने अपनी बात तर्क पूर्ण ढंग से कही है। वह स्थान-स्थान पर तर्क देकर उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं। उदाहरण के लिए -

"सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।"
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहि लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।
(3) व्यंग्यात्मकता - गोपियों में व्यंग्य करने की अद्भुत क्षमता है। वह अपने व्यंग्य बाणों द्वारा उद्धव को घायल कर देती हैं। उनके द्वारा उद्धव को भाग्यवान बताना उसका उपहास उड़ाना था।
(4) तीखे प्रहारों द्वारा - गोपियों ने तीखे प्रहारों द्वारा उद्धव को प्रताड़ना दी है।

12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइये।

उत्तर

सूरदास मधुर तथा कोमल भावनाओं का मार्मिक चित्रण करने वाले महाकवि हैं। सूर के 'भ्रमरगीत' में अनुभूति और शिल्प दोनों का ही मणि-कांचन संयोग हुआ है। इसकी मुख्य विशेषताएँ इसप्रकार हैं -

भाव-पक्ष - 'भ्रमरगीत' एक भाव-प्रधान गीतिकाव्य है। इसमें उदात्त भावनाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। भ्रमरगीत में गोपियों ने भौंरें को माध्यम बनाकर ज्ञान पर भक्ति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। अपनी वचन-वक्रता, सरलता, मार्मिकता, उपालंभ, व्यगात्म्कथा, तर्कशक्ति आदि के द्वारा उन्होंने उद्धव के ज्ञान योग को तुच्छ सिद्ध कर दिया है। 'भ्रमरगीत' में सूरदास ने विरह के समस्त भावों की स्वाभाविक एवं मार्मिक व्यंजना की हैं।

कला-पक्ष - 'भ्रमरगीत' की कला-पक्ष अत्यंत सशक्त, प्रभावशाली और रमणीय है।
भाषा-शैली - 'भ्रमरगीत' में शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
अलंकार - सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में अनुप्रास, उपमा, दृष्टांत, रूपक, व्यतिरेक, विभावना, अतिशयोक्ति आदि अनेक अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।
छंद-विधान - 'भ्रमरगीत' की रचना 'पद' छंद में हुई है। इसके पद स्वयं में स्वतंत्र भी हैं और परस्पर सम्बंधित भी हैं।
संगीतात्मकता - सूरदास कवि होने के साथ-साथ सुप्रसिद्ध गायक भी थे। यही कारण है कि 'भ्रमरगीत' में भी संगीतात्म्कथा का गुण सहज ही दृष्टिगत होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

मन की मन ही मांझ रही |
कहिए जाइ कौन पे उधौ, नाहीं परत कही |
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही |
अब इन जोग संदेसनी सुनि- सुनि , विरहिनी बिरह दही |
चाहति हुती गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बहीं |
सूरदास अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लहीं ||

(i) गोपियों के मन की कौन सी बात मन में ही रह गई ?
(क)वियोग से उत्पन्न पीड़ा संबंधी
(ख) संयोग से उत्पन्न पीड़ा संबंधी
(ग) वियोग से उत्पन्न सुख संबंधी
(घ) संयोग से उत्पन्न सुख संबंधी

उत्तर - (क) वियोग से उत्पन्न पीड़ा संबंधी

(ii)गोपियाँ अब किसके पास जाने का साहस नहीं कर सकती ?
(क) कृष्ण
(ख) राम
(ग) शिव
(घ) शंकर

उत्तर - (क) कृष्ण

(iii) योग के संदेशों ने गोपियों के ह्रदय पर क्या प्रभाव डाला था ?

(क)अपार दुःख से भर दिया ।

(ख) अपार सुख से भर दिया ।

(ग) क्षणिक दुख से भर दिया।

(घ) क्षणिक सुख से भर दिया ।

उत्तर - (क)अपार दुःख से भर दिया ।

(iv) गोपियाँ किसे अपनी मर्यादा समझती थी ?

(क) श्रीकृष्ण और उनके प्रेम ।

(ख) राम और उनके प्रेम को ।

(ग)श्रीकृष्ण का मथुरा रहना ।

(घ) राम से दूर रहना ।

उत्तर - (क)श्रीकृष्ण और उनके प्रेम ।

(v) प्रस्तुत पद में किस भाषा का प्रयोग किया है ?

(क) अवधी

(ख) ब्रज

(ग) सधुक्कड़ी

(घ) राजस्थानी

उत्तर - (ख) ब्रज

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन करण वचन नन्द-नन्दन उद यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।?

(i) "हमारे हरि हारिल की लकरी" - में कौन सा अलंकार है

(क) यमक (ख) अनुप्रास (ग) उपमा (घ) रूपक

उत्तर - (ख) अनुप्रास

(ii) गोपियों को योग का संदेश किसके समान लगता है? -

(क) कड़वी ककड़ी के समान (ख) कड़वी बेर के समान

(ग) कडवे वचन के समान (घ) कड़वी लौकी के समान

उत्तर - (क) कड़वी ककड़ी के समान

(iii) पद में कौन सा शब्द रात का पर्यायवाची है ?

(क) निसि (ख) ब्याधि (ग) उद (घ) करि

उत्तर - (क) निसि

(iv) गोपियों को योग की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वे...?

(क) सांसारिकता में नहीं रहतीं (ख) पति की सेवा करती हैं

(ग) कृष्ण से प्रेम करती हैं (घ) मेहनती हैं।

उत्तर - (ग) कृष्ण से प्रेम करती हैं

(v) हारिल कौन है?

(क) कृष्ण (ख) पक्षी (ग) गोपी (घ) लकड़ी

उत्तर - (ख) पक्षी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गोपियों का मन चुराकर कौन ले गया था?

क. उद्धव | ख. अक्रूर
ग. नंद | घ. श्रीकृष्ण

उत्तर- घ. श्रीकृष्ण

2. सूरदास के अनुसार सच्चा राज धर्म क्या है?

क. प्रजा का हित करना | ख. प्रजा से कर लेना
ग. अनीति दूर करना | घ. राज्य प्राप्त करना

उत्तर- क. प्रजा का हित करना

3. सूरदास के उपास्य देव कौन थे?

क. श्रीकृष्ण | ख. श्रीराम
ग. विष्णु | घ. निर्गुण ईश्वर

उत्तर- क. श्रीकृष्ण

4. श्रीकृष्ण के मित्र का क्या नाम है, जो गोपियों को योग का संदेश देता है?

क. बलराम | ख. नंद
ग. उद्धव | घ. अक्रूर

उत्तर- ग. उद्धव

5. उद्धव को बड़भागी किसने कहा है?

क. यशोदा माता ने | ख. नंद ने
ग. कंस ने | घ. गोपियों ने

उत्तर- घ. गोपियों ने

6. गोपियों ने किसके प्रति अपना प्रेमभाव व्यक्त किया है?

क. श्रीराम के | ख. निर्गुण ईश्वर के
ग. श्रीकृष्ण के | घ. उद्धव के

उत्तर- ग. श्रीकृष्ण के

7. प्रीति-नदी किसके लिए प्रयोग किया गया है?

क. ऊद्धव के लिए | ख. यशोदा के लिए
ग. नंद के लिए | घ. श्रीकृष्ण के लिए

उत्तर- घ. श्रीकृष्ण के लिए

8. प्रथम पद में कौन अपने-आपको भोली और अबला समझती हैं?

क. देवकी | ख. यशोदा
ग. गोपियाँ | घ. राधा

उत्तर- ग. गोपियाँ

9. गुर चाँटी ज्यौं पागी -इस पंक्ति में गुर अर्थात् गुड़ किसे कहा गया है?

क. श्रीकृष्ण को | ख. उद्धव को
ग. श्रीकृष्ण के प्रेम को | घ. गोपियों को

उत्तर- ग. श्रीकृष्ण के प्रेम को

10. मन की मन ही माँझ रही का अर्थ है?

क. मन की दृढ़ता | ख. मन की बात मन में ही रहना
ग. मन का भेद | घ. मन का पाप

उत्तर- ख. मन की बात मन में ही रहना

<u>तुलसीदास</u>

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन 1532 में हुआ था। तुलसी का बचपन संघर्षपूर्ण था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका बिछोह हो गया। कहा जाता है की गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला। वे मानव-मूल्यों के उपासक कवि थे। रामभक्ति परम्परा में तुलसी अतुलनीय हैं।

<u>प्रमुख कार्य</u>

रचनाएँ - रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

नाथ संभुधनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।

अर्थ - परशुराम के क्रोध को देखकर श्रीराम बोले - हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोडऩे वाला आपका कोई एक दास ही होगा। क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते। यह सुनकर मुनि क्रोधित होकर बोले की सेवक वह होता है जो सेवा करे, शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनी चाहिए। हे राम! सुनो, जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। वह इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम के वचन सुनकर लक्ष्मणजी मुस्कुराए और उनका अपमान करते हुए बोले- बचपन में हमने बहुत सी धनुहियाँ तोड़ डालीं, किन्तु आपने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया। इसी धनुष पर इतनी ममता किस कारण से है? यह सुनकर भृगुवंश की ध्वजा स्वरूप परशुरामजी क्रोधित होकर कहने लगे - अरे राजपुत्र! काल के वश में होकर भी तुझे बोलने में कुछ होश नहीं है। सारे संसार में विख्यात शिवजी का यह धनुष क्या धनुही के समान है?

लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोह।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

अर्थ - लक्ष्मणजी ने हँसकर कहा- हे देव! सुनिए, हमारे जान में तो सभी धनुष एक से ही हैं। पुराने धनुष के तोड़ने में क्या हानि-लाभ! श्री रामचन्द्रजी ने तो इसे नवीन के धोखे से देखा था। परन्तु यह तो छूते ही टूट गया, इसमें रघुनाथजी का भी कोई दोष नहीं है। मुनि! आप बिना ही कारण किसलिए क्रोध करते हैं? परशुरामजी अपने फरसे की ओर देखकर बोले- अरे दुष्ट! तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना। मैं तुझे बालक जानकर नहीं मारता हूँ। अरे मूर्ख! क्या तू मुझे निरा मुनि ही जानता है। मैं बालब्रह्मचारी और अत्यन्त क्रोधी हूँ। क्षत्रियकुल का शत्रु तो विश्वभर में विख्यात हूँ। अपनी भुजाओं के बल से मैंने पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया और बहुत बार उसे ब्राह्मणों को दे डाला। हे राजकुमार! सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे को देख। अरे राजा के बालक! तू अपने माता-पिता को सोच के वश न कर। मेरा फरसा बड़ा भयानक है, यह गर्भों के बच्चों का भी नाश करने वाला है।

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

अर्थ - लक्ष्मणजी हँसकर कोमल वाणी से बोले- अहो, मुनीश्वर आप अपने को बड़ा भारी योद्धा समझते हैं। बार-बार मुझे कुल्हाड़ी दिखाते हैं। फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया (बहुत छोटा फल) नहीं है, जो तर्जनी (अंगूठे की पास की) अँगुली को देखते ही मर जाती हैं। कुठार और धनुष-बाण देखकर ही मैंने कुछ अभिमान सहित कहा था। भृगुवंशी समझकर और यज्ञोपवीत देखकर तो जो कुछ आप कहते हैं, उसे मैं क्रोध को रोककर सह लेता हूँ। देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गो- इन पर हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती है। क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति होती है, इसलिए आप मारें तो भी आपके पैर ही पड़ना चाहिए। आपका एक-एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान है। धनुष-बाण और कुठार तो आप व्यर्थ ही धारण करते हैं। इन्हें देखकर मैंने कुछ अनुचित कहा हो, तो उसे हे धीर महामुनि! क्षमा कीजिए। यह सुनकर भृगुवंशमणि परशुरामजी क्रोध के साथ गंभीर वाणी बोले।

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालबस निज कुल घालकु।।
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू।।
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।
लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।
सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

अर्थ - हे विश्वामित्र! सुनो, यह बालक बड़ा कुबुद्धि और कुटिल है, काल के वश होकर यह अपने कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंश रूपी पूर्ण चन्द्र का कलंक है। यह बिल्कुल उद्दण्ड, मूर्ख और निडर है। अभी क्षण भर में यह काल का ग्रास हो जाएगा। मैं पुकारकर कहे देता हूँ, फिर मुझे दोष नहीं देना। यदि तुम इसे बचाना चाहते हो, तो हमारा प्रताप, बल और क्रोध

बतलाकर इसे मना कर दो। लक्ष्मणजी ने कहा- हे मुनि! आपका सुयश आपके रहते दूसरा कौन वर्णन कर सकता है? आपने अपने ही मुँह से अपनी करनी अनेकों बार बहुत प्रकार से वर्णन की है। इतने पर भी संतोष न हुआ हो तो फिर कुछ कह डालिए। क्रोध रोककर असहय दुःख मत सहिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले, धैर्यवान और क्षोभरहित हैं। गाली देते शोभा नहीं पाते। शूरवीर तो युद्ध में शूरवीरता का प्रदर्शन करते हैं, कहकर अपने को नहीं जनाते। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर कायर ही अपने प्रताप की डींग मारा करते हैं।

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा।।
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा।।
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगें अपराधी गुरुद्रोही।।
उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें।।
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे।।
गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।।

अर्थ - आप तो मानो काल को हाँक लगाकर बार-बार उसे मेरे लिए बुलाते हैं। लक्ष्मणजी के कठोर वचन सुनते ही परशुरामजी ने अपने भयानक फरसे को सुधारकर हाथ में ले लिया और बोले - अब लोग मुझे दोष न दें। यह कड़वा बोलने वाला बालक मारे जाने के ही योग्य है। इसे बालक देखकर मैंने बहुत बचाया, पर अब यह सचमुच मरने को ही आ गया है। विश्वामित्रजी ने कहा- अपराध क्षमा कीजिए। बालकों के दोष और गुण को साधु लोग नहीं गिनते। परशुरामजी बोले - तीखी धार का कुठार, मैं दयारहित और क्रोधी और यह गुरुद्रोही और अपराधी मेरे सामने- उत्तर दे रहा है। इतने पर भी मैं इसे बिना मारे छोड़ रहा हूँ, सो हे विश्वामित्र! केवल तुम्हारे प्रेम)से, नहीं तो इसे इस कठोर कुठार से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु से उऋण हो जाता। विश्वामित्रजी ने हृदय में हँसकर कहा - परशुराम को हरा ही हरा सूझ रहा है (अर्थात सर्वत्र विजयी होने के कारण ये श्री राम-लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं), किन्तु यह फौलाद की बनी हुई खाँड़ है, रस की खाँड़ नहीं है जो मुँह में लेते ही गल जाए। खेद है, मुनि अब भी बेसमझ बने हुए हैं, इनके प्रभाव को नहीं समझ रहे हैं।

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा।।
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें।।
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा।।
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
भृगुबर परसु देखावहु मोही। बिप्र बिचारि बचउँ नृपदोही।।
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विज देवता घरहि के बाढ़े।।
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे।।
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।

अर्थ - लक्ष्मणजी ने कहा- हे मुनि! आपके प्रेम को कौन नहीं जानता? वह संसार भर में प्रसिद्ध है। आप माता-पिता से तो अच्छी तरह उऋण हो ही गए, अब गुरु का ऋण रहा, जिसका जी में बड़ा सोच लगा है। वह मानो हमारे ही मत्थे काढ़ा था। बहुत दिन बीत गए, इससे ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब किसी हिसाब करने वाले को बुला लाइए, तो मैं तुरंत थैली खोलकर दे दूँ। लक्ष्मणजी के कड़वे वचन सुनकर परशुरामजी ने कुठार संभाला। सारी सभा हाय-हाय! करके पुकार उठी। लक्ष्मणजी ने कहा- हे भृगुश्रेष्ठ! आप मुझे फरसा दिखा रहे हैं? पर हे राजाओं के शत्रु! मैं ब्राहमण समझकर बचा रहा हूँ। आपको कभी रणधीर बलवान् वीर नहीं मिले हैं। हे ब्राहमण देवता ! आप घर ही में बड़े हैं। यह सुनकर 'अनुचित है, अनुचित है' कहकर

सब लोग पुकार उठे। तब श्री रघुनाथजी ने इशारे से लक्ष्मणजी को रोक दिया। लक्ष्मणजी के उत्तर से, जो आहुति के समान थे, परशुरामजी के क्रोध रूपी अग्नि को बढ़ते देखकर रघुकुल के सूर्य श्री रामचंद्रजी जल के समान शांत करने वाले वचन बोले।

कठिन शब्दों के अर्थ

• भंजनिहारा - भंग करने वाला	• सरोष - क्रोध सहित
• रिसाइ - क्रोध करना	• कौसिक - विश्वामित्र
• रिपु - शत्रु	• भानुबंस - सूर्यवंश
• बिलगाउ - अलग होना	• निरंकुश - जिस पर किसी का दबाब ना हो।
• अवमाने - अपमान करना	• असंकू - शंका सहित
• लरिकाईं - बचपन में	• घालुक - नाश करने वाला
• परसु - फरसा	• कालकवलु - मृत
• कोही - क्रोधी	• अबुधु - नासमझ
• महिदेव - ब्राह्मण	• हटकह - मना करने पर
• बिलोक - देखकर	• अछोभा - शांत
• अर्भक - बच्चा	• बधजोगु - मारने योग्य
• महाभट - महान योद्धा	• अकरुण - जिसमे करुणा ना हो
• मही - धरती	• गाधिसूनु - गाधि के पुत्र यानी विश्वामित्र
• कुठारु - कुल्हाड़ा	• अयमय - लोहे का बना हुआ
• कुम्हड़बतिया - बहुत कमजोर	• नेवारे - मना करना
• तर्जनी - अंगूठे के पास की अंगुली	• ऊखमय - गन्ने से बना हुआ
• कुलिस - कठोर	• कृसानु - अग्नि

प्रश्न अभ्यास

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर

परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

i. हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा ।

ii. श्री राम को तो ये धनुष, नए धनुष के समान लगा।

iii. श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वत: टूट गया।

iv. इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था।

v. उन्होंने ऐसे अनेक धनुषों को बालपन में यूँ ही तोड़ दिया था। इसलिए यही सोचकर उनसे यह कार्य हो गया।

2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर

परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने नम्रता पूर्ण वचनों का सहारा लेकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। श्री राम उनके क्रोध पर शीतल जल के समान शब्दों व आचरण का आश्रय ले रहे थे। यही कारण था कि उन्होंने स्वयं को उनका सेवक बताया व उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया। उनकी भाषा अत्यंत कोमल व मीठी थी और परशुराम के क्रोधित होने पर भी वह अपनी कोमलता को नहीं छोड़ते थे। इसके विपरीत लक्ष्मण परशुराम की भाँति ही क्रोधी स्वभाव के हैं। निडरता तो जैसे उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए परशुराम का फरसा व क्रोध उनमें भय उत्पन्न नहीं कर पाता। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। वे परशुराम के क्रोध को न्यायपूर्ण नहीं मानते। इसलिए परशुराम के अन्याय के विरोध में खड़े हो जाते हैं। जहाँ राम

विनम्र, धैर्यवान, मृदुभाषी व बुद्धिमान व्यक्ति हैं वहीं दूसरी ओर लक्ष्मण निडर, साहसी, क्रोधी तथा अन्याय विरोधी स्वभाव के हैं। ये दोनों गुण इन्हें अपने-अपने स्थान पर उच्च स्थान प्राप्त करवाते हैं।

3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर

लक्ष्मण - हे मुनि! बचपन में हमने खेल-खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े हैं तब तो आप कभी क्रोधित नहीं हुए थे। फिर इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हैं?

परशुराम - अरे, राजपुत्र! तू काल के वश में आकर ऐसा बोल रहा है। यह शिव जी का धनुष है।

4. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए -

बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही||
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही||
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा||
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर||

उत्तर

परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय कुल के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। वे आगे, बढ़े अभिमान से अपने विषय में बताते हुए कहते हैं कि उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राह्मणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्त्रबाहु के बाहों को काट डाला है। इसलिए हे नरेश पुत्र! मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले।राजकुमार! तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

5. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई?

उत्तर

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई है -

i. वीर पुरुष स्वयं अपनी वीरता का बखान नहीं करते अपितु वीरता पूर्ण कार्य स्वयं वीरों का बखान करते हैं।

ii. वीर पुरुष स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते। वीरता का व्रत धारण करने वाले वीर पुरुष धैर्यवान और क्षोभरहित होते हैं।

iii. वीर पुरुष किसी के विरुद्ध गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते। अर्थात् दूसरों को सदैव समान रुप से आदर व सम्मान देते हैं।

iv. वीर पुरुष दीन-हीन, ब्राह्मण व गायों, दुर्बल व्यक्तियों पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं। उनसे हारना व उनको मारना वीर पुरुषों के लिए वीरता का प्रदर्शन न होकर पाप का भागीदार होना है।

v. वीर पुरुषों को चाहिए कि अन्याय के विरुद्ध हमेशा निडर भाव से खड़े रहे।

vi. किसी के ललकारने पर वीर पुरुष कभी पीछे कदम नहीं रखते अर्थात् वह यह नहीं देखते कि उनके आगे कौन है वह निडरता पूर्वक उसका जवाब देते हैं।

6. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है । इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर

साहस और शक्ति ये दो गुण एक व्यक्ति को वीर बनाते हैं। यदि किसी व्यक्ति में साहस विद्यमान है तो शक्ति स्वयं ही उसके आचरण में आ जाएगी परन्तु जहाँ तक एक व्यक्ति को वीर बनाने में सहायक गुण होते हैं वहीं दूसरी ओर इनकी अधिकता एक व्यक्ति को अभिमानी व उद्दंड बना देती है। कारणवश या अकारण ही वे इनका प्रयोग करने लगते हैं। परन्तु यदि विन्रमता इन गुणों के साथ आकर मिल जाती है तो वह उस व्यक्ति को श्रेष्ठतम वीर की श्रेणी में ला देती है जो साहस और शक्ति में अहंकार का समावेश करती है। विनम्रता उसमें सदाचार व मधुरता भर देती है,वह किसी भी स्थिति को सरलता पूर्वक शांत कर सकती है। जहाँ परशुराम जी साहस व शक्ति का संगम है। वहीं राम विनम्रता, साहस व शक्ति का संगम है।

उनकी विनम्रता के आगे परशुराम जी के अहंकार को भी नतमस्तक होना पड़ा नहीं तो लक्ष्मण जी के द्वारा परशुराम जी को शांत करना सम्भव नहीं था।

7. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥

उत्तर

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से ली गई हैं। उक्त पंक्तियों में लक्ष्मण जी द्वारा परशुराम जी के बोले हुए अपशब्दों का प्रतिउत्तर दिया गया है।

भाव - भाव यह है कि लक्ष्मण जी मुस्कराते हुए मधुर वाणी में परशुराम पर व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि हे मुनि आप अपने अभिमान के वश में हैं। मैं इस संसार का श्रेष्ठ योद्धा हूँ। आप मुझे बार-बार अपना फरसा दिखाकर डरा रहे हैं। आपको देखकर तो ऐसा लगता है मानो फूँक से पहाड़ उड़ाने का प्रयास कर रहे हों। अर्थात् जिस तरह एक फूँक से पहाड़ नहीं उड़ सकता उसी प्रकार मुझे बालक समझने की भूल मत किजिए कि मैं आपके इस फरसे को देखकर डर जाऊँगा।

(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

उत्तर

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से ली गई हैं। उक्त पंक्तियों में लक्ष्मण जी द्वारा परशुराम जी के बोले हुए अपशब्दों का प्रतिउत्तर दिया गया है।

भाव - भाव यह है कि लक्ष्मण जी अपनी वीरता और अभिमान का परिचय देते हुए कहते हैं कि हम भी कोई कुम्हड़बतिया नहीं है जो किसी की भी तर्जनी देखकर मुरझा जाएँ। मैंने फरसे और धनुष-बाण को अच्छी तरह से देख लिया है। इसलिए ये सब आपसे अभिमान सहित कह रहा हूँ। अर्थात् हम कोमल पुष्पों की भाँति नहीं हैं जो ज़रा से छूने मात्र से ही मुरझा जाते हैं। हम बालक अवश्य हैं परन्तु फरसे और धनुष-बाण हमने भी बहुत देखे हैं इसलिए हमें नादान बालक समझने का प्रयास न करें।

(ग) गाधिसू नु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

उत्तर

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से ली गई हैं। उक्त पंक्तियाँ में परशुराम जी द्वारा बोले गए वचनों को सुनकर विश्वामित्र मन ही मन परशुराम जी की बुद्धि और समझ पर तरस खाते हैं।

भाव - भाव यह है कि विश्वामित्र अपने हृदय में मुस्कुराते हुए परशुराम की बुद्धि पर तरस खाते हुए मन ही मन कहते हैं कि परशुराम जी को चारों ओर हरा ही हरा दिखाई दे रहा है तभी तो वह दशरथ पुत्रों को (राम व लक्ष्मण) साधारण क्षत्रिय बालकों की तरह ही ले रहे हैं। जिन्हें ये गन्ने की खाँड़ समझ रहे हैं वे तो लोहे से बनी तलवार (खड़ग) की भाँति हैं। अर्थात् वे भगवान विष्णु के रुप राम व लक्ष्मण को साधारण मानव बालकों की भाँति ले रहे हैं। वे ये नहीं जानते कि जिन्हें वह गन्ने की खाँड़ की तरह कमज़ोर समझ रहे हैं पल भर में वे इनको अपने फरसे से काट डालेंगे। यह नहीं जानते कि ये लोहे से बनी तलवार की भाँति हैं। इस समय परशुराम की स्थिति सावन के अंधे की भाँति हो गई है। जिन्हें चारों ओर हरा ही हरा दिखाई दे रहा है अर्थात् उनकी समझ अभी क्रोध व अहंकार के वश में है।

8. पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर

तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस अवधी भाषा में लिखी गई है। यह काव्यांश रामचरितमानस के बालकांड से ली गई है। इसमें अवधी भाषा का शुद्ध रुप में प्रयोग देखने को मिलता है। तुलसीदास ने इसमें दोहा, छंद, चौपाई का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है। जिसके कारण काव्य के सौंदर्य तथा आनंद में वृद्धि हुई है और भाषा में लयबद्धता बनी रही है। तुलसीदास जी ने अलंकारो के सटीक प्रयोग से इसकी भाषा को और भी सुंदर व संगीतात्मक बना दिया है। इसकी भाषा में अनुप्रास अलंकार,

रुपक अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार, व पुनरुक्ति अलंकार की अधिकता मिलती है। इस काव्याँश की भाषा में व्यंग्यात्मकता का सुंदर संयोजन हुआ है।

9. इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

तुलसीदास द्वारा रचित परशुराम - लक्ष्मण संवाद मूल रूप से व्यंग्य काव्य है। उदाहरण के लिए -

(1) बहु धनुही तोरी लरिकाईं।
कबहुँ न असि रिसकीन्हि गोसाईं॥

लक्ष्मण जी परशुराम जी से धनुष को तोड़ने का व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि हमने अपने बालपन में ऐसे अनेकों धनुष तोड़े हैं तब हम पर कभी क्रोध नहीं किया।

(2) मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर। गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥ परशुराम जी क्रोधित होकर लक्ष्मण से कहते है। अरे राजा के बालक! तू अपने माता-पिता को सोच के वश न कर। मेरा फरसा बड़ा भयानक है, यह गर्भों के बच्चों का भी नाश करने वाला है॥

(3) गाधिसू नु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ। अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

यहाँ विश्वामित्र जी परशुराम की बुद्धि पर मन ही मन व्यंग्य कसते हैं और मन ही मन कहते हैं कि परशुराम जी राम, लक्ष्मणको साधारण बालक समझ रहे हैं। उन्हें तो चारों ओर हरा ही हरा सूझ रहा है जो लोहे की तलवार को गन्ने की खाँड़ से तुलना कर रहे हैं। इस समयपरशुराम की स्थिति सावन के अंधे की भाँति हो गई है। जिन्हें चारों ओर हरा ही हरा दिखाई दे रहा है अर्थात् उनकी समझ अभी क्रोध व अहंकार के वश में है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

(1) परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम ने उनसे क्या कहा?
- (i) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा।
- (ii) धनुष तोड़ने वाला कोई राजकुमार है।
- (iii) यह धनुष अपने आप ही टूट गया।
- (iv) सीता से विवाह के लिए इस धनुष को तोड़ना आवश्यक था।

उत्तर - (i) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा।

(2) शिवजी के धनुष को तोड़ने वाले के विरुद्ध परशुराम ने किस प्रकार के व्यवहार का संकल्प लिया?
- (i) धनुष तोड़ने वाला मेरे लिए शत्रु के समान है।
- (ii) धनुष तोड़ने वाला मेरे लिए सहस्त्रबाहु के समान है।

(iii) वह तुरंत इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए नहीं तो सभी राजा मारे जाएंगे।

(iv) सभी विकल्प सही हैं।

उत्तर - (iv) सभी विकल्प सही हैं।

(3) लक्ष्मण के किस बात से परशुराम का क्रोध और बढ़ गया-

(i) बचपन में हमने बहुत-सी धनुइया तोड़ी, तब तो आपने क्रोध नहीं किया लेकिन अब इस धनुष पर इतनी ममता क्यों?

(ii) क्षमा कीजिए, धनुष तो अपने आप ही टूट गया, इसमें हमारी कोई गलती नहीं।

(iii) धनुष टूटने का उचित मूल्य बताइए, हम उसे चुका देंगे।

(iv) विकल्प 1 व 2 सही हैं।

उत्तर - (iv) विकल्प 1 व 2 सही हैं।

4. 'भृगुकुलकेतु' किसे कहा गया है?

(i) विश्वामित्र को

(ii) परशुराम को

(iii) वहाँ पर उपस्थित महाराजाओं को

(iv) उपरोक्त सभी।

उत्तर - (i) विश्वामित्र को

5. राम और लक्ष्मण 'सीता स्वयंवर' में किस मुनि के साथ आए?

(i) वशिष्ठ मुनि

(ii) नारद मुनि

(iii) विश्वामित्र

(iv) परशुराम

उत्तर - विश्वामित्र

लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोह।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

1. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के रचयिता है-

(i). कबीरदास

(ii). तुलसीदास

(iii). मीराबाई

(iv). सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर= तुलसीदास

2. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' की भाषा है-
(i). अवधी
(ii). भोजपुरी
(iii). राजस्थान
(iv). ब्रज
उत्तर= अवधी

3. क्षत्रिय कुल का द्रोही कौन है?
(i). दशरथ
(ii). जनक
(iii). परशुराम
(iv). राम
उत्तर= परशुराम

4. 'बाल ब्रह्मचारी अति कोही' में कौन-सा अलंकार है?
(i). यमक
(ii). रूपक
(iii). अनुप्रास
(iv). उपमा
उत्तर= अनुप्रास

5. 'गर्भन्ह के अर्भक दलन' - में अर्भक का अर्थ है-
(i). गंधक
(ii). शत्रु
(iii). बच्चा
(iv). गधा
उत्तर= बच्चा

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न</u>

1. लक्ष्मण का यह कथन 'एक फूंक से पहाड़ उड़ाना' परशुराम के किस गुण को दर्शाता है?
   क. योद्धा ख. कायर
   ग. साहसी घ. मूर्खता
   उत्तर- योद्धा
2. जो सेवा का काम करे वो कौन कहलाता है?
   क. नौकर ख. सेवक
   ग. चौकीदार घ. इनमें से कोई नहीं
   उत्तर- सेवक
3. किसके कहने पर परशुराम ने अपनी माता का वध कर दिया था?
   क. गुरु के ख. पिता के
   ग. प्रेयसी के घ. विश्वामित्र के
   उत्तर= पिता के

4. लक्ष्मण को शांत रहने का इशारा किसने किया?

क. श्रीराम | ख. जनक ने

ग. विश्वामित्र | घ. वशिष्ठ ने

उत्तर= श्रीराम

5. परशुराम ने किसके प्रेम के कारण लक्ष्मण का वध नहीं किया?

क. शिव के | ख. राम के

ग. पिता के | घ. विश्वामित्र के

उत्तर= विश्वामित्र के

6. परशुराम का स्वभाव कैसा है/

क. उदार | ख. शांत

ग. क्रोधी | घ. चंचल

उत्तर= क्रोधी

7. सहस्त्रबाहु की भुजाओं को किसने काटा था?

क. लक्ष्मण ने | ख. परशुराम ने

ग. विष्णु ने | घ. शिव ने

उत्तर= परशुराम ने

8. परशुराम के वचन किसके समान कठोर है?

क. वज्र के | ख. लोहे के

ग. पत्थर के | घ. लोहे के

उत्तर= वज्र के

9. लक्ष्मण के उत्तर परशुराम जी के क्रोध रूपी अग्नि को किसके समान भड़का रहे थे?

क. दावानल | ख. बडवानल

ग. आहुति | घ. आँधी

उत्तर= आहुति

10. लक्ष्मण के अनुसार वीर पुरुष युद्ध भूमि में शत्रु को सामने पाकर क्या नहीं करते?

क. पहले प्रहार | ख. अपनी वीरता का वर्णन

ग. शांति का प्रदर्शन | घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर= अपनी वीरता का वर्णन

11. परशुराम जी किस शस्त्र को धारण करते थे जिसके कारण उनका नाम परशुराम पड़ा?

क. धनुषबाण | ख. तलवार

ग. परशु | घ. त्रिशूल

उत्तर= परशु

******

जयशंकर प्रसाद

इनका जन्म सन 1889 में वाराणसी में हुआ था। काशी के प्रसिद्ध क्वींस कॉलेज में वे पढ़ने गए परन्तु स्थितियां अनुकूल ना होने के कारण आँठवी से आगे नही पढ़ पाए। बाद में घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फारसी का अध्ययन किया। छायावादी काव्य प्रवृति के प्रमुख कवियों में ये एक थे। इनकी मृत्यु सन 1937 में हुई।

प्रमुख कार्य

काव्य-कृतियाँ - चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आंसू, लहर, और कामायनी।

नाटक - अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यास - कंकाल, तितली और इरावती।

कहानी संग्रह - आकाशदीप, आंधी और इंद्रजाल।

आत्मकथ्य

(1)

मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी अपनी यह,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपने व्यंग्य मलिन उपहास
तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे-यह गागर रीती।

अर्थ - इस कविता में कवि ने अपने अपनी आत्मकथा न लिखने के कारणों को बताया है। कवि कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का मन रूपी भौंरा प्रेम गीत गाता हुआ अपनी कहानी सुना रहा है। झरते पत्तियों की ओर इशारा करते हुए कवि कहते हैं कि आज असंख्य पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं यानी उनकी जीवन लीला समाप्त हो रही है। इस प्रकार अंतहीन नील आकाश के नीचे हर पल अनगिनित जीवन का इतिहास बन और बिगड़ रहा है। इस माध्यम से कवि कह रहे हैं की इस संसार में हर कुछ चंचल है, कुछ भी स्थिर नही है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के मज़ाक बनाने में लगे हैं, हर किसी को दूसरे में कमी नजर आती है। अपनी कमी कोई नही कहता, यह जानते हुए भी तुम मेरी आत्मकथा जानना चाहते हो। कवि कहता है कि यदि वह उन पर बीती हुई कहानी वह सुनाते हैं तो लोगों को उससे आनंद तो मिलेगा, परन्तु साथ ही वे यह भी देखेंगे की कवि का जीवन सुख और प्रसन्नता से बिलकुल ही खाली है।

(2)

किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले-
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।
यह विडंबना! अरी सरलते हँसी तेरी उड़ाऊँ मैं।
भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।
उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिलाकर हँसतने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

अर्थ - कवि कहते हैं कि उनका जीवन स्वप्न के समान एक छलावा रहा है। जीवन में जो कुछ वो पाना चाहते हैं वह सब उनके पास आकर भी दूर हो गया। यह उनके जीवन की विडंबना है। वे अपनी इन कमज़ोरियों का बखान कर जगहँसाई नही

करा सकते। वे अपने छले जाने की कहानी नहीं सुनाना चाहता। जिस प्रकार सपने में व्यक्ति को अपने मन की इच्छित वस्तु मिल जाने से वह प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि के जीवन में भी पएक बार प्रेम आया था परन्तु वह स्वपन की भांति टूट गया। उनकी सारी आकांक्षाएँ महज मिथ्या बनकर रह गयी चूँकि वह सुख का स्पर्श पाते-पाते वंचित रह गए। इसलिए कवि कहते हैं कि यदि तुम मेरे अनुभवों के सार से अपने जीवन का घड़ा भरने जा रहे हो तो मैं अपनी उज्जवल जीवन गाथा कैसे सुना सकता हूँ ।

(3)

जिसके अरूण-कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़े कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

अर्थ - इन पंक्तियों में कवि अपने सुन्दर सपनों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उनके जीवन में कुछ सुखद पल आये जिनके सहारे वे वर्तमान जीवन बिता रहे हैं। उन्होंने प्रेम के अनगनित सपने संजोये थे परन्तु वे सपने मात्र रह गए, वास्तविक जीवन में उन्हें कुछ ना मिल सका। कवि अपने प्रेयसी के सुन्दर लाल गालों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मानो भोर अपनी लाली उनकी प्रेयसी के गालों की लाली से प्राप्त करती है परन्तु अब ऐसे रूपसी की छवि अब उनका सहारा बनकर रह गयी है क्योंकि वास्तविक जीवन वे क्षण कवि को मिलने से पहले ही छिटक कर दूर चले गए। इसलिए कवि कहते हैं कि मेरे जीवन की कथा को जानकर तुम क्या करोगे, अपने जीवन को वे छोटा समझ कर अपनी कहानी नही सुनाना चाहते। इसमें कवि की सादगी और विनय का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। वे दूसरों के जीवन की कथाओं को सुनने और जानने में ही अपनी भलाई समझते हैं। वे कहते हैं कि अभी उनके जीवन की कहानी सुनाने का वक़्त नही आया है। मेरे अतीतों को मत कुरेदो, उन्हें मौन रहने दो।

कठिन शब्दों के अर्थ

- मधुप - मन रूपी भौंरा
- अनंत नीलिमा - अंतहीन विस्तार
- व्यंग्य मलिन - खराब ढंग से निंदा करना
- गागर-रीती - खाली घड़ा
- प्रवंचना - धोखा
- मुसक्या कर - मुस्कुरा कर
- अरुण-कोपल - लाल गाल
- अनुरागिनी उषा - प्रेम भरी भोर
- स्मृति पाथेय - स्मृति रूपी सम्बल
- पन्था - रास्ता
- कंथा - अंतर्मन

प्रश्न अभ्यास

1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं ?

उत्तर

कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहते हैं क्योंकि जीवन में बहुत सारी पीडादायक घटनाएँ हुई हैं। अपनी सरलता के कारण

उसने कई बार धोखा भी खाया है। कवि के पास मात्र कुछ सुनहरे क्षणों की स्मृतियाँ ही शेष हैं जिसके सहारे वह अपनी जीवन - यात्रा पूरी कर रहा है। उन यादो को उसने अपने अंतर मन सँजोकर रखा है और उन्हें वह प्रकट करना नहीं चाहता है। कवि को लगता है की उनकी आत्मकथा में ऐसा कुछ भी नहीं हैं जिसे महान और सेवक मानकर लोग आनंदित होंगें । इन्हीं कारणों से कवि लिखने से बचना चाहते हैं।

2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है ?

उत्तर

कवि कहता है कि उसके लिए आत्मकथा सुननाने का यह उचित समय नहीं है। कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण है यह है कि कवि को अभी सुखों के के सिवाय और कोइ उपलब्धि नहीं मिल सकी है। कवि का जीवन दुःख और अभावों से भरा रहा हैं। कवि को अपने जीवन में जो बाहरी पीड़ा मिली है, उसे वह चुपचाप अकेले ही सहा है। जीवन का इस पड़ाव पर उसके जीवन के सभी दुःख तथा व्यथाएँ थककर सोई हूई है,, अर्थात बहुत मुश्किल से कवि को अपनी पुराणी वेदना से मुक्ति मिल चुकी है। आत्मकथा लिखने के लिए के लिए कवि को अपने जीवन की उन सभी व्यथाओं को जगाना होगा और कवि ऐसा प्रतीत होता है कि अभी उसके जीवन में ऐसी कोइ उपलब्धि नहीं मिली है जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणास्वरूप रख सके। इन्हीं कारणों से कवि अपनी आत्मकथा अभी नहीं लिखना चाहता।

3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर

स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का आशय जीवनमार्ग के प्रेरणा से है। कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कवि स्वयं को जीवन - यात्रा से थका हुआ मानता है। जिस प्रकार 'पाथेय' यात्रा में यात्री को सहारा देता है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है ठिक उसी प्रकार स्वप्न में देखे हुए किंचित सुख की स्मृति भी कवि को जीवन - मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देता है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर

कवि कहना चाहता है कि जिस प्रेम के कवि सपने देख रहे थे वो उन्हें कभी प्राप्त नहीं हूआ। कवि ने जिस सुख की कल्पना की थी वह उसे कभी प्राप्त न हूआ और उसका जीवन हमेशा उस सुख से वंचित ही रहा। इस दुनिया में सुख छलावा मात्र है। हम जिसे सुख समझते हैं वह अधिक समय तक नहीं रहता है, स्वप्न की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर

कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हूए कहता है कि प्रेममयी भोर वेला भी अपनी मधुर लालिमा उसके गालों से लिया करती थी। कवि की प्रेमिका का मुख सौंदर्य ऊषाकालीन लालिमा से भी बढ़कर था।

5. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' - कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर

उपर्युक्त पंक्तियों से कवि का आशय निजी प्रेम का उन मधुर और सुख-भरे क्षणों से है, जो कवि ने अपनी प्रेमिका के साथ व्यतीत किये थे । चाँदनी रातों में बिताए गए वे सुखदायक क्षण किसी उज्ज्वल गाथा की तरह ही पवित्र है जो कवि के लिए अपने अन्धकारमय जीवन में आगे बढ़ने का एकमात्र सहारा बनकर रह गया । इसीलिए कवि अपने जीवन की उन मधुर स्मृतियों को किसी से बाँटना नहीं चाहता बल्कि अपने तक ही सीमित रखना चाहता है ।

6. 'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर

'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित कविता 'आत्मकथ्य' की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

i. प्रस्तुत कविता में कवि ने खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग किया है -

ii. अपने मनोभावों को व्यक्त कर उसमें सजीवता लाने के लिए कवि ने ललित, सुंदर एवं नवीन बिंबों का प्रयोग किया है कविता में बिम्बों का प्रयोग किया है।

iii. विडंबना, प्रवंचना जैसे नवीन शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे काव्य में सुंदरता आई है।

iv. मानवेतर पदार्थों को मानव की तरह सजीव बनाकर प्रस्तुत किया गया है । यह छायावाद की प्रमुख विशेषता रही है।

v. अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य बढ़ गया है।

7. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर

कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे वह अपने प्रेमिका के रूप में व्यक्त किया ह । यह प्रेमिका स्वप्न में कवि के पास आते-आते मुस्कराकर दूर चली जाती है और कवि को सुख से वंचित ही रहना पड़ता है। कवि कहता है की अपने जीवन में वह जो सुख का सपना देखा था,, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ।

8. इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर

प्रसाद जी एक सीधे-सादे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा नहीं था। वे अपने जीवन के सुख-दुख को लोगों पर व्यक्त नहीं करना चाहते थे, अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। अपनी दुर्बलताओं को समाज में प्रस्तुत कर वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाना नहीं चाहते थे। पाठ की कुछ पंक्तियाँ उनके वेदना पूर्ण जीवन को दर्शाती है। इस कविता में एक तरफ़ कवि की यथार्थवादी प्रवृति भी है तथा दूसरी तरफ़ प्रसाद जी की विनम्रता भी है। जिसके कारण वे स्वयं को श्रेष्ठ कवि मानने से इनकार करते हैं।

बहु-विकल्पात्मक प्रश्न

(1)

मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास
तब भी कहते हो कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे यह गागर रीती।
किंतु कहीं ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले।

(1) कवि ने यहाँ अपने जीवन के किस पक्ष का उल्लेख किया है?

(क) सुखद पक्ष का (ख) दुःखद पक्ष का

(ग) बचपन का (घ) वृद्धावस्था का

(2) पत्तियों का मुरझाना किस ओर संकेत करता ह

(क) मृत्यु की ओर (ख) सूखे की ओर

(ग) ढलती उम्र एवं जीवन के आनंद की समाप्ति की ओर (घ) जीवन की कठिनाइयों की ओर

(3) मधुप किसे कहा गया है?

(क) मन रूपी भौंरे को (ख) भौंरे को

(ग) शहद पीने वाले को (घ) इनमें से कोई नहीं।

(4) कवि ने गागर रीति किसे कहा है?

(क) खाली घड़े को (ख) अभावपूर्ण जिन्दगी को

(ग) अज्ञानता को (घ) अपने रिक्त जीवन को

(5) कवि के सरल स्वभाव के कारण किसने धोखा दिया है?

(क) प्रेमिका ने (ख) मित्रों ने

(ग) संबंधियों ने (घ) इनमें से कोई नहीं

(2)

जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।
सीवन की उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की?
छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे कि मेरी भोली आत्म-कथा?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

(1) पद्यांश में किसके कपोलों की बात की गई है?

(क) शिशु के (ख) प्रेमिका के

(ग) मित्र के (घ) इनमें से कोई नहीं

(2) पद्यांश के अनुसार, प्रेमिका के कपोल कैसे थे?

(क) पीले (ख) लाल

(ग) श्वेत (घ) गंदे

(3) कवि ने अपनी प्रेमिका की स्मृति को क्या कहा है?

(क) कथा (ख) व्यथा

(ग) जीवन-पथ का संबल (घ) पूँजी

(4) कवि किसकी बड़ी कथाएँ कहने में असमर्थ है?

(क) अपने छोटे-से जीवन की (ख) अपने छोटे-से परिवार की

(ग) अपने देश क (घ) अपने समाज की

(5) कवि की मौन व्यथा किस स्थिति में है?

(क) जागी हुई है (ख) व्यग्र है

(ग) थकी सोई है (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इनका जन्म बंगाल के महिषादल में सन 1899 में हुआ था। ये मूलतः गढ़ाकोला, जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। इनकी औपचारिक शिक्षा नवीं तक महिषादल में ही हुई। इन्होने स्वंय अध्ययन कर संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा ने इनपर गहरा प्रभाव डाला। सन 1961 में इनकी मृत्यु हुई।

प्रमुख कार्य

काव्य-रचनाएं - अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते।

उत्साह

प्रस्तुत कविता एक आह्वाहन गीत है। इसमें कवि बादल से घनघोर गर्जन के साथ बरसने की अपील कर रहे हैं। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों जैसे हैं। कवि बादल से बरसकर सबकी प्यास बुझाने और गरज कर सुखी बनाने का आग्रह कर रहे हैं। कवि बादल में नवजीवन प्रदान करने वाला बारिश तथा सबकुछ तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात दोनों देखते हैं इसलिए वे बादल से अनुरोध करते हैं कि वह अपने कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपाकर सब में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे।

आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है की वे बेचैन से हैं तभी उन्हें याद आता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए आकाश की अनजान दिशा से आकर काले-काले बादल पूरी तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए बेचैन हो रहे हैं। कवि आग्रह करते हैं की बादल खूब गरजे और
बरसे और सारे धरती को तृप्त करे।

अट नहीं रही

प्रस्तुत कविता में कवि ने फागुन का मानवीकरण चित्र प्रस्तुत किया है। फागुन यानी फ़रवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतू का आगमन होता है। इस ऋतू में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नए पत्ते आते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है और उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो फागुन के सांस लेने पर सब जगह सुगंध फैल गयी हो। वे चाहकर भी अपनी आँखे इस प्राकृतिक सुंदरता से हटा नही सकते।

इस मौसम में बाग़-बगीचों, वन-उपवनों के सभी पेड़-पौधे नए-नए पत्तों से लद गए हैं, कहीं यहीं लाल रंग के हैं तो कहीं हरे और डालियाँ अनगिनत फूलों से लद गए हैं जिससे कवि को ऐसा लग रहा है जैसे प्रकृति देवी ने अपने गले रंग बिरंगे और सुगन्धित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओऱ-छोर नजर नही आ रहा है इसलिए कवि कहते हैं की फागुन की सुंदरता अट नही रही है।

कठिन शब्दों के अर्थ

- धराधर - बादल
- उन्मन - अनमनापन
- निदाघ - गर्मी
- सकल - सब
- आभा - चमक
- वज्र - कठोर
- अनंत - जिसका अंत ना हो
- शीतल - ठंडा
- छबि - सौंदर्य
- उर - हृदय

• विकल - बैचैन
• अट - समाना
• पाट-पाट - जगह-जगह
• शोभा श्री - सौंदर्य से भरपूर
• पट - समा नही रही

लघु-उत्तरीय प्रश्न

1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर

कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है; क्योंकि 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

2. कविता का शीर्षक **उत्साह** क्यों रखा गया है?

उत्तर

यह एक आह्वान गीत है। कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है। इसलिए कविता का शीर्षक **उत्साह** रखा गया है।

3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर

कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -

i. जल बरसाने वाली शक्ति है।

ii. बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।

iii. बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। **उत्साह** कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

उत्तर

कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौंदर्य मौजूद है -

1. "घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
2. ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले
3. "विद्युत-छवि उर में"

अट नहीं रही

1. छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है?लिखिए।

उत्तर

कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाया गया है :

कहीं साँस लेते हो,
घर घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर पर कर देते हो।

2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर

फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कही लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुश्बू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?

उत्तर

प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापक सौन्दर्य और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है।पेड़-पौधे नए-नए पत्तों,फल और फूलों से अटे पड़े हैं,हवा सुगन्धित हो उठी है,प्रकृति के कण-कण में सौन्दर्य भर गया है। खेत-खलिहानों, बाग़-बगीचों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों एवं चौक-चौबारों में फ़ागुन का उल्लास सहज ही दिखता है।

4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?

उत्तर

फागुन में सर्वत्र मादकता मादकता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधें नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं- प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण।'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दो पक्ष हुआ करते हैं-अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष अर्थात् भाव पक्ष और शिल्प पक्ष । इस दृष्टि से दोनों कविताएँ सराहय हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयता , प्रवाहमयता , अलंकार योजना और संगीतात्मकता आदि भी विद्यमान है।'निराला' जी की भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्द का प्रयोग भी पठनीय है। अतुकांत शैली में रचित कविताओं में क्राँति का स्वर , मादकता एवम् मोहकता भरी है। भाषा सरल, सहज, सुबोध और प्रवाहमयी है।

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

(1)

बादल, गरजो!
घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित-ललित, कालं घुँघराले,
बाल कल्पना, के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल, गरजो

(1) 'वज्र छिपा' का तात्पर्य है-

(क) बालों के अंदर ही जल प्रलय छिपा है
(ख) बादलों के अन्दर ही चन्द्रमा की चाँदनी छिपी है
(ग) बादलों के अन्दर ही बिजली की कड़क छिपी हुई है
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(2) कवि ने बादलों को किस-किस नाम से पुकारा है?

(क) बाल-कल्पना के से पाले
(ख) नवजीवन वाले, धाराधार
(ग) ललित-ललित काले घुँघराले
(घ) ये सभी

(3) बादल का 'प्रतीकात्मक' रूप क्या है ?

(क) पौरुष और वीरता भाव का (ख) उत्साह और शौर्य भाव का

(ग) क्रान्ति और पौरुष भाव का (घ) इनमें से कोई नहीं

(4) 'धाराधर' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(क) वर्षा के लिए (ख) बिजली के लिए

(ग) बादल के लिए (घ) नाद के लिए

(5) कवि बादलों का आह्वान क्यों कर रहा है?

(क) बादल पीड़ित तथा प्यासे जन की आकांक्षाओं को पूरा करने वाले हैं।

(ख) बादल नई कल्पना और क्रान्ति की चेतना को संभव करने वाला भी है।

(ग) बादल नवजीवन प्रदान करने वाले हैं।

(घ) उपर्युक्त सभी

(2)

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो,
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल,
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में,
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री,
पट नहीं रही है।

(1) पद्यांश के आधार पर बताइए कि किस ऋतु में प्रकृति की सुंदरता अत्यधिक बढ़ जाती है?

(क) फागुन (वसंत ऋतु में) (ख) ग्रीष्म ऋतु में

(ग) शीत ऋतु में (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(2) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने किसका वर्णन किया है?

(क) प्राकृतिक सौंदर्य का (ख) वर्षा ऋतु का

(ग) भौगोलिक सौंदर्य का (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(3) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ का नाम तथा इसके कवि का नाम बताइए।

(क) 'उत्साह' तथा 'अट नहीं रही' (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) (ख) पद (सूरदास)

(ग) कन्यादान (ऋतुराज) (घ) यह दंतुरित मुसकान (नागार्जुन)

(4) फागुन के आगमन से पेड़ों की डालियों का स्वरूप किस तरह का हो गया है?

(क) डालियों से पत्ते झड़ गए (ख) डालियाँ पत्तों से भर गईं

(ग) डालियाँ सूख गईं (घ) उपर्युक्त से कोई नहीं

(5) 'पट नहीं रही है' पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?

(क) सब जगह सुंदरता फैली हुई है
(ख) रंग-बिरंगे फूल-पत्ते छा गए हैं
(ग) (क) और (ख) दोनों
(घ) पतझड़ आ गया है

(3)

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

(1) पद्यांश में किसकी मादकता का वर्णन किया गया है?

(क) वर्षा ऋतु की
(ख) फागुन की
(ग) पुष्पों की
(घ) ग्रीष्म की

(2) 'अट नहीं रही है' का अर्थ है-

(क) दिख नहीं रही है
(ख) चल नहीं रही है
(ग) समा नहीं रही है
(घ) पकड़ी नहीं जा रही है

(3) पत्तों से लदी डाल की क्या विशेषता है?

(क) वह झुकी हुई है
(ख) वह कहीं हरी, कहीं लाल है
(ग) वह हवा से हिल रही है
(घ) वह सूख गई है

(4) वृक्षों के गले में पड़ी माला की क्या विशेषता है?

(क) वह पत्तों की बनी है
(ख) उसके फूल मुरझा गए हैं
(ग) वह मंदसुगंध वाले फूलों की है
(घ) वह नीले रंग की है

(5) 'पर-पर कर देने' का अर्थ है-

(क) उत्साह से भर देना
(ख) दुःखी कर देना
(ग) पंख लगा देना
(घ) पत्ता-पत्ता बिखेर देना

नागार्जुन

नागार्जुन का जीवन परिचय -नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले में स्थित सतलाखा गांव में 1911 में हुआ।
उनकी प्रारंभिक शिक्षा -उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय संस्कृत पाठशाला में हुई।
रुचि -साहित्य और राजनीति में उनकी रुचि थी।
नागार्जुन 1936 में श्रीलंका गए और वहां उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।
नागार्जुन को हिंदी और मैथिली भाषाओं का ज्ञान था।
पत्रिका -1935 में दीपक हिंदी मासिक पत्रिका और 1942- 43 में विश्व बंधु साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया।
रचना, -युग धारा ,प्यासी पथराई आंखें ,सतरंगी पंखों वाली, तुमने कहा था पुरानी जूतियां का कोरस , रत्नगर्भा आदि आदि
वे प्रतिवादी धारा के कवि थे।

यह दंतुरित मुस्कान

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात ...
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल?
तुम मुझे पाए पहचान ?
देखते ही रहोगे अनिमेष!
थक गए हो?
आंख लूं मैं फेर?
क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार?
यदि तुम्हारी मां न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान

शब्द -संपदा :-

दंतुरित - निकलते हुए दांतो वाली
जलजात - कमल का फूल
परस - स्पर्श
पाषाण,- पत्थर
धूलि धूसर -मिट्टी से सना हुआ
अनिमेष -लगातार
मधपर्क - दही घी शहद से बना मिश्रण

भावार्थ :-

बच्चों की दंतुरित मुस्कान को देखकर कवि का मन अत्यंत प्रसन्न हो उठता है। प्रवास पर रहने के कारण वह शिशु को पहली बार देखा है तो उसकी दंतुरित मुस्कान पर मुग्ध हो जाता है। इस कविता के माध्यम से कई एक बड़े व्यक्ति और बच्चे

की मुस्कान में अंतर को दर्शाता है। बच्चों की मुस्कान सरल निश्चल भोली और स्वार्थ रहित होती है इसके विपरीत एक बड़े व्यक्ति की मुस्कान में स्वार्थ परता तथा बनावटी पान होता है।

कवि ने बच्चों की मुस्कान की तुलना कमल से की है और ऐसा लगता है जैसे पत्थर पिघलाकर जलधारा के रूप में बह रहे हैं। बांस या बबूल से शेफालिका के फूल झरने लगे हैं। प्रभात से काफी दिनों के बाद लौटकर आए कवि की मुलाकात जब शिशु से होती है तो वह शिशु की मुस्कान देखकर मुग्ध हो जाता है। शिजुका स्पर्श पाते ही कवि का ह्रदय वात्सल्य भाव से भर उठा।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1 कवि ने शिशु और उसकी मां को धन्य क्यों कहा है? यह दंतुरित मुस्कान कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर - कवि ने शिशु और उसकी मां को धन्य इसलिए कहा है, क्योंकि यह दोनों कवि के जीवन में सुखद क्षण देने वाले हैं। कवि के जीवन में शिशु के नए-नए दांतों वाली भोली सरल एवं निश्चल मुस्कान एक नई ऊर्जा एवं प्राणों में संचार करने वाली है

प्रश्न- 2 बच्चे की मुस्कान और एक बड़े व्यक्ति की मुस्कान में क्या अंतर है?

उत्तर - बच्चों की मुस्कान सरल निश्चल भोली और निष्काम होती है। उसमें कोई स्वार्थ नहीं होता है वह सहज स्वाभाविक होती है। जबकि बड़ों की मुस्कान किसी उद्देश्य को पूरा करने और बड़ों की मुस्कान उनके मन की स्वाभाविक गति न होकर लोक व्यवहार का अंग होती है।

प्रश्न - 3 कवि ने बच्चों की मुस्कान के सौंदर्य को किन-किन बिंबो के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर- कवि ने बच्चों की मुस्कान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबो के माध्यम से व्यक्त किया है।

*बच्चों की मुस्कान से मृतक में भी जान आ जाती है।

*कमल के फूल से की है

*चट्टाने पिघल कर जलधारा बन गई से की है।

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कवि स्वयं को चिर प्रवासी क्यों कहता है?

(क) बालक से दूर रहने के कारण। (ख) हमेशा घर से बाहर रहने के कारण।

(ग) लंबे समय से घर से बाहर रहने के कारण। (घ) घर छोड़ देने के कारण।

प्रश्न-2 'यह है दंतुरित मुस्कान' कविता के आधार पर बताइए पाषाण क्यों जल बन जाता है?

(क) बच्चों की मनमोहक मुस्कान देखकर। (ख) मुस्कुराते बच्चे का स्पर्श पाकर।

(ग) झोपड़ी में कमल के फूल देखकर। (घ) प्रकृति के सौंदर्य को देखकर।

प्रश्न- 3 'यह दंतुरित मुस्कान ' कविता के आधार पर मधुपर्क क्या है?

(क) मां का प्यार। (ख) कवि का प्यार।

(ग) पिता का प्यार। (घ) बच्चे का प्यार।

प्रश्न-4 कवि ने बच्चों के धूल से सने शरीर की तुलना किसके साथ की है?

(क) कमल के पत्तों से। (ख) कमल के खिले फूलों से।

(ग) कठिन पाषाण से। (घ) बांस तथा बबूल से।

प्रश्न-5 'यह दंतुरित मुस्कान' कविता में कवि बच्चे की मां का आभार व्यक्त करना क्यों चाहता है?

(क) उनके कारण ही कवि उसे बच्चों के सौंदर्य का दर्शन कर पाया है।

(ख) कवि बच्चे को गोद में ले पाया।

(ग) कवि बच्चों से दूर जा पाया।

(घ) कवि बच्चे पर कविता लिख पाया।

(1)

तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात..........
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शैफालिक के फूल
बाँस था कि बबूल?
तुम-मुझे पाए नहीं पहचान?
देखते ही रहोगे अनिमेष।

(1) शिशु का धूल-धूसरित शरीर कवि को कैसा लगता है?

(क) कमल के समान (ख) तारों के समान
(ग) रूई के समान (घ) गेंद के समान

(2) किसे देखकर कठोर पाषाण जल में परिवर्तित होने की कल्पना की गई है?

(क) तेज वर्षा (ख) शिशु की दंतुरित मुस्कान
(ग) माँ का करुण रूंदन (घ) मनवांछित उपहार

(3) शिशु एकटक कवि की तरफ देख रहा है क्योंकि-

(क) कवि हँस रहा है। (ख) कवि नाम रहा है।
(ग) कवि को पहचानना चाह रहा है। (घ) ये सभी

(4) 'बच्चे की मुस्कान मुर्दे में भी जान डाल देती है' इससे तात्पर्य है-

(क) मुर्दा व्यक्ति जीवित हो जाता है। (ख) निराश व्यक्ति में आशा का संचार हो जाता है।
(ग) कोई व्यक्ति मरता नहीं है। (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(5) 'कठिन पाषाण' का क्या अर्थ है?

(क) भारी पत्थर (ख) बड़ी चट्टान
(ग) कठोर हृदय वाला (घ) ये सभी

(2)

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही है मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होतीं जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

(1) कवि ने किसे धन्य कहा है?

(क) स्वयं को (ख) बच्चे को
(ग) बच्चे की माँ को (घ) बच्चे और माँ दोनों को

(2) कवि ने अपने लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है?

(क) चिर प्रवासी (ख) इतर
(ग) अन्य (घ) ये सभी

(3) माँ बच्चे को क्या कराती रहीं?

(क) भोज | (ख) स्नान

(ग) मधुपर्क | (घ) शयन

(4) 'मधुपर्क' क्या है?

(क) वन में पाया जाने वाला एक मधुर फल | (ख) दूध, दही, घी, शहद तथा जल के मिश्रण से बना पदार्थ

(ग) दूध और चावल से बनाई मीठी खीर | (घ) शहद से बना एक शीतल पेय

(5) 'आँखें चार होना' का अर्थ है-

(क) चार आँखें हो जाना | (ख) आँखें बंद हो जाना

(ग) आँखें मिलना | (घ) आँखें फेर लेना

फ़सल

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू:
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा:
एक कि नहीं,
दो कि नहीं,
हजार हजार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म:

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी काली संदली मिट्टी का गुणधर्म है
रूपांतरहै सूरज कीकिरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की धड़कन का।

शब्द- संपदा :-

कोटि कोटि - करोड़
स्पर्श - छूना
रूपांतर - बदला हुआ
थिरकन - हिलना

भावार्थ :-

फसल कविता के माध्यम से हमें कवि ने यह बताने का प्रयास किया है की फसल क्या है? किन-किन तत्वों के योगदान से उसका यह अस्तित्व हमारे सामने आता है ।इस कविता से यह भी ज्ञात होता है, कि एक और प्रकृति के अनेक अनेक तत्व फसल के लिए रूपांतरित होते हैं तो मानव श्रम भी इसके लिए आवश्यक है।

फसल उगाने में प्रकृति के विभिन्न तत्व जैसे हवा पानी मिट्टी अपना योगदान देते हैं ,परंतु किसानों के योगदान को बुलाया नहीं जा सकता किसान के अथक प्रयास के बिना फसल तैयार नहीं हो सकती। इससे स्पष्ट है कि किसानों का योगदान सर्वाधिक है।

फसल कविता के माध्यम से कई प्राकृतिक तत्वों के साथ-साथ मानव श्रम कोगरिमामय स्थान प्रदान करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न -1 ' फसल ' कविता के माध्यम से कई क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- फसल कविता के माध्यम से कई यह संदेश देना चाहता है कि मानव और प्रकृति के सहयोग से ही सर्जन संभव है फसल का नाम सुनते ही लैलाती फसल और श्रमिक आश्रम आंखों के समक्ष घूमने लगता।

प्रश्न - 2 भाव स्पष्ट कीजिए -

रूपांतरण है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

उत्तर- कभी कहना चाहता है कि यह फैसले और कुछ नहीं सूरज की करने का बदला हुआ रूप है। फसलों की हरियाली सूरज की करने के प्रभाव के कारण ही आती है ।फसलों को बढ़ाने में हवा की थिरकन का भी भरपूर योगदान है।

प्रश्न - 3 कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार फसल पानी मिट्टी धुप हवा और पानी का जादू समाया हुआ है। सूरज और हवा का प्रभाव है ।इन सब के साथ किसानों और मजदूरों का श्रम सम्मिलित है

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 फसल को उगाने में कितने लोगों ने योगदान दिया है?

(क) किसानों ने। (ख) ग्रामीणों ने।
(ग) लाखों करोड़ों किसानों ने। (घ) शहरी लोगों ने।

प्रश्न-2 ' फसल ' कविता के आधार पर नदियों के पानी का जादू किसे कहा गया है?

(क) किसान को। (ख) खेती को।
(ग) फसल को। (घ) मिट्टी को।

प्रश्न -3 'रूपांतरण है सूरज की किरणों ' का पंक्ति का फसल कविता के आधार पर आज से स्पष्ट कीजिए।

(क) सूरज की किरणें रूप बदल देती हैं। (ख) सूरज की किरणें फसलों में बदल जाती हैं।
(ग) किरणे फसल पकती हैं। (घ) फसल किरणों को बदल देती है।

प्रश्न-4 फसलों के सर्जन के लिए किसकी आवश्यकता है?

(क) मानव व प्रकृति के सहयोग की आवश्यकता है। (ख) जानवरों की आवश्यकता है।
(ग) किसने की कोई आवश्यकता नहीं है। (घ) केवल सरकार की आवश्यकता है।

प्रश्न-5 हवा के स्पर्श से फसलों में क्या परिवर्तन होता है?

(क) पत्तियां झड़ने लगते हैं। (ख) फूल गिरने लगते हैं।
(ग) फसल फलने फूलने लगती है। (घ) फल पकने लगते हैं।

एक के नहीं, दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू:
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमाः
एक की नहीं दो की नहीं,
हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म है

(1) फसल के उगने में किसका योगदान रहता है?

(क) अनेक व्यक्तियों के शारीरिक परिश्रम का (ख) नदियों के जल का
(ग) खेतों की मिट्टी के गुणधर्म का (घ) उपर्युक्त सभी

(2) 'कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा' से क्या अभिप्राय है?

(क) किसानों के शारीरिक परिश्रम द्वारा फसल निर्माण से (ख) हाथों द्वारा बीजों को मिट्टी में रोपित करने से
(ग) मशीनों के स्थान पर मानव श्रम को ही महत्त्व देने से (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(3) 'एक के नहीं, दो के नहीं' पंक्ति की आवृत्ति क्यों की गई है?

(क) सामूहिकता के भाव को प्रकट करने के लिए (ख) गणना करने के लिए
(ग) आलंकारिकता के लिए (घ) आवृत्ति भाव उत्पन्न करने के लिए

(4) 'फसल' कविता में कवि ने किस विषय में बताया है?

(क) फसल उत्पादन में मिट्टी की गुणवत्ता के सहयोग के विषय में
(ख) प्रकृति और मानव के परस्पर सहयोग के विषय में
(ग) किसानों के परिश्रम के विषय में
(घ) फसल उत्पादन में आवश्यक कारक तत्त्वों के विषय में

(5) फसल की पैदावार किसके जादू के कारण होती है?

(क) काली-संदली मिट्टी के मिश्रण द्वारा (ख) रासायनिक खाद द्वारा
(ग) नदियों के पानी द्वारा (घ) चाँद की किरणों द्वारा

मंगलेश डबराल

कवि परिचय -मंगलेश डबराल का जन्म 1948 में टिहरी गढ़वाल उत्तराखंड में काफल पानी नामक गांव में हुआ।

*उनकी शिक्षा देहरादून में हुई।

*इन्होंने लेखन और संपादन का कार्य किया।

*पत्रिका -हिंदी पेट्रियेट,प्रतिपक्ष ,पूर्वगृह ,अमृत प्रभात ,जनसत्ता।

*रचनाएं -पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता , हम जो देखते हैं।

*सम्मान -साहित्य अकादमी पुरस्कार, पहल सम्मान।

*काव्यगत विशेषताएं -वे सामान्य व्यवस्था विरोध और वंचितों के लिए आवाज बंद करते हैं।

संगतकार

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर कांपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थाई को संभाले रहता है
जैसी समीक्षा हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था
तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढांढस बंधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यूं ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह की फिर से गया जा सकता है

गया जा चुका राज
और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने सवार को ऊंचा न उठाने की कोशिश है
उसेविफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझ जाना चाहिए

शब्द संपदा :-

प्राचीन -पुराना
अंतरा -गति का चरण
अनहद - असीमित
नौसिखिया -नया- नया सीखने वाला
तार सप्तक -सरगम के ऊंचे स्वर
ढांढस बंधाना सांत्वना देना
हिचक -संकोच

भावार्थ :-

संगतकार कविता के माध्यम से कवि उसतरह के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है जो महान और सफल व्यक्तियों की सफलता में परदे के पीछे रहकर अपना योगदान देते हैं। ये लोग महत्वपूर्ण योगदान तो देते हैं, परंतु लोगों की निगाहों में नहीं आ पाते हैं और सफलता के सिरे से वंचित रह जाते हैं ।मुख्य गायक की सफलता में साथी गायको वाद्य कलाकारों ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था देखने वाले कलाकारों या कर्मियों का योगदान रहता है, परंतु उन्हें इनका श्रेय नहीं मिल पाता है

संगतकार विभिन्न रूपों में मुख्य गायक कार्यक्रमों की मदद करते हैं जैसे भी मुख्य गायक की भारी आवाज में अपनी सुंदर और कमजोर आवाज की गूंज मिलकर गायन को प्रभावपूर्ण बना देते हैं और कभी अपनी आवाज को मुख्य गायक की आवाज से ऊपर नहीं जाने देते।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1 संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर- संगतकार के माध्यम से कवि किसी कला में लगे सहायक कर्मचारी और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। वे सहायक कलाकार स्वयं को महत्व न देकर मुख्य कलाकारके महत्व को बढ़ाने में अपनी शक्ति लगा देते हैं।

प्रश्न-2 संगतकार की हिचकती आवाज उसकीविफलता क्यों नहीं है?

उत्तर- संगतकार की हिचकती आवाज उसकीविफलता नहीं है ,क्योंकि संगतकार अपना स्वर जानबूझकर दबा हुआ रखता है । वह नहीं चाहता है, कि उसका प्रभाव मुख्य गायक से अधिक हो इसलिए उसका स्वर पराजय का प्रतीक नहीं अपितु सहयोग और समर्पण का प्रतीक है।

प्रश्न-3 संगतकार कविता में संगतकार को त्याग की मूर्ति कैसे कहा जा सकता है?

उत्तर- संगतकार मुख्य सहायक मुख्य गायक का सहायक बनकर आता है। वह मुख्य गायक के स्वर प्रखरता और सफलता के लिए अपने सवार को खापा देता है। परंतु उसका श्रेय मुख्य गायक को मिलता है। इस प्रकार मुख्य गायक को प्रभावी बनाने के लिए संगतकार स्वयं को कम ही रखता है। इसीलिए उसे त्याग की मूर्ति कहा जा सकता है।

प्रश्न-4 संगतकार प्रतिभावान होते हुए भी शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुंच पाते होंगे?

उत्तर- संगतकार प्रतिभावान होते हुए भी शीर्ष स्थान पर नहीं पहुंच पाते हैं, क्योंकि उन्हें स्वतंत्र रूप से अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर बहुत कम प्राप्त होता है। और कई बार संगतकार कलाकार होते हैं परंतु साधनहीनता और उनकी आर्थिक स्थिति भी उन्हें शीर्ष स्थान पर पहुंचने से वंचित कर देती है

प्रश्न-5 सफलता के चरम शिखर पर पहुंचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

उत्तर- जब कोई व्यक्ति सफलता के चरम शिखर पर पहुंचकर अचानक लड़खड़ाता है तो उसके सहयोगी ही उसे उत्साह शाबाशी और साथ देकर संभालते हैं। और उसके सहयोगी उसकी सफलता के लिए आवश्यक साधनों को एकत्रित करने का भरसक प्रयास करते हैं।

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 संगतकार कविता में वह कौन है?

(क) गायक का भाई। (ख) गायक का शिष्य।

(ग) संगतकार। (घ) गायक का रिश्तेदार।

प्रश्न-2 संगतकार प्राचीन काल से क्या करता आया है?

(क) मुख्य गायक का निर्देशन। (ख) मुख्य गायक का सहयोग।

(ग) मुख्य गायक का प्रभाव -वर्धन। (घ) मुख्य गायक का विरोध

प्रश्न-3 मुख्य गायक कैसे भटक जाता है?

(क) गाते - गाते मुख्य लय भूल जाता है। (ख) गाते - गाते कहीं चला जाता है।

(ग) गाते - गाते सोचने लगता है। (घ) गाते - गाते रास्ता भूल जाता है।

प्रश्न-4 'संगतकार' कविता के अनुसार अनाहत का क्या आशय है?

(क) अति (ख) ब्रह्म ज्ञान

(ग) ईश्वर की समाधि (घ) लय की मर्यादा

प्रश्न-5 संगतकार अपनी आवाज को ऊंचा क्यों नहीं उठाता?

(क) मुख्य गायक का महत्व ऊंचा रखने की इच्छा से। (ख) गायकी की शर्त के कारण।

(ग) मुख्य गायक का सहायक होने के कारण। (घ) लोगों के कारण।

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाले दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीनकाल से

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थाई को सँभाले रहता है।

(1) मुख्य गायक की आवाज कैसी होती है?

(क) चट्टान जैसी भारी | (ख) पानी जैसी पतली

(ग) फूल जैसी कोमल | (घ) रूई जैसी मुलायम

(2) कवि ने संगतकार को मुख्य गायक का माना है-

(क) छोटा भाई | (ख) शिष्य

(ग) दूर का रिश्तेदार | (घ) ये सभी

(3) मुख्य गायक सरगम को लाँघकर कहाँ चला जाता है?

(क) बगीची में | (ख) अनहद में

(ग) घर में | (घ) यादों में

(4) मुख्य गायक की गरज में अपनी गूँज कौन मिलाता है?

(क) कवि | (ख) श्रोता

(ग) संगतकार | (घ) भाई

(5) संगतकार की आवाज की विशेषता है-

(क) सुंदर | (ख) कमजोर

(ग) काँपती | (घ) ये सभी

*****

पाठ्य - पुस्तक
(क्षितिज भाग-2)

गद्य खंड

स्वयं प्रकाश - नेताजी का चश्मा

स्वयं प्रकाश

इनका जन्म सन 1947 में इंदौर (मध्य प्रदेश) में हुआ। मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढाई कर एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी करने वाले स्वंय प्रकाश का बचपन और नौकरी का बड़ा हिस्सा राजस्थान में बिता। फिलहाल वे स्वैच्छिक सेवानिवृत के बाद भोपाल में रहते हैं और वसुधा सम्पादन से जुड़े हैं।

प्रमुख कार्य

कहानी संग्रह - सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी, संधान।
उपन्यास - बीच में विनय और ईंधन।

पाठ का सारांश

हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम से एक छोटे कस्बे से गुजरना पड़ता था। उस कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन सिनेमा घर तथा एक नगरपालिका थी। नगरपालिका थी तो कुछ ना कुछ करती रहती थी, कभी सड़के पक्की करवाने का काम तो कभी शौचालय तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। एक बार नगरपालिका के एक उत्साही अधिकारी ने मुख्य बाज़ार के चैराहे पर सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। चूँकि बजट ज्यादा नही था इसलिए मूर्ति बनाने का काम कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के शिक्षक को सौंपा गया। मूर्ति सुन्दर बनी थी बस एक चीज़ की कमी थी, नेताजी की आँख पर चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया। जब हालदार साहब आये तो उन्होंने सोचा वाह भई! यह आईडिया ठीक है। मूर्ति पत्थर की पर चश्मा रियल। दूसरी बार जब हालदार साहब आये तो उन्हें मूर्ति पर तार का फ्रेम वाले गोल चश्मा लगा था। तीसरी बार फिर उन्होंने नया चश्मा पाया। इस बार वे पानवाले से पूछ बैठे कि नेताजी का चश्मा हरदम बदल कैसे जाता है। पानवाले ने बताया की यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है। हालदार साहब को समझते देर न लगी की बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टेन को ख़राब लगती होगी इसलिए अपने उपलब्ध फ्रेम में से एक को वह नेताजी के मूर्ति पर फिट कर देता होगा। जब कोई ग्राहक वैसे ही फ्रेम की मांग करता जैसा मूर्ति पर लगा है तो वह उसे मूर्ति से उतारकर ग्राहक को दे देता और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता चूँकि मूर्ति बनाने वाला मास्टर चश्मा भूल गया।

हालदार साहब ने पानवाले जानना चाहा कि कैप्टेन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिन्द फ़ौज का कोई भूतपूर्व सिपाही? पानवाले बोला कि वह लंगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा, वह पागल है इसलिए ऐसा करता है। हालदार साहब को एक देशभक्त का मजाक बनते देखना अच्छा नही लगा। कैप्टेन को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ चूँकि वह एक बूढ़ा मरियल-लंगड़ा सा आदमी था जिसके सिर पर गांधी टोपी तथा चश्मा था, उसके एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे में एक बांस में टंगे ढेरों चश्मे थे। वह उसका वास्तविक नाम जानना चाहते थे परन्तु पानवाले ने इससे ज्यादा बताने से मना कर दिया।

दो साल के भीतर हालदार साहब ने नेताजी की मूर्ति पर कई चश्मे लगते हुए देखे। एक बार जब हालदार साहब कस्बे से गुजरे तो मूर्ति पर कोई चश्मा नही था। पूछने पर पता चला की कैप्टेन मर गया, उन्हें बहुत दुःख हुआ। पंद्रह दिन बाद कस्बे से गुजरे तो सोचा की वहाँ नही रुकेंगे, पान भी नही खायेंगे, मूर्ति की ओर देखेंगे भी नहीं। परन्तु आदत से मजबूर हालदार साहब की नजर चौराहे पर आते ही आँखे मूर्ति की ओर उठ गयीं। वे जीप से उतरे और मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना हुआ छोटा सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब की आँखे नम हो गयीं।

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मूर्ति संगमरमर की थी ।टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊंची। जिसे कहते हैं, बस्ट।और सुंदर थी ।नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछकुछ- मासूम और कमसिन। फौजी वर्दी में।मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो...' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह एक सफल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज की कसर थी,जो देखते ही खटकती थी ।नेताजी की आंखों पर चश्मा नहीं था।यानी चश्मा तो था,लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुजरे और चौराहे पान खाने रुके,तभी उन्होंने इस लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुक भरी मुस्कान फैल गई। वाह भई ! यह आइडिया भी ठीक है।मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल।

(i) नेताजी का पूरा नाम क्या है?

(क(नेताजी सुमन बोस

(ख(नेताजी सुभाषचंद्र बोस

(ग(नेताजी चंद्रशेखर बोस

(घ(नेताजी शेखरचंद्र बोस

(ii) मूर्ति को देखते ही क्या याद आता था?

(क(नेताजी का चश्मा

(ख(मूर्ति की सुंदरता

(ग(दिल्ली चलो, तुम मुझे खून दो... वगैरह।

(घ(टोपी की नोक

(iii) किस दृष्टि से मूर्ति लगाने का प्रयास सफल और सराहनीय था?

(क(मूर्ति बहुत सुंदर और सचमुच की लगती थी।

(ख(मूर्ति को देखकर नेताजी की याद उमड़ आती थी।

(ग(मूर्ति कस्बे के लोगों के मन में देशभक्ति का भाव उत्पन्न करती थी।

(घ(उपर्युक्त सभी

(iv) मूर्ति में क्या कमी रह गई थी जो देखते ही खटकती थी?

(क(मूर्ति का रंग अच्छा नहीं था।

(ख(संगमरमर की मूर्ति को चश्मा सचमुच का पहनाया हुआ था।

(ग(मूर्ति बहुत ऊंचाई पर लगाई गई थी।

(घ(मूर्ति बहुत बड़ी बनाई गई थी।

(V) हालदार साहब के चेहरे पर एक कौतुक भरी मुस्कान क्यों फैल गई?

(क(पान खाकर

(ख(कस्बे में जाकर

(ग(मूर्ति पर रियल चश्मा देखकर

(घ(संगमरमर देखकर

उत्तर (i) ख (ii) ग (iii) घ (iv) ख (v) ग

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गये प्रश्नो के उत्तर दीजिए।

इस दृष्टि से यह सफ़ल और सराहनीय प्रयास था। केवल एक चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था। एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दियागया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुस्कान फैल गई।

(i) नेताजी का चश्मा पाठ के लेखक कौन है।

(क(प्रेमचंद

(ख) जयशंकर

(ग) स्वयं प्रकाश

(घ) मन्नू भंडारी

(ii) कस्बे मे किसकी मूर्ति स्थापित करायी गयी थी।

(क(नेताजी सुभाषचन्द्र

(ख) भगतसिंह

(ग(सरदार पटेल

(घ) महात्मा गांधी

(iii) मूर्ति किस धातु की बनी थी।

(क(पीतल की

(ख) संगमरमर की

(ग) लोहे की

(घ) तांबे की

(iv) हालदार साहब कस्बे मे क्यो रुकते थे ?

(क(मूर्ति को देखने

(ख) पान खाने

(ग(कैप्टन से मिलने

(घ) इनमे से कोई नही

(V) मूर्ति पर रियल चश्मा देखकर हवलदार साहब की क्या प्रतिक्रिया हुई।

(क(वे दुखी हो गये

(ख) ठहाका मारकर हंसने लगे

(ग(उनके चेहरे पर कौतुक भरी मुस्कुराहट फैल गई

(घ(कोई प्रतिक्रिया नही दी

उत्तर

(i) ग (ii) क (iii) ख (iv) क (v) ग

लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के 25 से 30 शब्द सीमा वाले उत्तर दीजिए-:

1. फौज में ना होते हुए भी चशमेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?

उत्तर-सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हूई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था| वह नेताजी की मूर्ती को बार-बार चश्मा पहना कर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके ह्रदय में किसी भी फ़ौजी से कम नहीं थी।

2. आशय स्पष्ट कीजिए -

क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ न्योछावर करने वालों पर भी हँसती है और अपने स्वार्थ के मौके तलाशती है?

उत्तर-हालदार साहब बार-बार सोचते रहे कि उस कौम का भविष्य कैसा होगा जो उन लोगों की हँसी उड़ाती है जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ त्याग कर देते हैं। साथ ही वह ऐसे अवसर तलाशती रहती है, जिसमें उसकी स्वार्थ की पूर्ती हो सके, चाहे उसके लिए उन्हें अपनी नैतिकता को भी तिलांजलि क्यों न देनी पड़े। अर्थात आज हमारे समाज में स्वार्थ पूर्ती के लिए अपना ईमान तक बेच दिया जाता है। यहाँ देशभक्ति को मुर्खता समझा जाता है।

3. पानवाले का परिचय दीजिए।

उत्तर-सड़क के चौराहे के किनारे एक पान की दुकान में एक पान वाला बैठा है। वह काला तथा मोटा है, उसके सिर पर गिने-चुने बाल ही बचे हैं। वह एक तरफ़ ग्राहक के लिए पान बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसका मुँह पान से भरा है। पान खाने के कारण उसके होंठ लाल तथा कहीं-कहीं काले पड़ गए हैं। उसने अपने कंधे पर एक कपड़ा रखा हुआ है जिससे रह-रहकर अपना चेहरा साफ़ करता है।

4. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!"
कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर-कैप्टन के बारे में हालदार साहब द्वारा पूछे जाने पर पानवाले ने टिप्पणी की कि वो लंगड़ा फ़ौज में क्या जायगा, वह तो पागल है। पानवाले द्वारा ऐसी टिप्पणी करना उचित नहीं था। कैप्टन शारीरिक रूप से अक्षम था जिसके लिए वह फौज में नहीं जा सकता था। परंतु उसके हृदय में जो अपार देशभक्ति की भावना थी, वह किसी फौजी से कम नहीं थी। कैप्टन अपने कार्यों से जो असीम देशप्रेम प्रकट करता था उसी कारण पानवाला उसे पागल कहता था। ऐसा कहना पानवाले की स्वार्थपरता की भावना को दर्शाता है, जो सर्वथा अनुचित है।
वास्तव में तो पागलपन की हद तक देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना रखनेवाला व्यक्ति श्रद्धा का पात्र है, उपहास का नहीं।

5. जब तक हालदर साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था तो उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की कैसी छवि थी? अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- हालदार साहब ने जब तक कैप्टन को नहीं देखा था तब तक उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की एक भारी-भरकम मज़बूत शरीर वाली रोंबदार छवि रही होगी। उन्हें लगता था फौज में होने के कारण लोग उन्हें कैप्टन कहते हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरीबालगोबिन भगत-

रामवृक्ष बेनीपुरी

इनका जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में सन 1889 में हुआ था। बचपन में ही माता-पिता का निधन हो जाने के कारण , आरम्भिक वर्ष अभावों-कठिनाइयों और संघर्षों में बीते। दसवीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन 1920 में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रीय रूप से जुड़ गए। कई बार जेल भी गए।इनकी मृत्यु सन 1968 में हुई।

प्रमुख कार्य

उपन्यास - पतितों के देश में

कहानी - चिता के फूल

नाटक - अंबपाली

रेखाचित्र - माटी की मूरतें

यात्रा-वृत्तांत - पैरों में पंख बांधकर

संस्मरण - जंजीरें और दीवारें।

कठिन शब्दों के अर्थ

• मँझोला - ना बहुत बड़ा ना बहुत छोटा • कमली जटाजूट - कम्बल • खामखाह - अनावश्यक • रोपनी - धान की रोपाई • कलेवा - सवेरे का जलपान • पुरवाई - पूर्व की ओर से बहने वाली हवा • मेड़ - खेत के किनारे मिटटी के ढेर से बनी उँची-लम्बी, खेत को घेरती आड़ • अधरतिया - आधी रात • झिल्ली - झींगुर • दादुर - मेढक • खँझरी - ढपली के ढंग का किन्तु आकार में उससे छोटा वाद्यंत्र	• निस्तब्धता - सन्नाटा • पोखर - तालाब • टेरना - सुरीला अलापना • आवृत - ढका हुआ • श्रमबिंदु - परिश्रम के कारण आई पसीने की बून्द • संझा - संध्या के समय किया जाने वाला भजन-पूजन • करताल - एक प्रकार का वाद्य • सुभग - सुन्दर • कुश - एक प्रकार की नुकीली घास • बोदा - काम बुद्धि वाला • सम्बल - सहारा

बहु -विकल्पात्मक प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

भादो की वह अंधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मूसलधार वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज,बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किंतु अब झिल्ली की झंकार या दादुरों की टर्र टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल - में डुबो नहीं सकती। उनकी खंजड़ी डिमकगोदी में पियवा" -डिमक बज रही है और वे गा रहे हैं -, चमक उठे सखियां, चिहुंक उठे नाहां "!, पिया तो गोद में ही है,किंतु वह समझती है, वह अकेली है, चमक उठती हैं, चिहुंक उठती है। उसी भरेबादलों वाले भादो - की आधी रात में उनका यहगाना अंधेरे में अकस्मात कौंध उठने वाली बिजली की तरह किस ना चौंका देता ?अरे, अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जग रहा हैतेरी गठरी में लागा चोर -!, मुसाफ़िर जाग ज़रा!

(i) प्रस्तुत अवतरण में किसका वर्णन है?

(क(ग्रीष्म की आधी रात का

(ख(भादो की आधी रात का

(ग(बसंत की आधी रात का

(घ(फागुन की आधी रात का

(ii) भगत जी के गीतों की क्या विशेषता थी?

(क(उनके गीत बच्चों के लिए होते थे।

(ख(सभी उन्हें ध्यान से सुनते थे।

(ग(उनके गीत सभी समझ नहीं पाते थे।

(घ(उनके गीतों में ईश्वर के प्रति आस्था तथा प्रेम होता था।

(iii) 'मुसाफ़िर जाग जरा....' गीत में 'मुसाफ़िर'कौन है?

(क(यात्री

(ख(राही

(ग(सांसारिक मनुष्य

(घ(पर्वतारोही

(iv) 'गोदी में पियवाचिहुंक उठे ना।....' पंक्ति के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहते हैं?

(क(अज्ञानता के कारण मनुष्य परमात्मा को अपनी से दूर समझता है।

(ख(भगत जी के गीत उनके भ्रमो को दूर करता है।

(ग(ईश्वर हर मनुष्य के पास है।

(घ(उपर्युक्त सभी।

(V) भगत जी मुसाफ़िर को क्यों जागना चाहते हैं?

(क(यात्री अपनी यात्रा पूरी कर सके।

(ख(मनुष्य ईश्वर का ध्यान कर सके।

(ग(मनुष्य अपना कार्य पूरा कर सके।

(घ(मनुष्य धन कमा सके।

उत्तर. (i) ख (ii) घ (iii) ग (iv) घ (v) ख

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहां फ़ुरसतकिंतु ! मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है ।हमने सुना,बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आंगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढांक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं ; फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है । और, उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं!

(i) प्रयुक्त गद्यांश में किसकी शादी की बात की जा रही हैं?

(क(भगत जी के बेटे

(ख(भगत जी की

(ग(भगत जी की पुत्री की

(घ(भगत जी के पतोहू की

(ii) भगत जी की पतोहू के संबंध में कौनसा कथन असत्य है-?

(क(पतोहू सुभग और सुशील थी।

(ख(वह एक कुशल प्रबंधिका थी।

(ग(वह एक कुशल नर्तक थी।

(घ (वह एक कुशल गृहिणी थी।

(iii) लेखक क्या देखकर दंग रह गए?

(क(बालगोबिन भगत मृत बेटे के पास बैठकर गीत गा रहे थे।

(ख(भगत जी मृत बेटे के पास बैठकर रो रहे थे।

(ग(भगत जी मृत बेटे के पास बैठकर हंस रहे थे।

(घ(भगत जी सबको चुप करा रहे थे।

(iv) भगत जी ने मृत बेटे को कहां लिटाया था?

(क(मंदिर में

(ख(आंगन में

(ग(बरामदे में

(घ(पूजा घर में

(V) बेटे की मृत्यु पर भगत जी उत्सव क्यों मना रहे थे?

(क(वे अपने बेटे से परेशान थे।

(ख (वे अपने पतोहू से तंग आ चुके थे।

(ग (वे मृत्यु को आत्मा का परमात्मा से मिलन मानते थे।

(घ (उपर्युक्त सभी

उत्तर. (i) घ)ii) ग)iii) क)iv) ख)v) ग

लघु उतरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के 25 से 30 शब्द सीमा वाले उत्तर दीजिए:-

1. गृहस्थ होते हुए भी बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु जाने जाते हैं?

उत्तर

बालगोबिन भगत गृहस्थ थे फिर भी उनकी बहुत सारी विशेषताएं उनको साधु बनती है :-

i. कबीर के आर्दशों पर चलते थे, उन्हीं के गीत गाते थे ।

ii. कभी झूठ नहीं बोलते थे, खरा व्यवहार रखते थे ।

iii. किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से झगड़ा करते थे ।

iv. किसी की चीज़ नहीं छूते थे न ही बिना पूछे व्यवहार में लाते थे ।

v. कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे कबीरपंथी मठ में ले जाते, वहाँ से जो कुछ भी भेंट स्वरुप मिलता था उसे प्रसाद स्वरुप घर ले जाते थे ।

vi. उनमें लालच बिल्कुल भी नहीं था ।

2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाओं को किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर

बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। भगत ने अपने पुत्रवधू से कहा कि यह रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का समय है| विरहिणी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली गई है| उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकती| इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया|

3. बालगोबिन भगत की दिनचर्या से लोगो को इतनी हैरान क्यों होती थी?

उत्तर

बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए बन गई थी क्योंकि वे जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का अत्यंत गहराई से पालन करते हुए उन्हें अपनेआचरण में उतारते थे। वृद्ध होते हुए भी उनकी स्फूर्ति में कोई कमी नहीं थी। सर्दी के मौसम में भी, भरे बादलों वाले भादों की आधी रात में भी वे भोर में सबसे पहले उठकर गाँव से दो मील दूर स्थित गंगा स्नान करने जाते थे, खेतों में अकेले ही खेती करते तथा गीत गाते रहते। विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। एक वृद्ध में अपने कार्य के प्रति इतनी सजगता को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

4. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं ? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर

आषाढ़ की रिमझिम फुहारों के बीच खेतों में धान की रोपाई चल रही थी। बादल से घिरे आसमान में, ठंडी हवाओं के चलने के समय अचानक खेतों में से किसी के मीठे स्वर गाते हुए सुनाई देते हैं। बालगोबिन भगत के कंठ से निकला मधुर संगीत वहाँ खेतों में काम कर रहे लोगों के मन में झंकार उत्पन्न करने लगा। स्वर के आरोह के साथ एक-एक शब्द जैसे स्वर्ग की ओर भेजा जा रहा हो। उनकी मधुर वाणी को सुनते ही लोग झूमने लगते हैं, स्त्रियाँ स्वयं को रोक नहीं पाती है तथा अपने आप उनके होंठ काँपकर गुनगुनाते लगते हैं। हलवाहों के पैर गीत के ताल के साथ उठने लगे। रोपाई करने वाले लोगों की उँगलियाँ गीत की स्वरलहरी के अनुरूप एक विशेष क्रम से चलने लगीं बालगोबिन भगत के गाने से संपूर्ण सृष्टि मिठास में खो जाती है।

5. अपने शब्दों में बताएं कि भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर

भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे -

i. कबीर का आडम्बरों से रहित सादा जीवन

ii. सामाजिक कुरीतियों का अत्यंत विरोध करना

iii. कामनायों से रहित कर्मयोग का आचरण

iv. ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम

v. भक्ति से परिपूर्ण मधुर गीतों की रचना

vi. आदर्शों को व्यवहार में उतरना

*****

यशपाल

इनका जन्म सन 1903 में पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा काँगड़ा में ग्रहण करने के बाद लाहौर के नेशनल कॉलेज से बी.ए. किया। वहाँ इनका परिचय भगत सिंह और सुखदेव से हुआ। स्वाधीनता संग्राम की क्रांतिकारी धारा से ज़ुड़ाव के कारण ये जेल भी गए। इनकी मृत्यु सन 1976 में हुई।

प्रमुख कार्य

कहानी संग्रह - ज्ञानदान, तर्क का तूफ़ान, पिंजरे की उड़ान, वा दुलिया, फूलों का कुर्ता।

उपन्यास - झूठा सच, अमिता, दिव्या, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, मेरी तेरी उसकी बात।

लखनवी अंदाज का सार

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया की उसमे भीड़ कम होती है, वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नए कहानी के बारे में सोच सकेंगे। पैसेंजर ट्रेन खुलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत उन्हें डिब्बा खाली नही मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ की नबाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मारे बैठे थे, उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़ जाना उस सज्जन को अच्छा नही लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नही दिखाई। लेखक को लगा शायद नबाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परन्तु अब उन्हें ये बिल्कुल अच्छा नही लग रहा था की कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफर में वक़्त काटने के लिए ख़रीदा होगा परन्तु अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खायें। नबाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परन्तु लगातार कनखियों से लेखक की ओर देख रहे थे।

अचानक ही नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नबाब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छिले, काटे और उसमे जीरा, नमक-मिर्च बुरककर तौलिये पर सजाते हुए पुनः लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाये रखने के लिए दूसरी बार पेट ख़राब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नजर से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उतर आयें हैं। नबाब साहब खीरे की एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए, उसको सूँघा। खीरे की स्वाद का आनंद में उनकी पलकें मूँद गयीं। मुंह में आये पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नबाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार एक-एक करके फाँक को उठाकर सूँघते और फेंकते गए। सारे फाँको को फेकने के बाद उन्होंने तौलिये से हाथ और होठों को पोछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा की खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है तभी नबाब साहब ने डकार ले ली और बोले खीरा होता है लजीज पर पेट पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक ने सोचा की जब खीरे के गंध से पेट भर जाने की डकार आ जाती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के इच्छा मात्र से नई कहानी बन सकती है।

कठिन शब्दों के अर्थ

• मुफ़स्सिल - केंद्र में स्थित नगर के इर्द-गिर्द स्थान	• पनियाती - रसीली
• उतावली - जल्दबाजी	• तलब - इच्छा
• प्रतिकूल - विपरीत	• मेदा - पेट
• सफ़ेदपोश - भद्र व्यक्ति	• सतृष्ण - इच्छा सहित
• अपदार्थ वस्तु - तुच्छ वस्तु	• तसलीम - सम्मान में
• गवारा ना होना - मन के अनुकूल ना होना	• सिर ख़म करना - सिर झुकाना
• लथेड़ लेना - लपेट लेना	• तहजीब - शिष्टता

• एहतियात - सावधानी • करीने से - ढंग से • सुर्खी - लाली • भाव-भंगिमा - मन के विचार को प्रकट करने वाली शारीरिक क्रिया • स्फुरन - फड़कना • प्लावित होना - पानी भर जाना	• नफासत - स्वच्छता • नफीस - बढ़िया • एब्सट्रैक्ट - सूक्ष्म • सकील - आसानी से ना पचने वाला • नामुराद - बेकार चीज़ • ज्ञान चक्षु - ज्ञान रूपी नेत्र

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

1 . निम्नलिखित लिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढकर पूछे गये प्रश्नो के उत्तर दीजिए :-

ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफ़र करता देखे। अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ? हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। 'ओह', नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया, 'आदाब-अर्ज़', जनाब, खीरे का शौक फ़रमाएँगे? नवाब साहब का सहसा भाव-परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया, आप शराफ़त का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया, 'शुक्रिया, किबला शौक फरमाएँ।'

(i) लेखक की कौनसी पुरानी आदत है -
(अ) संगीत (ब) खेलने की
(स) किताब पढने की (द) कल्पना करते रहने की

(ii) नवाब साहब ने कौनसी श्रेणी का टिकट लिया ?
(अ) प्रथम श्रेणी का (ब) द्वितीय श्रेणी का
(स सामान्य श्रेणी का (द) किसी श्रेणी का नही

(iii) नवाब साहब का अचानक क्या करना लेखक को अच्छा नही लगा ?
(अ) बात करना (ब) खीरा खाना
(स) भाव परिवर्तन करना (द) चाकू से खीरा काटना

(iv) लेखक कनखियो से किसकी तरफ देख रहे थे ?
(अ) खिड़की की तरफ (ब) घर की तरफ
(स) नवाब साहब की तरफ (द) सडक की तरफ

(v) नवाब साहब को क्या गवारा नही था ?
(अ) मझले दर्जे मे यात्रा करते (ब) लेखक से बात करना
(स) खीरा खाना (द) इनमे से कोई नहीं

उत्तर - (i) द
(ii) ब
(iii) स
(iv) स
(v) अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक नवाब साहब को कनखियो से क्यों देख रहा था?

2. लेखक को नवाब साहब का पहले बोलना क्यों नही भाया ?

3. नवाब साहब ने अपनी शराफत का गुमान बनाये रखने के लिए क्या किया व क्यों ?

4. नवाब साहब के व्यवहार से उनकी किस मानसिकता का पता चलता है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर-

1 नवाब साहब नें संगति के लिए कोई उत्सुकता नही दिखाई इसलिए नवाब साहब की असुविधा व संकोचके कारण का अनुमान करने के लिए लेखक ने उन्हें कनखियों से देखा ।

2 क्योंकि नवाब साहब का ये व्यवहार दिखावटी था। वास्तव में वो नवाबी व्यवहार के दिखावटीपन से भरे हुए थे

3. नवाब साहब ने अपनी शराफत का गुमान बनाये रखने के लिए लेखक को खीरा का शौक फरमाने का आग्रह किया क्योंकि वे लेखक के सामने अपनी नवाबी शान दिखाना चाहते थें ।

4. नवाब साहब के व्यवहार से उनकी दिखावटी व बनावटी व्यवहारवाली मानसिकता का पता चलता है। जिसमें वे अपनी झ्झूठी शान दिखाने के लिए खीरा काटते है नमक मिर्च से सजाते-सँवारते है तथा उसे सूंघकर फेक देते है।

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए :-

नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ निश्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा । स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गई। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हों यह है खानदानी रईसों का तरीका !नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा-यह है खानदानी तहजीब, नफ़ासत और नज़ाकत !

(i) नवाब साहब ने नमक मिर्च से चमकती खीरे की फाँको को किस प्रकार देखा ?
(अ) लाल आँखो से (ब) सतृष्ण आँखो से
(स) ललचायी आँखो से (द) इनमे से कोई नही

(ii) नवाब साहब ने खीरो का क्या किया ?
(अ) खीरो को खा लिया (ब) सूंघकर वापस अपने पास रख लिया
(स) सूंघकर खिड़की से बाहर फैंक दिया (द) लेखक को भी खीरा खिलाया

(iii) नवाब साहब का इस प्रकार खीरा खाना क्या दर्शाता है
(अ) उनके अहंकारी स्वभाव को (ब) अपनी पुरानी शान के गुमान को प्रदर्शित करना
(स) लेखक पर अपनी रईसी का प्रभाव दिखाना (द) इनमे से कोई नही

(iv) खीरो को खिड़की से बाहर फैंककर नवाब साहब ने क्या किया ?
(अ) थककर लेट गये (ब) लेखक से बाते करने लगे
(स) स्टेशन पर उतर गये (द) उपरोक्त सभी

(v) गद्यांश मे किस पर व्यंग्य किया है?

(अ) लेखक पर (ब) नवाब साहब पर

(स) नवाबो की बनावटी जीवन शैली पर (द) नयी कहानी के लेखको पर

उत्तर- (i) ब

(ii) स

(iii) ब

(iv) अ

(v) स

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्या आप नवाब साहब को लेखक की तुलना मे अधिक शिष्ट और सामाजिक प्रकृति का व्यक्ति मानते है?
2. नवाब साहब का खीरो को सूंघकर खिड़की के बाहर फेंक देना उनके किस व्यवहार को दर्शाता हैं?
3. नवाब साहब ने गर्व से गुलाबी आँखो द्वारा लेखक की तरफ क्यों देखा?
4. खानदानी तहजीब, नफासत, नजाकत आदि शब्द पाठ मे किस सभ्यता की विशेषता के सूचक है ? नवाब साहब के खीरा खाने के तरीके मे इन शब्दो के भावो का कितना समावेश है ?

उत्तर-

1. हाँ नवाब साहब लेखक की तुलना में अधिक शिष्ट व सामाजिक है। माना उन्होने पहले लेखक को अनदेखा किया, लेकिन लेखक ने भी उनका पूरी तरह तिरस्कार किया। नवाब साहब ने तो लेखक से बातचीत भी की व उन्हें खीरा खाने का निमंत्रण भी दिया मगर लेखक अंत तक नवाब साहब की उपेक्षा ही करता रहा।

2. नवाब साहब का खीरों को सूंघकर खिड़की से बाहर फेंक देना उनके नवाबी शान, खानदानी तहजीब, लखनवी नफासत व नजाकत दिखाना चाहते थे ।

3. नवाब साहब नें गर्व से गुलाबी आँखो द्वारा लेखक को देखा । मानो वे यह कहना चाहते थे कि देखो, खीरा खाने का खानदानी तरीका यह होता है । इसे हमी जानते है तुम नही ।

4. लखनऊ के नवाबो की सभ्यता में खानदानी संस्कृति, नफासत व नजाकत का बहुत महत्त्व है। नवाब साहब ने जिस तरीके से खीरे को धोया, तौलिये पर रखा, पोंछा.छीला, फिर करीने से काटा। इस सारी कारगुजारी में नवाबो की नवाबो की नजाकत व नफासत ही देखने को मिलती है

मन्नू भंडारी

इनका जन्म सन 1931 में गाँव भानपुरा, जिला मंदसौर, मध्य प्रदेश में हूआ था। इनकी इंटर तक की शिक्षा शहर में हूई। बाद में इन्होने हिंदी से एम.ए किया। दिल्ली के मिरांडा हाउस कॉलेज में अध्यापन कार्य से अवकाश प्राप्ति के बाद आजकल दिल्ली में ही रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

प्रमुख कार्य

कहानी संग्रह - एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु

उपन्यास - आपका बन्टी, महाभोज।

पुरस्कार - हिंदी अकादमी का शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान इत्यादि।

एक कहानी यह भी

सारांश

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उभारा है। लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव हूआ था परन्तु उनकी यादें अजमेर के ब्रहमापुरी मोहल्ले के एक-दो मंजिला मकान में पिता के बिगड़ी हूई मनःस्थिति से शुरू हूई। आरम्भ में लेखिका के पिता इंदौर में रहते थे, वहाँ संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काँग्रेस से जुड़े होने के साथ वे समाज सेवा से भी जुड़े थे परन्तु किसी के द्वारा धोखा दिए जाने पर वे आर्थिक मुसीबत में फँस गए और अजमेर आ गए। अपने जमाने के अलग तरह के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष को पूरा करने बाद भी जब उन्हें धन नही मिला तो सकरात्मकता घटती चली गयी। वे बेहद क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गए, जब तब वे अपना गुस्सा लेखिका के बिन पढ़ी माँ पर उतारने के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी उतारने लगे।

पांच भाई-बहनों में लेखिका सबसे छोटी थीं। काम उम्र में उनकी बड़ी बहन की शादी होने के कारण लेखिका के पास ज्यादा उनकी यादें नही थीं। लेखिका काली थीं तथा उनकी बड़ी बहन सुशीला के गोरी होने के कारण पिता हमेशा उनकी तुलना लेखिका से किया करते तथा उन्हें नीचा दिखाते। इस हीनता की भावना ने उनमें विशेष बनने की लगन उत्पन्न की परन्तु लेखकीय उपलब्धियाँ मिलने पर भी वह इससे उबार नही पाई। बड़ी बहन के विवाह तथा भाइयों के पढ़ने के लिए बाहर जाने पर पिता का ध्यान लेखिका पर केंद्रित हूआ। पिता ने उन्हें रसोई में समय ख़राब न कर देश दुनिया का हाल जानने के लिए प्रेरित किया। घर में जब कभी विभिन्न राजनितिक पार्टयों के जमावड़े होते और बहस होती तो लेखिका के पिता उन्हें उस बहस में बैठाते जिससे उनके अंदर देशभक्ति की भावना जगी।

सन 1945 में सावित्री गर्ल्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका में न केवल हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जगाई बल्कि साहित्य के सच को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी किया। सन 1946-1947 के दिनों में लेखिका ने घर से बाहर निकलकर देशसेवा में सक्रीय भूमिका निभायी। हड़तालों, जुलूसों व भाषणों में भाग लेने से छात्राएँ भी प्रभावित होकर कॉलेजों का बहिष्कार करने लगीं। प्रिंसिपल ने कॉलेज से निकाल जाने से पहले पिता को बुलाकर शिकायत की तो वे क्रोधित होने के बजाय लेखिका के नेतृत्व शक्ति को देखकर गद्गद हो गए। एक बार जब पिता ने अजमेर के वयस्त चौराहे पर बेटी के भाषण की बात अपने पिछड़े मित्र से सुनी जिसने उन्हें मान-मर्यादा का लिहाज करने को कहा तो उनके पिता गुस्सा हो गए परन्तु रात को जब यही बात उनके एक और अभिन्न मित्र ने लेखिका की बड़ाई करते हुए कहा जिससे लेखिका के पिता ने गौरवान्वित महसूस किया।

सन 1947 के मई महीने में कॉलेज ने लेखिका समेत दो-तीन छात्राओं का प्रवेश थर्ड ईयर में हुड़दंग की कारण निषिद्ध कर दिया परन्तु लेखिका और उनके मित्रों ने बाहर भी इतना हुड़दंग मचाया की आखिर उन्हें प्रवेश लेना ही पड़ा। यह ख़ुशी लेखिका को उतना खुश न कर पायी जितना आजादी की ख़ुशी ने दी। उन्होंने इसे शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया है।

कठिन शब्दों के अर्थ

• अहंवादी - अहंकारी	• जमावड़े - बैठकें
• आक्रांत - संकटग्रस्त	• शगल - शौक
• भग्नावशेष - खंडहर	• अहमियत - महत्व
• वर्चस्व - दबदबा	• बाकायदा - विधिवत
• विस्फारित - फैलाकर	• दकियानूसी - पिछड़े
• महाभोज - मन्नू भंडारी का चर्चित उपन्यास	• अंतर्विरोध - द्वंदव
• निहायत - बिल्कुल	• रोब - दबदबा
• विवशता - मज़बूरी	• भभकना - अत्यधिक क्रोधित होना
• आसन्न अतीत - थोड़ा पहले ही बिता भूतकाल	• धुरी - अक्ष
• यशलिप्सा - सम्मान की चाह	• छवि - सुंदरता
• अचेतन - बेहोश	• चिर - सदा
• शक्की - वहमी	• प्रबल - बलवती
• बेपढ़ी - अनपढ़	• लू उतारना - चुगली करना
• ओहदा - पद	• थू-थू - शर्मसार होना
• हाशिया - किनारा	• मत मारी जाना - अक्ल काम ना करना
• यातना - कष्ट	• गुबार निकालना - मन की भड़ास निकालना
• लेखकीय - लेखन से सम्बंधित	• चपेट में आना - चंगुल में आना
• गुंथी - पिरोई	• आँख मूंदना - मृत्यु को प्राप्त होना
• भन्ना-भन्ना - बार बार क्रोधित होना	• जड़ें जमाना - अपना प्रभाव जमाना
• प्रवाह - गति	• भट्टी में झोंकना - अस्तित्व मिटा देना
• प्राप्य - प्राप्त	• अंतरंग - आत्मिक
• दायरा - सीमा	• आह्वान - पुकार

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

1. निम्न लिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गये प्रश्नो के उत्तर दीजिए ।

पर यह सब तो मैने केवल सुना । देखा , तब तो इन गुणो के भग्नावशेषो को ढोते पिता थे । एक बहुत बडे आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे , जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल -बूते और हौसले से अंग्रेजी हिन्दी शब्द कोष के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया जो अपनी तरह का पहला व अकेला शब्दकोश था । इसने उन्हे यश व प्रतिष्ठा तो बहुत दी पर अर्थ नही और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे पहलुओ को निचोडना शुरू कर दिया । सिकुडती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहंकार उन्हे इस बात तक की अनुमति नही देता था कि वे कम से कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओ का भागीदार बनाएँ । नवाबी आदते , अधूरी महत्वाकांक्षाएं , हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती -थरथराती रहती थी । अपनो के हाँथो विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटे होगी वे जिन्होने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के इतना शक्की बना दिया था कि जब तब हम लोग भी उसकी चपेट मे आते ही रहते ।

(i) परिश्रमपूर्वक लिखे शब्दकोश से लेखिका के पिता को किसकी प्राप्ति हुई ?

(अ) धन की प्राप्ति (ब) यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति

(स) राय बहादुर पुरस्कार (द) उनको सरकार द्वारा सम्मानित किया गया

(ii) अजमेर आने से पूर्व लेखिका के पिता किस शहर मे रहते थे ?

(अ) जयपुर मे (ब) इंदौर मे

(स) लखनऊ मे (द) आगरा मे

(iii) लेखिका के पिताजी ने अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश किसकी सहायता से पूरा किया ?

(अ) अपने सहकर्मियो की सहायता से (ब) स्वयं ने अकेले के बल बूते पर

(स) लेखिका की मदद लेकर (द) कोलेज की प्राध्यापिका की मदद से

(iv) लेखिका के पिताजी के साथ किसने विश्वासघात किया था ?

(अ) उनके अपनो ने (ब) पडौसियो ने

(स मित्र ने (द) कोई नही

(v) लेखिका के पिता किन गुणो के भग्नावशेषो को ढो रहे थें ?

(अ) हृदयगत कोमलता (ब) संवेदनशीलता

(स) दरियादिली (द) उपरोक्त सभी

उत्तर-

(i) ब

(ii) ब

(iii) ब

(iv) अ

(v) द

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मन्नू भंडारी के पिताजी जी की खराब आर्थिक स्थिति का परिवार पर क्या प्रभाव पड़ा ?
2. मन्नू भंडारी के पिताजी ने अपनी आर्थिक विवशता कभी बच्चो को क्यो नही बतायी ? तर्क सहित उत्तर दीजिए
3. गद्यांश के आधार पर लेखिका के पिताजी के सकारात्मक व नकारात्मक गुणों का उल्लेख कीजिए
4. इस अनुच्छेद के आधार पर लेखको की दशा पर टिप्पणी कीजिए

उत्तर-

1. मन्नू भंडारी के पिता की खराब आर्थिक स्थिति नें उन्हें बहुत क्रोधी, चिड़चिडा व शक्की बना दिया। वे बात बात पर अपनी पत्नी बच्चो पर क्रोध करने लगें ।

2. मन्नू भंडारी के पिता स्वाभिमानी थे। वे अपने आश्रित बच्चो के सामने अपनी आर्थिक विवशता का जिक्र करना अपने आत्म सम्मान के विरुद्ध मानते थें ।

3. मन्नू भंडारी के पिताजी के सकारात्मक गुणो के अन्तर्गत जहाँ वे अपनी बेटी को समाज में कुछ आगे बढ़कर जीना सिखाते है, समाज मे क्या हो रहा है यह बताते है वही नकारात्मक पक्ष के अन्तर्गत उनका शक्की व क्रोधी स्वभाव आता है।

4. प्राय :लेखको की आर्थिक दशा शोचनीय होती है। उनके पास धन वैभव के नाम का कुछ नही होता । उनका यश तो चारो तरफ होता है किंतु आर्थिक दृष्टि से वे
फटेहाल होते हैं।

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

2 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् '46-47 के दिन वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रंगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह युवा कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के में मठठ्‌-बैठूं, जानूँ समझें। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हडतालें करवाती लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रंगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको धरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

1. देश की स्थितियों को समझने-जानने की प्रेरणा लेखिका को किसने दी?

(क) उसकी अंतरात्मा ने (ख) उसके खुले विचारों ने
(ग) शीला अग्रवाल ने (घ) पिता ने

2. क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय होकर काम करने की प्रेरणा लेखिका को किसने दी?

(क) उसके पिता ने (ख) संगी-साथियों ने
(ग) शीला अग्रवाल ने (घ) गुरुजनों ने

3. 'सन 46-47' के दिनों में क्या था?

(क) गणतंत्र दिवस की तैयारी (ख) आज़ादी का उल्लास
(ग) स्वतंत्रता-समारोह की तैयारी (घ) देश को स्वतंत्र कराने का जोश

4. 'बवंडर' का तात्पर्य है-

(क) तूफान (ख) अफ़वाह
(ग) शोर (घ) संघर्ष का जोश

5. 'खून को लावे में बदल दिया' का आशय है-

(क) खूनखराबा कर दिया (ख) खून में तेज़ी आ गई
(ग) खून में अत्यधिक जोश भर दिया (घ) खून का दौरा तेज हो गया।

उत्तर-

(i) घ
(ii) ग
(iii) घ
(iv) घ
(v) ग

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका का साहित्य की दुनिया मे प्रवेश कराने मे शीला अग्रवाल का कितना योगदान था ?
2. 'एक बवंडर शहर मे था और दूसरा घर मे ' कथन की व्याख्या कीजिए ।
3. लेखिका के पिता विवाह के मामले मे लेखिका से नाराज क्यों रहे होंगे ?
4. लेखिका ने स्वतंत्रता आंदोलन मे किस तरह भागीदारी की ?

उत्तर-

. 1 शीला अग्रवाल स्वयं बहुत जागरुक क्रांतिकारी, विचारवान व जोशीली महिला थी। उनके विचारो से प्रभावित होकर मन्नू भंडारी के जीवन में भी सामाजिक जागरूकता आ गई। उन्होने लेखिका के पढने को चुनकर पढ़ने में बदला। और उनका साहित्य की दुनिया मे प्रवेश कराया ।

. 2 शहर व देश में स्वतन्त्रता आन्दोलन की भीषण हलचल थी लेखिका भी उसमे शामिल थीं। उधर घर में उसकी भागीदारी के कारण बवंडर मचा हुआ था। पिता नहीं चाहते थे कि वह लड़को के बीच इस तरह खुलकर आन्दोलन में भाग ले नारे लगाये भाषण दें।

3. लेखिका में पिताजी की इच्छा के विरुद्ध राजेन्द्र यादव से विवाह किया होगा । पिता ऐसा नहीं चाहते होंगें ।

.4 लेखिका ने प्रभातफेरी, हडताले व जुलूस मे भाग लिया, नारेबाजी कीं । इस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन में खुलकर भागीदारी की ।

नौबतखाने में इबादत

यतीन्द्र मिश्र

लेखक परिचय :-

इनका जन्म 1977 में अयोध्या, उत्तर प्रदेश में हुआ। इन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से हिंदी में एम.ए किया। ये आजकल स्वतंत्र लेखन के साथ अर्धवार्षिक सहित पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। सन 1999 में साहित्य और कलाओं के संवर्ध्दन और अनुशलीन के लिए एक सांस्कृतिक न्यास 'विमला देवी फाउंडेशन' का संचालन भी कर रहे हैं।

प्रमुख कार्य

काव्य संग्रह - यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योढ़ी पर आलाप।

पुस्तक - गिरिजा

पुरस्कार - भारत भूषण अग्रवाल कविता सम्मान, हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार, ऋतुराज पुरस्कार आदि।

पाठ का सारांश

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पांच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहां उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो की जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहां जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र ना मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के वाबजूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दुरी तक भींगी आँखों से नोहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिंगो देते।

फ़ुरसत के समय वे उस्ताद और अब्बाजान को काम याद कर अपनी पसंद की सुलोचना गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की देखी फिल्मों को याद करते थे। वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद करते की कैसे वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनाता तथा बाद में उनकी 'मीठी शहनाई' को ढूंढने के लिए एक-एक कर शहनाई को फेंकते और कभी मामा की शहनाई पर पत्थर पटककर दाद देते। बचपन के समय वे फिल्मों के बड़े शौक़ीन थे, उस समय थर्ड क्लास का टिकट छः पैसे का मिलता था जिसे पूरा करने के लिए वो दो पैसे मामा से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नाना से लेते थे फिर बाद में घंटों लाइन में लगकर टिकट खरीदते थे। बाद में वे अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों को देखने के लिए वे बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाकर कमाई करते। वे सुलोचना की कोई फिल्म ना छोड़ते तथा कुलसुम की देसी घी वाली दूकान पर कचौड़ी खाना ना भूलते।

काशी के संगीत आयोजन में वे अवश्य भाग लेते। यह आयोजन कई वर्षों से संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर हो रहा था जिसमे शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन-वादन की सभा होती है। बिस्मिल्लाह खाँ जब काशी के बाहर भी रहते तब भी वो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे। काशी का स्थान सदा से ही विशिष्ट रहा है, यह संस्कृति की पाठशाला है। बिस्मिल्लाह खाँ के शहनाई के धुनों की दुनिया दीवानी हो जाती थी।

सन 2000 के बाद पक्का महाल से मलाई-बर्फ वालों के जाने से, देसी घी तथा कचौड़ी-जलेबी में पहले जैसा स्वाद ना होने के कारण उन्हें इनकी कमी खलती। वे नए गायकों और वादकों में घटती आस्था और रियाज़ों का महत्व के प्रति चिंतित थे। बिस्मिल्लाह खाँ हमेशा से दो कौमों की एकता और भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे। नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्हने दुनिया से विदा ली । वे भारतरत्न, अनेकों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियाँ व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से जाने नहीं जाएँगे बल्कि अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रूप में पहचाने जाएँगे।

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत 'सुषिर-वाद्यों' में गिना जाता है। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य, जिसमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, को 'नय' बोलते हैं। शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश, जो संगीत राग कल्पद्रुप से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आया है। अवधी पारंपरिक लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाल यह वाद्य इन जगहों पर मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर ही प्रयुक्त हुआ है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई, प्रभाती की मंगलध्वनि का संपूरक है। शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत । अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है।

(i) सुषिर'-वाद्य' से क्या तात्पर्य है?

(क). जो मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हों। (ख). जो फूंक कर बजाए जाने वाले वाद्य हों।
(ग). हारमोनियम की तरह के वाद्यों को सुषिर वाद्य कहते हैं। (घ). जो वाद्य देखने में सुंदर हो।

(ii). 'शाहेनय' किस वाद्य को कहा जाता है?

(क) शहनाई को (ख) सितार को
(ग) तबले को (घ) हारमोनियम को

(iii). किस भाषा के लोकगीतों में शहनाई का उल्लेख मिलता है?

(क) ब्रज भाषा (ख) छत्तीसगढ़ी
(ग) अवधी भाषा (घ) भोजपुरी

(iv). शहनाई की ध्वनि कैसी है ?

(क) मंगल ध्वनि (ख) मधुर ध्वनि
(ग) कर्कश ध्वनि (घ) इनमें से कोई नहीं

(v). बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से किस चीज की माँग कर रहे हैं ?

(क) शहनाई की (ख) धन एवं शौहरत की
(ग) सुरों की (घ) सुषिर वाद्य की

उत्तर:-

(i) (ख) जो फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य हों।
(ii) (क) शहनाई को
(iii) (ग) अवधी भाषा
(iv) (क) मंगल ध्वनि
(v) (ग) सुरों की

(II). किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, "बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी । अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।" खाँ साहब मुसकराए, लाड़ से भरकर बोले, "धत् ! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं । तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब क्या खाक रियाज़ हो पाता। ठीक है। बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे, मगर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, फटा सुर ने बख्शे । लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

सन 2000 की बात है । पक्का महाल (काशी विश्वनाथ से लगा हुआ अधिकतम इलाका) से मलाई बर्फ बेचने वाले जा चुके हैं । खाँ साहब को इसकी कमी खलती है । अब देसी घी मे वह बात कहाँ और कहाँ वह कचौड़ी-जलेबी । अब संगतियों के लिए गायकों के मन में कोई आदर नहीं रहा । खाँ साहब अफसोस जताते हैं । अब घंटों रियाज को कौन पूछता है ? हैरान हैं बिस्मिल्ला खाँ। कहाँ वह कजली , चैती और अदब का जमाना ?

(i). "धत् ! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं । तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।

कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए-

कथन:

(i). इन पंक्तियों से बिस्मिल्ला खाँ की सादगी का पता चलता है

(ii). इन पंक्तियों से बिस्मिल्ला खाँ की संगीत के प्रति लगन का पता चलता है

(iii). इन पंक्तियों से बिस्मिल्ला खाँ संगीत मे श्रेष्ठता का पता चलता है

(iv). इन पंक्तियों से बिस्मिल्ला खाँ के शिष्या के प्रति क्रोध का पता चलता है

विकल्प:

(क) कथन i),ii),व iii) सही हैं। (ख) कथन ii),iii)व iv) सही हैं।

(ग) कोई कथन सही नहीं है। (घ) सभी कथन सही है।

(ii). बिस्मिल्ला खाँ भगवान से क्या दुआ मांगते हैं ?

(क) अच्छे घर की (ख) अच्छे कपड़ों की

(ग) अच्छे सुरों की (घ) अच्छे जीवन की

(iii). बिस्मिल्ला खाँ का युवाओं के लिए क्या संदेश है ?

(क) अपने पहनावे का ध्यान रखें। (ख) अपने लक्ष्य के लिए मेहनत करें।

(ग) अपने गुरु से सवाल न पूछें। (घ) भगवान की भक्ति करें।

(iv). बिस्मिल्ला खाँ को किस बात का अफसोस है ?

(क) कचौड़ी-जलेबी नहीं होने का। (ख) देसी घी की गुणवत्ता बदलने का।

(ग) युवाओं के बहकने का। (घ) संगतियों का आदर न होने का।

(v). रियाज का अर्थ है -

(क) रोना (ख) हँसना

(ग) अभ्यास करना (घ) सोना

उत्तर:-

(I). (क) कथन i),ii),व iii) सही हैं।

(ii). (ग) अच्छे सुरों की

(iii). (ख) अपने लक्ष्य के लिए मेहनत करें।

(iv). (घ) संगतियों का आदर न होने का।

(v). (ग) अभ्यास करना

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर 30-25शब्द

प्रश्न 1. बिस्मिल्ला खाँ खुदा से विश्वास पूर्वक क्या माँगते थे और क्यों?
उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ खुदा से विश्वा पूर्वक सच्चा सुर मांगते थे।वे अपनी कला में और अधिक प्रभाव चाहते थे वह चाहते थे कि वह शहनाई के शुरू से श्रोताओं की आंखों में आँसू ला दें।

प्रश्न 2. 'नौबतखाने में इबादत ' नामक पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?
उत्तर- 'नौबतखाने में इबादत' नामक पाठ धार्मिक सौहार्द कला - प्रेम और सरलता-सादगी की प्रेरणा देता है। नौबत' खाने में इबादतपाठ ' प्रेम और सरलता-सादगी की प्रेरणा देता है। इस पाठ को पढ़कर हमें प्रेरणा मिलती है कि हम चाहे किसी भी धर्म को मानते हो किंतु दूसरों के धर्म का भी पूरा आदर करें ।

प्रश्न 3. बिस्मिल्ला खाँ काशी क्यों नहीं छोड़ना चाहते थे?
उत्तरबिस्मिल्ला - खाँ काशी इसलिए नहीं छोड़ना चाहते थे क्योंकि काशी में उनका बचपन बीता था और उन्होंने काशी में ही रहकर संगीत सीखा था। जिसके कारण विश्व में वे इतनी प्रसिद्धि पा सके थे। वहीं पर गंगा मैया , बालाजी का मंदिर , विश्वनाथ मंदिर आदि है जिनके प्रति उनके मन में अटूट श्रद्धा थी। काशी की संस्कृति से उन्हें बहुत लगाव था। उनका मानना था कि इस धरती पर काशी जैसी कोई जन्नत हो ही नहीं सकती।

प्रश्न 4. बिस्मिल्ला खाँ का शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?
उत्तरशहनाई - एक ऐसा वाद्य यंत्र है जिसे मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है। शहनाई प्रभात की मंगल ध्वनि का भी सूचक है। उन्होंने सामान्य मांगलिक कार्यों से लेकर अनेक सुप्रसिद्ध मांगलिक अवसरों पर शहनाई बजाई है। इसी मंगल ध्वनि की साधना बिस्मिल्ला खाँ ने पूरी लगन से की थी वह सुरों के सच्चे साधक थे। 80 वर्षों की सुर साधना के बाद भी उन्हें लगता था कि अभी उनके लिए शहनाई वादन में कुछ कमी रह गई है। उनके सुरों में वह जादू था कि सुनने वाले मंत्र मुग्ध हो जाते थे। काशी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर में शहनाई पर मंगल ध्वनि बजाते थे, जिससे लोगों का जीवन मंगलकारी हो। इसी कारण उन्हें शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक कहा जाता है।

संस्कृति

<u>भदंत आनंद कौसल्यायन</u>

लेखक परिचय

इनका जन्म सन 1905 में पंजाब के अम्बाला जिले के सोहाना गाँव में हुआ। इनके बचपन का नाम हरनाम दास था। इन्होने लाहौर के नेशनल कॉलिज से बी.ए. किया। ये बौद्ध भिक्षु थे और इन्होने देश-विदेश की काफी यात्राएँ की तथा बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। वे गांधीजी के साथ लम्बे अरसे तक वर्धा में रहे। सन 1988 में इनका निधन हो गया।

<u>प्रमुख कार्य</u>

पुस्तक - भिक्षु के पत्र, जो भूल ना सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा ना होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा।

पाठ का सार

लेखक कहते हैं की सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हे समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदहारण देते हैं। वे कहते हैं लौहे के टुकड़े को घिसकर छेद बनाना और धागा पिरोकर दो अलग-अलग टुकड़ों को जोड़ने की सोच ही संस्कृति है। इन खोजों को आधार बनाकर आगे जो इन क्षेत्रों में विकास हुआ वह सभ्यता कहलाता है। अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं की न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नही जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हे अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नही कह सकते।

लेखक के अनुसार भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे और आग के आविष्कार करते तथ्य संस्कृत संस्कृत होने या बनने के आधार नही बनते, बल्कि मनुष्य में सदा बसने वाली सहज चेतना भी इसकी उत्पत्ति या बनने का कारण बनती है। इस सहज चेतना का प्रेरक अंश हमें अपने मनीषियों से भी मिला है। मुँह के कौर को दूसरे के मुँह में डाल देना और रोगी बच्चे को रात-रात भर गोदी में लेकर माता का बैठे रहना इसी इसी चेतना से प्रेरित होता है। ढाई हजार वर्ष पूर्व बुद्ध का मनुष्य को तृष्णा से मुक्ति के लिए उपायों को खोजने में गृह त्यागकर कठोर तपस्या करना, कार्ल मार्क्स का मजदूरों के सुखद जीवन के सपने पूरा करने के लिए दुखपूर्ण जीवन बिताना और लेनिन का मुश्किलों से मिले डबल रोटी के टुकड़ों को दूसरों को खिला देना इसी चेतना से संस्कृत बनने का उदाहरण हैं। लेखक कहते हैं की खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने के तरीके आवागमन के साधन से लेकर परस्पर मर-कटने के तरीके भी संस्कृति का ही परिणाम सभ्यताके उदाहरण हैं।

मानव हित में काम ना करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नही कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है। यह बुद्धि और विवेक से बना एक ऐसा तथ्य है जिसकी कभी दल बाँधकर रक्षा करने की जरुरत नही पड़ती। इसका कल्याणकारी अंश अकल्याणकारी अंश की तुलना में सदा श्रेष्ठ और स्थायी है।

कठिन शब्दों के अर्थ

• आध्यात्मिक - परमात्मा या आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला • साक्षात - आँखों के सामने • अनायास - आसानी से • तृष्णा - लोभ • परिष्कृत - सजाया हुआ • कदाचित - कभी • निठल्ला - बेकार • मिनिषियों - विद्वानों • शीतोष्ण - ठंडा और गरम • वशीभूत - वश में होना • अवश्यंभावी - अवश्य होने वाला	• पेट की ज्वाला - भूख • स्थूल - मोटा • तथ्य - सत्य • पुरस्कर्ता - पुरस्कार देने वाला • ज्ञानेप्सा - ज्ञान प्राप्त करने की लालसा • सर्वस्व - स्वयं को सब कुछ • गमना गमन - आना-जाना • प्रज्ञा - बुद्धि • दलबंदी - दल की बंदी • अविभाज्य - जो बाँटा ना जा सके

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए

(1)

आग के अविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही । सुई-धागे के अविष्कार में शायद शीतोषण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा । अब कल्पना कीजिए उस आदमी का जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आसमान के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जाने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है ? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है । पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता । हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है । रात के तारों को देख कर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था ।

(i). सुई-धागे का आविष्कार क्यों किया गया होगा ?

(क). शीतोष्ण से शरीर को बचाना (ख). शरीर को सजाना

(ग). सोचने के लिए (घ). (क) एवं (ख) दोनों

(ii). आग के अविष्कार के पीछे क्या कारण रहा होगा ?

(क) पेट की ज्वाला (ख) सरदी

(ग) रक्षा (घ) तपन

(iii). कौन-सी इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है ?

(क) पेट भरने की (ख) तन ढँकने की

(ग) सोचने की (घ) (क)-(ख) दोनों

(iv). हमें सभ्यता का एक बड़ा अंश किनसे मिला है ?

(क) संस्कृत आदमियों से (ख) उपदेशकों से

(ग) समाज से (घ) उपर्युक्त सभी से

(v). ज्ञान का प्रथम पुरस्कर्ता कौन था ?

(क) पेट भर व्यक्ति (ख) तन ढँका व्यक्ति

(ग) रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला व्यक्ति (घ) सभी

उत्तर:

(i). (घ). (क) एवं (ख) दोनों

(ii). (क) पेट की ज्वाला

(iii). (क) एवं (ख) दोनों

(iv). (घ) उपर्युक्त सभी से

(v). (ग) रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला व्यक्ति

(2)

और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम । हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का अविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उस की सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा ? संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है, वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु । क्षण-क्षण परिवर्तन होने वाले संसार में किसी भी चीज को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता । मानव ने जब-जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसे कोई वस्तु नहीं देखी है, जिसकी रक्षा के लिए दल बंदियों की जरूरत है। मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें जितना अंश कल्याण का है,वह अकल्याणकर की अपेक्षा श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है ।

(i). सभ्यता क्या है ?
- (क) संस्कृति का परिणाम
- (ख) हमारे खाने-पीने का ढंग
- (ग) हमारे ओढ़ने-पहनने का ढंग
- (घ) ये सभी

(ii). मानव-संस्कृति कैसी है ?
- (क) सभ्य
- (ख) अज्ञात
- (ग) अविभाज्य
- (घ) बँटवारे वाली

(iii). संस्कृति कब असंस्कृति बन जाती है ?
- (क) जब उसका संबंध जनहित से जुड़ जाता है।
- (ख) जब उसका कल्याण की भावना से नाता टूट जाता है।
- (ग) जब वह नई खोज में लग जाती है।
- (घ) कभी नहीं

(iv). क्या सभ्यता और संस्कृति एक ही वस्तु है ?
- (क) हाँ
- (ख) कुछ-कुछ
- (ग) नहीं
- (घ) बिल्कुल नहीं

(v). जो साधन आत्मविनाश कराएँ, वे हैं-
- (क) सभ्यता
- (ख) संस्कृति
- (ग) असंस्कृति
- (घ) असभ्यता

उत्तर :-

(i). (घ) ये सभी

(ii). (ग) अविभाज्य

(iii). (ख) जब उसका कल्याण की भावना से नाता टूट जाता है।

(iv). (ग) नहीं

(v) (ग) असंस्कृति

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर 30-25शब्द

प्रश्न 1. संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है और इसका दुष्परिणाम क्या होता है ?
उत्तरमानव - -कल्याण की भावना से प्रेरित तथ्यों का आविष्कार करना ही संस्कृति का नाता कल्याण की भावना से टूट जाता है तो जो योग्यता आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है ,वह
असंस्कृति बन जाती है |

प्रश्न 2. लेखक ने सभ्यता और संस्कृति के अंतर को समझाने के लिए किन उदाहरणों को दिया है ?
उत्तर- आग की खोज करने वाले आविष्कर्ता को , सुई -धागे की बात बतलाकर
* जो योग्यता मानव का सर्वस्व त्याग करने की भावना जगाती है- वह संस्कृति है |
* संस्कृति का परिणाम है सभ्यता , जैसे -खाने -पीने , पहनने -ओढ़ने ,गमन -आगमन के तरीके |

प्रश्न 3. 'संस्कृति सभ्यता की जननी है ' कथन का आशय 'संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए |
उत्तर- 'संस्कृति' 'सभ्यता' की जननी है | उसने मानव में आविष्कार करने की योग्यता उत्पन्न की | उस आविष्कार का प्रयोग ही 'सभ्यता' है | संस्कृति द्वारा जो खोज होती है उसे सभ्यता कहते हैं | सभ्यता संस्कृति का परिणाम है |

प्रश्न 4. 'संस्कृति' पाठ के आधार पर 'सुसंस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है ?
उत्तर- ऐसा व्यक्ति जो अपनी बुद्धि तथा योग्यता के आधार पर जनकल्याण के लिए नए तथ्य की खोज करता है, जो किसी का अहित न करे और स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सुख दे , वही व्यक्ति वास्तव में संस्कृत व्यक्ति कहा जा सकता है |

पाठ्य - पुस्तक

(कृतिका भाग-2)

माता का अंचल

1. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- भोलानाथ को अपने साथियों के साथ खेलने में गहरा आनंद मिलता है। वहां साथियों की हुल्लड़बाजी ,शरारतें और मस्ती देखकर सब कुछ भूल जाता है उसी मगनावस्था में वह सिसकना भी भूल जाता है।

2. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर - आज का जमाना बदल चुका है। आज माता-पिता अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं। वह उसे गली- मोहल्ले में बेफिक्र खेलने- घूमने की अनुमति नहीं देते जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं, तब से बच्चे भी डरे- डरे रहने लगे हैं। अब ना तो हुल्लड़ बाजी, शरारतें और तुकबंदियां रही है; न ही नंग धड़ंग घूमते रहने की आजादी। आपके बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक्स के महंगे खिलौने से खेलते हैं। बरसात में बच्चे बाहर आ जाए तो मां बाप की जान निकल जाती है। आज न कुएं रहे, न रहट, खेती का शौक। इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक बनावट और हो गया है।

3. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हो?

उत्तर- पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक सॉफ सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब यह बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते हैं और मां की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं _यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है। इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

4. यहां माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - माता का अंचल में माता - पिता के वात्सल्य का बहुत ही सरस और मनमोहक वर्णन हुआ है। बच्चे के माता-पिता में मानो वात्सल्य की होड़ है। बच्चे के पिता अपने बच्चे से मां जैसा प्यार करते हैं। वे बच्चे को अपने साथ सुलाते हैं, जगाते हैं, नहाते- धूलाते हैं और खाना भी खिलाते हैं। उन्हें यह सब करने में बहुत आनंद मिलता है। वे कभी अपने बच्चे को डांटते फटकारते नहीं। मां यशोदा की तरह बच्चे की एक-एक क्रीडा में पूरी रुचि लेते हैं। वे उसके एक-एक खेल को मानो भगवान भोलेनाथ की लीला मानकर साथ देते हैं। इसीलिए वे हंसकर पूछते हैं_फिर कब भोज होगा भोलानाथ? इस साल की खेती कैसी रही भोलानाथ? पिता बच्चे से हर संभव लाड करते हैं। उसके साथ खेलते । उससे जान-बूझकर हारते हैं। फिर उसे चूमते हैं, कंधे पर बिठाकर घूमते हैं। इन सारी क्रियाओं में उन्हें बहुत आनंद मिलता है।

5. 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर ऐसे दो प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों।

उत्तर - माता का आँचल' पाठ में वैसे तो कई प्रसंग हैं जो दिल को छू गए हैं, परंतु मुख्य दो प्रसंग इस प्रकार हैं।

क) पहला प्रसंग- जब माँ अचानक भोलानाथ को पकड़ लेती है। उसके सिर में तेल लगाकर मालिश करती है। भोलानाथ छटपटाने और रोने लगता है, परंतु माँ फिर भी उसकी चोटी गूँथती है, माथे पर काजल की बिंदी लगाती है, रंगीन कुरता-टोपी पहनाकर कन्हैया बनाकर तैयार करती है और भोलानाथ सिसकता रहता है। पिता जी उसे गोद में उठाकर बाहर ले जाते हैं और बाहर बालकों का झुंड देखकर वह सिसकना भूल जाता है और खेलने लगता है। यह प्रसंग बहुत ही दिल को छू लेने वाला है।

(ख) दूसरा प्रसंग- भोलानाथ अपने साथियों के संग टीले पर चूहे के बिल में पानी उलीचता है और उस बिल से साँप निकल आता है। साँप को देखकर सभी बच्चे डरकर भागने लगते हैं। भोलानाथ भागते-भागते अपनी माँ के आँचल में जाकर छिप जाता है। वह लगातार सिसकता जाता है। माँ उसे इस तरह से देखकर बहुत परेशान होती है। उसे हल्दी लगाती है। उस समय बाबू जी के गोद में लेने पर भी वह माँ की गोद नहीं छोड़ता। यह प्रसंग बहुत ही मर्मस्पशी एवं हृदय को छू लेने वाला है।

6. 'माता का अँचल' पाठ में चित्रित ग्राम्य संस्कृति और आज की ग्रामीण संस्कृति में क्या भिन्नता है?

उत्तर- 'माता का आँचल' पाठ में चित्रित ग्राम्य संस्कृति और आज की ग्रामीण संस्कृति में पर्याप्त भिन्नता है। पहले के ग्रामीण जीवन में रिश्तों में बनावटीपन या दिखावा नहीं था। परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे। जीवन सरल, सादा और सहज था। मिलजुल कर रहने और जीने की प्रवृत्ति थी। लोगों का पूजा-पाठ में रुझान था। बच्चों के पालन-पोषण के घरेलू तरीके थे। बच्चों को खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं अपहरण इत्यादि की चिंता नहीं थी। बच्चे घर की सामान्य वस्तुओं से खेल की सामग्री बनाते थे। किसी प्रकार का भय, रोक-टोक नहीं थी। सामूहिक संस्कृति थी, जो आत्मीयता के स्नेह-सूत्र से बँधी हुई थी। आज ग्रामीण जीवन में आधुनिकता अपने पाँव पसार चुकी है। लोग, रिश्ते, जीवन, व्यवहार सब सिमट चुका है। गाँवों में आधुनिक तकनीकें पहुँच चुकी हैं। वहाँ टी०वी०, कम्प्यूटर, इंटरनेट आधुनिक शिक्षा संबंधी सुविधाएँ भी पहुँच चुकी हैं। जीवन-शैली में बदलाव आ गया है। लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूक हो गए हैं। बच्चों के खेल और खेल सामग्री बदल गई हैं। एक नई संस्कृति गाँवों में पनप चुकी है, जो आधुनिकता और विकास की ओर अग्रसर है।

7. 'माता का अँचल' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- 'माता का अँचल' शीर्षक की सार्थकता उसकी संक्षिप्तता और विषय वस्तु के साथ उसके संबंध पर निर्भर करती है। इन दोनों की दृष्टि से 'माता का आँचल' एक सार्थक शीर्षक है। यह संक्षिप्त भी है और पाठ की विषय-वस्तु, माँ के आँचल के महत्त्व को रोचक तरीके से प्रस्तुत करता है। बच्चे माँ के आँचल में छिपकर अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं। भोलानाथ का अधिकांश समय पिता के साथ में बीतता था। भोलानाथ का माँ के साथ संबंध बहुत सीमित रहता था। अंत में साँप से डरा हुआ बालक भोलानाथ पिता को हुक्का गुड़गुड़ाते देखकर भी माता की ही शरण में जाता है और अद्भुत रक्षा और शांति का अनुभव करता है। वह इस स्थिति में अपने पिता को भी अनदेखा कर देता है। वह माँ के आँचल में दुबक कर राहत महसूस करता है। इस प्रकार 'माता का आँचल' शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

8. बच्चे रोना-धोना, पीड़ा, आपसी झगड़े ज्यादा देर तक अपने साथ नहीं रख सकते हैं।' 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बच्चों की दुनिया भिन्न होती है, बड़ों से बिल्कुल अलग। वे भोले होते हैं, उन्हें यदि दुख होता है, पीड़ा होती हैं, तो माँ की गोद में आकर छुप जाते हैं और अपनी पीड़ा भूल जाते हैं, क्योंकि उन्हें माँ का आँचल सुरक्षित महसूस होता है। जैसे भोलानाथ साँप से डरकर माँ की गोद में छिप गया था। गुरुजी की डाँट खाकर, मार खाकर भोलानाथ पिता का कंधा आँसुओं से भिगो देता है, पर जब घर वापस जाते समय रास्ते में साथियों का झुंड मिलता है तो उन्हें नाचता-गाता देखकर सब भूल जाता है और गोद से उतरकर खेलने लगता है। बच्चे स्वभाव से निश्छल, कोमल और चंचल होते हैं, उन्हें खेल पसंद होते हैं इसलिए खेल खेलते साथियों को जब देखते हैं तो अपनी पीड़ा, कष्ट भूलकर खेलना आरंभ कर देते हैं।

9. यह स्वाभाविक है कि बच्चा माता या पिता किसी एक से अधिक नज़दीकी का अनुभव करता हो- 'माता का अँचल' के भोलानाथ के संदर्भ से इस कथन पर प्रकाश डालें। इसके साथ ही अपने जीवन के अनुभव से इसके पक्ष या विपक्ष में टिप्पणी कीजिए।

उत्तरः भोलानाथ अपने माता-पिता दोनों से बहुत प्रेम करता है। वह पूरा दिन अपने पिता के साथ ही व्यतीत करता है। उसके पिता हर सुख-दुःख में साथ देते हैं। जब भी उसे डर लगता है तो वह अपनी माँ के आँचल में छुप जाता है। अपने बच्चे को दुःखी देखकर माँ का हृदय भी पिघल जाता है। माँ के आँचल बच्चा स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है।माँ भी पुत्र की पीड़ा को देखकर अपनी सुध-बुध खो देती हैं। वह इसी प्रयास में है कि अपने पुत्र की पीड़ा को समाप्त कर सके।

साना- साना हाथ जोड़ि

1. गंतोक मेहनतकश बादशाहो का शहर क्यों कहा गया?

उत्तर- मेहनतकश का अर्थ है - कड़ी मेहनत करने । बादशाह का अर्थ है- मन की मर्जी के मालिक। एक पर्वतीय स्थल हैं। पर्वतीय क्षेत्र के नाते यहां स्थितियां बड़ी कठिन है। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहां के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं इसलिए गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

2. पाठ में प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है इसके और कौन- से दुष्परिणाम हो सकते हैं? लिखिए।

उत्तर- प्रदूषण के कारण पर्यावरण में अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। स्नोफॉल की कमी के कारण नदियों में जल प्रवाह की मात्रा कम होती जा रही है। परिणाम स्वरूप पीने योग्य जल की कमी सामने आ रही है। प्रदूषण के कारण ही वायु प्रदूषित हो रही है। महानगरों में सांस लेने के लिए ताजा हवा का मिलना भी मुश्किल हो रहा है। सांस संबंधी रोगों के साथ-साथ कैंसर तथा उच्च रक्तचाप की बीमारियां बढ़ रही है। ध्वनि प्रदूषण मानसिक अस्थिरता, बहरेपन तथा अनिद्रा जैसे लोगों का कारण बन रहा है।

3. देश की सीमा पर बैठे फौजी की तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

उत्तर - देश की सीमा पर बैठे फौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते है। जाड़ों में हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में जब तापमान शून्य से 20-25 सेल्सियस नीचे चला जाता है तो भी वे सीमा पर डटे रहते हैं। देशवासी चैन की नींद सो सके इसलिए वे रात रात भर जागते हैं। तपते रेगिस्तान में धूल भरे तूफानों के बीच में भूखे प्यासे अपने कर्तव्यों की पूर्ति करते हैं। आवश्यकता पड़े तो वे सीने पर शत्रु की गोली भी खाते हैं।

देश के रक्षक फौजियों के प्रति हमारा दायित्व है कि हम उनके प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रखते हुए उन्हें हर प्रकार की सहायता दे।

4. साना साना हाथ जोड़ी पाठ में लेखिका ने हिमालय का किन-किन रूपों में वर्णन किया है?

उत्तर - इस यात्रा वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के पल पल परिवर्तित होते रूप को देखा। ज्यों- ज्यों ऊंचाई पर चढ़ते जाएं हिमालय विशाल से विशाल तर होता चला जाता हैं। छोटी-छोटी पहाड़िया विशाल पर्वतों में बदलने लगती है। घाटिया गहराती गहराती पाताल नापने लगती है। वादिया चौड़ी होने लगती है, जिनके बीच रंग -बिरंगे फूल मुस्कुराते हुए नजर आते हैं। चारों और प्राकृतिक सुषमा बिखरी नजर आती है। जलप्रपात जलधारा बनकर पत्थरों के बीच बलखाती सी निकलती है तो मन को मोह लेती है। हिमालय कहीं हरियाली के कारण चटक हरे रंग की मोटी चादर- सा नजर आता है, कहीं पीलापन के लिए नजर आता है, कहीं प्लास्टर उखड़ी दीवार की तरह पथरीला नजर आता है।

5. “हम सभी नदियों और पर्वतों के ऋणी हैं" - कैसे? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रकृति हमारी जननी है। प्रत्येक जीव जीवनदायिनी सामग्री प्रकृति से ही ग्रहण करता है। हम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर निर्भर हैं। प्रकृति के बिना हमारे जीवन का कोई आस्तित्व नहीं है। प्रकृति के उपादानों में से नदियो एवं पर्वतों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। हिमालय पर्वत प्रहरी की भाँति देश की रक्षा करता है। हिमालय पर्वत पर अनेक जड़ी-बूटियाँ पायी जाती हैं जो मानव जीवन के लिए अति उपयोगी हैं। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में गंतोक (पहाड़ों) के शिखर हिम से ढ़के रहते हैं। ये हिम-शिखर ही जल स्तंभ हैं। पहाड़ों के शिखरों पर सर्दियों में घनी बर्फ पड़ती है, जो ठोस रूप में जल को संचित रखती है और जब गर्मियाँ आती हैं तो यही बूँद-बूँद बर्फ पिघलकर जल धाराओं का रूप ले लेता है और नदियों के रूपों में यात्रा करता हुआ मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले प्राणियों की प्यास बुझाता है। अतः हम कह सकते हैं कि हम नदियों एवं पर्वतों के ऋणी हैं।

6. यात्राएँ विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होने का अच्छा माध्यम हैं। 'साना-साना हाथ जोड़ि' यात्रा वृतान्त के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर - यात्राएँ हमेशा नई संस्कृतियों से मिलवाती हैं। लेखिका जब गंतोक पहुँची तो वहाँ की प्रकृति की सुंदरता देख हैरान रह गई, तब पता चला कि इस शहर को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा जाता है, क्योंकि इसे कड़ी मेहनत से सुंदर बनाया गया था। यहाँ की पहाड़ियों पर श्वेत पताकाएँ लगी रहती हैं, जोकि शांति व अहिंसा का बोध कराती हैं। इस प्रकार हम जब कहीं की भी यात्रा करते हैं, तो वहाँ की संस्कृति को समझ व जान पाते हैं।

7. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- सिक्किम में एक जगह है, जिसका नाम है- कवी-लोंग स्टॉक। यह वह जगह है, जहाँ सुप्रसिद्ध फ़िल्म 'गाइड' की शूटिंग हुई थी। वहीं एक कुटिया के भीतर घूमता चक्र दिखाई देता है, जिसे वहाँ के लोग धर्म-चक्र मानते हैं। वहाँ के लोगों की यह मान्यता है कि इस 'प्रेयर व्हील' यानी धर्म चक्र को घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। जब लेखिका ने इस बात को जाना, तो उसे लगा मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद भी इस देश की आत्मा एक जैसी है। लोगों में बसी आस्था, विश्वास, अंधविश्वास एवं पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ संपूर्ण भारतीयों में एक जैसी हैं। उनकी मान्यताएँ एक जैसी हैं क्योंकि इन सबके मूल में भारत की आत्मा एक है।

8. झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- पाठ 'साना-साना हाथ जोड़ि' की लेखिका 'मधु कांकरिया' को झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक अपनी तरफ़ सम्मोहित कर रहा था क्योंकि सितारों से भरा गंतोक लेखिका को रहस्यमयी और जादूभरा लग रहा था। आकाश में सितारों के झुंड रोशनी की झालर समान प्रतीत हो रहे थे। साफ़-सुथरे, प्रदूषण रहित आकाश में एक-एक सितारा स्पष्ट होकर अपनी रोशनी बरसा रहा था, जिसका जादू लेखिका के मन-मस्तिष्क पर छा रहा था।

9. सिक्किम की यात्रा करते समय लेखिका को बौद्ध धर्म-संबंधी किन आस्थाओं और विश्वासों की जानकारी प्राप्त हुई तथा लेखिका ने उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की?

उत्तर- सिक्किम की यात्रा करते समय लेखिका ने देखा कि अनेक लोग यहाँ बौद्ध धर्म को मानते हैं। यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं। किसी शुभ अवसर पर भी इन

पताकाओं को फहराया जाता है। इन्हें उतारा नहीं जाता। ये अपने आप ही नष्ट हो जाती हैं। लेखिका ने पहाड़ी रास्तों पर एक कतार में लगी सफ़ेद पताकाओं को भी देखा, जिन पर शांति और अहिंसा के मंत्र लिखे हुए थे। लेखिका उनसे अति प्रभावित हुई।

10. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में जीवन-मूल्यों के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- आज की पीढ़ी आधुनिकता के रंग में रँगी हुई, प्रकृति को जाने-अनजाने नष्ट कर रही है। पर्वतीय स्थलों को गंदा कर, वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट कर रही है। वह चट्टानों पर नारे या विज्ञापन बनाकर उनके सौंदर्य को नष्ट कर देती है। लोग पर्यटन-स्थलों पर कूड़ा-करकट फेंककर उन्हें गंदा कर देते हैं।

तापमान में वृद्धि हो रही है। पर्वत अपनी स्वाभाविक सुंदरता खो रहे हैं। इसे रोकना बहुत जरूरी है, नहीं तो हम प्राकृतिक सौंदर्य से वंचित रह जाएँगे। हमें चाहिए कि हम सैर-सपाटा तो करें, किंतु पर्यटन स्थलों को गंदा न करें। सफ़ाई का ध्यान रखें। कूड़े को इधर-उधर न फेंकें। पेड़-पौधों को नष्ट न करें। चट्टानों तथा दीवारों पर कुछ न लिखें। बहते पानी में कूड़ा न फेंके। मैं पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करने, पेड़ों को न काटने, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों एवं उपकरणों के कम से कम प्रयोग करने आदि के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास करूँगा।

मैं क्यों लिखता हूं ?

प्रश्न 1 लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद क्यों करती है?

उत्तर- लेखक का कहना है कि प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति किसी भी लेखन के लिए अधिक सहायक होती है, क्योंकि लेखन का कार्य मन के भीतर की वस्तु है उसे बाह्य वस्तु नहीं कहा जा सकता। लेखन के लिए आंतरिक अनुभूति, संवेदना तथा कल्पना का होना अनिवार्य है ना कि सिर्फ अनुभव का। जब तक रचनाकार का ह्रदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह से संबोधित नहीं होता उस में अभिव्यक्त होने की पीड़ा नहीं होती तब तक वह कुछ भी लिख नहीं सकता हैं।

प्रश्न 2 मैं क्यों लिखता पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक को कौन सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती है ? किसी रचनाकार की प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर- लेखन एक कला है। कभी-कभी यह बाह्य प्रेरणा स्रोतों से प्रभावित भी होता है। अपनी ख्याति के लिए, संपादकों के आग्रह अथवा आर्थिक आवश्यकताओं के कारण भी रचनाकार लिखने को विवश होता है।

प्रश्न3 क्या बाहय दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे?

उत्तर- बाहरी दबाव सभी प्रकार के कलाकारों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के तौर पर अधिकतर गायक ,नर्तक, अभिनेता, कलाकार आदि अपने दर्शकों श्रोताओं आयोजकों की मांग पर कला का प्रदर्शन करती हैं।

एक चित्रकार या मूर्तिकार जब किसी दूसरे चित्रकार अथवा मूर्तिकार को देखता है, जिसे सम्मान और आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता दिखाई देता है तब वह भी उस से प्रभावित होकर अपनी प्रतिभा को दर्शाने का प्रयत्न और उसका व्यवसायीकरण करता है। फिल्म कलाकार को भी अक्सर पूंजीपतियों एवं राजनीतिक नेताओं के दबाव में कार्य करते देखा गया है।आज इस तरह इन श्रोताओं को दर्शकों की मांग पर मंच पर फूहड़ संगीत एवं अभिनय परोसने वाले कलाकारों की कमी नहीं दिखाई देती।

प्रश्न 4 आज विज्ञान का दुरुपयोग किस रूप में हमारे सामने आ रहा है? मैं क्यों लिखता हूं इस पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- आजकल विज्ञान का दुरुपयोग कई सरोवर किया जा रहा है इसके द्वारा आतंकवादी संसार भर में बम विस्फोट कर रहे हैं उदाहरण के तौर पर अमेरिका में एक बहु मंजिली इमारत को तहस-नहस करना मुंबई में हुए बम विस्फोट गाड़ियों में आग लगाना इत्यादि घटनाओं को हम ले सकते हैं आंतरिक रूप से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को आतंकित वह भयभीत करने की कोशिश कर रहा है प्रतिस्पर्धा के इस युग में विज्ञान के ही कारण दिन प्रतिदिन प्रदूषण भी बढ़ रहा है।

विज्ञान के दुरुपयोग से कन्या भ्रूण हत्याएं हो रही है ,जिससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। किसान कीटकनाशक और जहरीले रसायन के माध्यम से फसलों का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उत्पादन तो बढ़ रहा है पर लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के उपकरणों के कारण वातावरण में गर्मी बढ़ रही है बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है। भयंकर दुर्घटनाएं रोजमर्रा का हिस्सा बन गई है। साइबर क्राइम यह भी विज्ञान से जन्मी समस्या है।

लेखन

अनुच्छेद लेखन

बढ़ती जनसंख्या

संकेत बिंदु -

- जनसंख्या वृद्धि बनी समस्या
- संसाधनों पर असर
- वृद्धि के कारण
- जनसंख्या रोकने के उपाय

"जनसंख्या की समस्या का समाधान ही देश की तमाम समस्याओं के निदान की आधारशिला है"।

किसी राष्ट्र की प्रगति के लिए जनसंख्या एक महत्त्वपूर्ण संसाधन होती है, पर जब यह एक सीमा से अधिक हो जाती है तब यह समस्या का रूप ले लेती है। जनसंख्या वृद्धि एक ओर स्वयं समस्या है तो दूसरी ओर यह अनेक समस्याओं की जननी भी है। यह परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति पर बुरा असर डालती है।

जनसंख्या वृद्धि के साथ देश के विकास की स्थिति 'ढाक के तीन पात वाली' बनकर रह जाती है। प्रकृति ने लोगों के लिए भूमि वन आदि जो संसाधन प्रदान किए हैं, जनाधिक्य के कारण वे कम पड़ने लगते हैं तब मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ शुरू कर देता है। वह अपनी बढ़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों का विनाश करता है।

इससे प्राकृतिक असंतुलन का खतरा पैदा होता है जिससे नाना प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जनसंख्या वृद्धि के लिए हम भारतीयों की सोच काफ़ी हद तक जिम्मेदार है। यहाँ की पुरुष प्रधान सोच के कारण घर में पुत्र जन्म आवश्यक माना जाता है। भले ही एक पुत्र की चाहत में छह, सात लड़कियाँ क्यों न पैदा हो जाएँ पर पुत्र के बिना न तो लोग अपना जन्म सार्थक मानते हैं और न उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती दिखती है।

इसके अलावा अशिक्षा. गरीबी और मनोरंजन के साधनों का अभाव भी जनसंख्या वृद्धि में योगदान देता है। जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए लोगों का इसके दुष्परिणामों से अवगत कराकर जन जागरूकता फैलाई जानी चाहिए। सरकार द्वारा परिवार नियोजन के साधनों का मुफ़्त वितरण किया जाना चाहिए तथा 'जनसंख्या वृद्धि' को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

"जनसंख्या पर रोक लगाए देश को उन्नत करके दिखाए"

शहरी जीवन में बढ़ता प्रदूषण

संकेत बिंदु-

- प्रदूषण के दुष्परिणाम
- प्रदूषण के कारण
- प्रदूषण के प्रकार
- समाधान

जब से मानव ने प्रकृति के आंचल से निकलकर विज्ञान का दामन थामा है तभी से उसके लिए अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगी है।

आज ग्रामीण इलाकों से लोग धीरे-धीरे शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। जिसके पास मौका होता है वह शहर में बस जाता है । इस वजह से कई छोटे कस्बे कुछ वर्षों में शहर बन गए हैं।

जनसंख्या घनत्व बढ़ने से महानगरों में तरह-तरह के प्रदूषण बढ़ रहे हैं। वही जमीन, वही आसमान, वही नदी, वही पहाड़, लेकिन तीन गुना आबादी यानी तीन गुना उपभोक्ता। इसका सीधा असर बढ़ते प्रदूषण पर पड़ रहा है।

शहरों में प्रदूषण कई तरह से बढ़ रहा है। सबसे भीषण वायु प्रदूषण है। बड़े शहरों में लोग स्वस्थ हवा में सांस नहीं ले सकते। लोगों को सड़क पर चलते समय वाहनों का काला धुंआ पीना पड़ रहा है। भीड़ अधिक होने के कारण जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं। फैक्ट्री का धुआं पर्यावरण को जहरीला बनाता है, इसलिए मनुष्य भी स्वच्छ हवा के लिए तरसता है। बड़े शहरों में जल प्रदूषण एक बड़ी समस्या बन गयी है। फैक्ट्री का पानी प्रदूषित होने से भूजल भी लाल और काला हो गया।

इस संबंध में वैज्ञानिक साधनो की तरह आम लोग भी समान रूप से दोषी हैं। हमें प्रदूषण के कारणों और इससे बचने के तरीकों को समझना होगा । मुक्त वातावरण का निर्माण हो सकता है।

इस समस्या की ओर गंभीरता पूर्वक ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में यह समस्या और भी विकराल रूप धारण कर लेगी

लोगों को सचेत करना है और उपायों को व्यापक रूप से प्रचारित करना है। सरकार और जनता का संयुक्त सहयोग ही प्रदूषण मुक्त संसार बना सकता है।

वृक्षारोपण

संकेत बिंदु-

- वृक्ष से लाभ
- वृक्ष काटने से हानियां
- भूमि संरक्षण में वृक्षों का योगदान।

आदिकाल से मानव और प्रकृति का गहरा संबंध रहा है प्रकृति सदा से मानव की सच्ची सहचरी रही है।

वृक्ष प्रकृति की अनुपम देन हैं। ये पृथ्वी और मनुष्य के लिए वरदान हैं। किसी क्षेत्र विशेष में अनेक वृक्षों का समूह वन कहलाता है। वन हमारे लिए ईश्वर की सबसे विशिष्ट भेंट हैं। ये पृथ्वी और देश की सुंदरता बढ़ाते हैं। ये देश की सुरक्षा और समृद्धि में भी सहायक होते हैं। वृक्ष लगाना उसे पूजना उसकी सुरक्षा करने की महत्ता पुराने जमाने से ही चली आ रही है। पुराणों के अनुसार, एक वृक्ष लगाने का उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों के सुयश से। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम पेड़ों के इसी महत्त्व को भूलते चले जा रहे हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है।

वन काटे जा रहे हैं और उनके स्थान पर मैदान बनाकर बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने लगा है। वनों से मिलने वाले लाभ अब समाप्त हो रहे हैं। वनों से मिलने वाली इमारती लकड़ी, लाख,

रबर, गोंद आदि भी कम हो गए हैं। वनों के अभाव में अनेक लोगों की रोजी-रोटी भी समाप्त हो गई है। वन भूमि का कटाव रोकने में सहायक होते हैं तथा नदियों की गति को नियंत्रित रखते हैं।

वनों की बदौलत भूमि के उपजाऊ कण सुरक्षित रहते हैं लेकिन आज इन सभी चीजों का अभाव हो गया है। अतः आज अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित कर हमारे जीवन को खुशहाल बनाने की आवश्यकता है।

मेरे जीवन का लक्ष्य

संकेत बिंदु-

- जीवन में लक्ष्य का महत्व
- मेरा लक्ष्य
- कारण
- लक्ष्य प्राप्ति के प्रयास

“लक्ष्यहीन मनुष्य की ईश्वर भी सहायता नहीं करते”।

लक्ष्य मनुष्य को सक्रिय बनता है कर्मण्य बनता है जिस व्यक्ति का कुछ उद्देश्य नहीं होता वह जीवन में मारा- मारा फिरता है। अतः हम सबको जीवन में आगे बढ़ने के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। मेरा एक सपना है कि मैं डॉक्टर बनूँ। वैसे तो कई व्यवसाय हो सकते हैं, जिससे मैं धन कमा सकता हूँ, लेकिन डॉक्टर बनकर मैं धन कमाने के साथ-साथ मानवता के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्ति भी कर पाऊँगा, ऐसा मेरा मानना है।

जब भी मैं डॉक्टरों द्वारा मरीजों को संतुष्टि पहुँचाते देखता हूँ तो मेरी इच्छा और भी बलवती हो जाती है। इसके लिए मुझे बहुत पढ़ना होगा। डॉक्टरी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत धन भी ख़र्च करना होगा, साथ ही इस महान लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने आराम और सुविधाओं का त्याग भी करना होगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे लगता है कि एक डॉक्टर को सबसे पहले एक अच्छा इंसान होना चाहिए।

विनम्रता और दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति होना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। मैंने देखा है कि एक डॉक्टर जब रोगी से प्रेमपूर्वक, सहृदयता से बात करता है तो उसका आधा दर्द तो स्वयमेव दूर हो जाता है। मैं अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प हूँ और इसे पाकर ही रहूँगा।

प्लास्टिक प्रदूषण

संकेत बिंदु-

- विज्ञान का वरदान प्लास्टिक
- प्लास्टिक के प्रयोग के विविध रूप
- प्लास्टिक का सही और गलत प्रयोग
- पर्यावरण पर प्रभाव
- रोकथाम के उपाय

वातावरण में किसी तत्व का असंतुलित मात्रा में विद्यमान होना प्रदूषण है। प्रदूषण की समस्या आज पूरे विश्व भर में व्याप्त है।

विज्ञान ने जहाँ एक ओर मानव को अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं वहीं दूसरी ओर इन सुविधाओं ने अनेक भयंकर समस्याएँ भी खड़ी की हैं। मनुष्य द्वारा निर्मित तमाम वस्तुओं में से प्लास्टिक एक है। आजकल पर्यावरण पूरे विश्व के लिए चिंता का कारण बना हुआ है। प्लास्टिक के आविष्कार ने दुनिया को रंग-बिरंगा तो बना दिया साथ ही अनेक परेशानियों को भी जन्म दे दिया।

आज तरल पदार्थ से लेकर भारी-भरकम सामानों की पैकिंग प्लास्टिक से बने थैले-थैलियों में होने लगी है क्योंकि यह सुविधाजनक साधन है। आज चारों ओर सड़क, बाग़-बगीचे, स्कूल-कॉलेज के मैदान सभी जगह प्लास्टिक के लिफ़ाफ़े उड़ते देखे जा सकते हैं। छोटे-बड़े सभी इन खाली पैकेटों को इधर-उधर फेंक देते हैं। आज भ्रमणकारियों के कारण पहाड़ भी इनसे अछूते नहीं रहे हैं। प्लास्टिक के ये लिफ़ाफ़े अनेक रोगों का कारण तो बन ही रहे हैं, ये सीवरों को भी जाम कर दे रहे हैं। कूड़ों में पड़े इन लिफ़ाफ़ों को खाकर पशु बीमार हो जाते हैं।

सड़कों पर पड़े इन लिफ़ाफ़ों को अन्य कूड़े के साथ जलाया जाता है तो इसका धुआँ साँस संबंधी रोग का कारण बनता है। इन्हें मलबे के साथ भराव के काम में लाना भी खतरनाक है क्योंकि प्लास्टिक ज़मीन में गलती नहीं है। यदि इस समस्या की ओर गंभीरता पूर्वक ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में यह समस्या और भी विकराल रूप धारण कर लेगी।

इस समस्या को समाप्त करने के लिए समाज को ही सचेत होना होगा और प्लास्टिक की थैलियों के निर्माण पर रोक लगाना होगा।

प्रात: कालीन भ्रमण

संकेत बिंदु-

- प्रात कालीन भ्रमण का समय
- प्रातः कालीन वातावरण
- भ्रमण के लाभ
- उपसंहार

भ्रमण’शब्द का अर्थ है-घूमना, इधर-उधर विचरण करना। प्रातः अथवा सायंकाल सैर करना व्यायाम का एक रूप है। प्रात:कालीन भ्रमण सबसे सरल, किंतु सबसे अधिक उपयोगी व्यायाम है। गर्मियों में लगभग साढ़े चार-पाँच बजे और सूदयों में पाँच-छह बजे का समय प्रात:कालीन सैर के लिए उपयुक्त है। बिस्तर छोड़ने में थोड़ा कष्ट का अनुभव होगा। गर्मियों की प्रात:कालीन हवा और उसके कारण आ रही प्यारी-प्यारी नींद का त्याग कीजिए। सर्दियों में रजाई का मोह छोड़िए और चलिए प्रात:कालीन सैर को। प्रात:कालीन सैर पर निकलते समय का वातावरण बहुत सुंदर होता है।

पक्षी अपने-अपने घोंसलों में फड़फड़ा रहे होते हैं। मंद-मंद सुगंधित पवन चल रही होती है। रात्रि के चंद्रमा और तारों की ज्योति समाप्त-प्राय होती है। भगवान भास्कर उदित होने की तैयारी कर रहे होते हैं। आकाश बड़ा स्वच्छ होता है। रजाई के मोह और प्यारी प्यारी नींद का त्याग और वह भी प्रात:कालीन सैर के लिए बहुत-ही लाभप्रद होता है। आलस्य आपसे पराजित हो जाता है। सारे दिन शरीर में स्फर्ति बनी रहती है।

तेज़ चलने से शरीर के प्रत्येक अंग की कसरत होती है। रक्त-न लियाँ खुलती हैं। स्वास्थ्य सुंदर बनता है। चेहरे पर रौनक आती है। हरी-भरी घास पर पड़ी ओस-बिंदुओं पर नंगे पाँव घूमने से आँखों की ज्योति बढ़ती है। प्रातःकालीन सैर स्वास्थ्य-निर्माण करने का सर्वोत्तम उपाय है। यह सस्ता भी है, मीठा भी। जिसके लिए न डॉक्टर को पैसे देने पड़ते हैं और न उसकी कड़वी दवाइयों का सेवन करना पड़ता है।

प्रात:कालीन भ्रमण से मनुष्य किसी भी कारण खोए हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर सकता है।

समाज सेवा

संकेत बिंदु-

- समाज का महत्व
- सेवा का महत्व
- समाज सेवकों के उदाहरण
- उपसंहार

मनुष्य विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। यह एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से मृत्यु तक इसका हर दिन समाज के सान्निध्य में बीतता है। वह समाज के रीति-रिवाज, भाषा, वेश-भूषा, खान-पान सबको अपना लेता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि समाज के बिना किसी बालक का व्यक्ति के रूप में विकसित होना संभव नहीं है। वह या तो मर जाएगा या पशु-तुल्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होगा। अतः समाज के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य या ऋण बनता है, जिसे पूरा करना हमारा कर्तव्य बनता है। समाज-सेवा शब्द सुनने में मधुर लग सकता है। किसी व्यक्ति की सेवा करना आसान हो सकता है, लेकिन समाज की सेवा काँटों की सेज पर सोना है। सेवा का मार्ग अधिक कठिन होता है।

सेवा करने का व्रत वही ले सकता है, जिसे मान-अपमान, हानि-लाभ, दुख और कष्ट की चिंता कतई नहीं। जो निष्काम भाव से सेवा करना चाहता है, वही समाज-सेवा कर सकता है। गीता का कर्मयोग यहाँ पूरी तरह खरा उतरता है। समाज की सेवा अपनी एक पद्धति होती है, उसकी अपनी एक शैली होती है। युगों से चली आ रही रूढ़ियाँ हैं। अंधविश्वास हैं, सांप्रदायिकता है, दृढ़धर्मिता है, परावलंबन की भावना है, जागृति की कमी हैं।

ऐसी परिस्थितियों में इन सबसे टक्कर लेकर समाज को सही रास्ते पर खींच लाना किसी वीर का ही कार्य हो सकता है। ऐसे महान समाजसेवी वीरों ने हमारे देश में जन्म लिया है। महर्षि दयानंद, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, बुद्ध, महावीर, मदर टेरेसा और भी न जाने कितने ऐसे नाम हैं जिन्होंने समाज-सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हम

सभी को अपने - अपने सामर्थ्य के अनुसार समाज सेवा के कार्य करने चाहिए ताकि हमारे समाज का संतुलित विकास हो सके।

विज्ञान और स्वास्थ्य

संकेत बिंदु -

- स्वास्थ्य जीवन के लिए वरदान
- संतुलित आहार का ज्ञान
- वस्त्र का निर्माण मशीनों का आविष्कार
- विज्ञान विनाशकारी भी

आज का युग विज्ञान का युग है । स्वास्थ्य के क्षेत्र में विज्ञान ने अनंत प्रगति की है ।स्वास्थ्य के बिना जीवन, जीवन नहीं है और विज्ञान के बिना स्वास्थ्य असंभव है। विज्ञान स्वस्थ रहने के गुण बताता है; रोगी होने पर रोग का निदान कर स्वस्थ बनाता है। मृत्यु के मुँह में पहुँचे मानव को जीवन प्रदान करता है। हायजीन विज्ञान की वह शाखा है, जो मानव-स्वास्थ्य की देखभाल करती है। स्वास्थ्य के लिए चाहिए पाचन क्रिया का ठीक होना। कारण, पाचन-क्रिया ठीक होगी तो वात, पित्त और कफ समान रूप से कार्य करेंगे। विज्ञान बताता है कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए संतुलित आहार लेना चाहिए। संतुलित आहार से तात्पर्य है-शरीर की संवृद्धि और विकास के पोषक तत्वों का सेवन।

स्वास्थ्य के लिए चाहिए सर्दी, गर्मी और वायु की साम्यावस्था। इसके लिए भवन की आवश्यकता है। स्वास्थोपयोगी-भवन की विशेषता बताता है विज्ञान। दूसरी ओर चाहिए वस्त्र । गर्मी के लिए ठंडे और सूदयों के लिए गरम । सूती, रेशमी, ऊनी, टेरीलीन. नाइलॉन. पोलियस्टर. चमडा आदि के अनेक वस्त्रों की रचना विज्ञान की वह प्रक्रिया तापमान से सुरक्षित रखते हैं। प्रकृति की लीला भी निराली है। अत्यधिक गर्मी और अत्यधिक सर्दी को मानव सहन नहीं कर पाता। गर्मी से विह्वल होता है, तो सर्दी से ठिठुरता है। इसके लिए विज्ञान ने वातानुकूलन की व्यवस्था प्रदान की। शरीर आखिर शरीर है।

बीमार होते क्या देर लगती है। सभी बीमारियों के लिए अनेक टेबलेट्स या लिक्विड इज़ाद किए गए हैं? ये सब विज्ञान की शाखा औषध विज्ञान की ही देन हैं । नगरों तथा महानगरों का मानव प्रदूषण से परेशान है। वाहनों से निकले धुएँ से उसका दम घुटता है। मल-मूत्र तथा कारखानों-मिलों के रासायनिक पदार्थों से युक्त नदी का जल मिलता है। कीटनाशक औषधियों से युक्त फल-सब्जियाँ और अन्न खाने को मिलते हैं। पर यह सच है कि विज्ञान ने केवल मानव के ही नहीं अपितु पशु-पक्षी जगत के स्वास्थ्य को भी सुरक्षा, संवर्धना तथा सचेतना प्रदान की है।

संयुक्त परिवार

संकेत बिंदु -

- एकल परिवार का बढ़ता चलन
- एकल परिवार और वर्तमान समाज
- संयुक्त परिवार की आवश्यकता
- बुज़ुर्गों की देखभाल
- उपसंहार

समय सतत परिवर्तनशील है। इसका उदाहरण है-प्राचीनकाल से चली आ रही संयुक्त परिवार का चलन कम होना और एकल परिवार का चलन बढ़ते जाना। शहरीकरण, बढ़ती महँगाई, नौकरी की चाहत, उच्च शिक्षा, विदेशों में बसने की प्रवृत्ति के कारण एकल परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसके अलावा बढ़ती स्वार्थ वृत्ति भी बराबर की ज़िम्मेदार है। इन एकल परिवारों के कारण आज बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण, माता-पिता के लिए दुष्कर होता जाता है।

जिस एकल परिवार में पति-पत्नी दोनों ही नौकरी करते हों, वहाँ यह और भी दुष्कर बन जाता है। आज समाज में बढ़ते क्रेच और उनमें पलते बच्चे इसका जीता जागता उदाहरण हैं। प्राचीनकाल में यह काम संयुक्त परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, ताई-बुआ इतनी सरलता से कर देती थी कि बच्चे कब बड़े हो गए पता ही नहीं चल पाता था। संयुक्त परिवार हर काल में समाज की ज़रूरत थे और रहेंगे।

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार और भी महत्त्वपूर्ण हैं। बच्चों और युवा पीढ़ी को रिश्तों का ज्ञान संयुक्त परिवार में ही हो पाता है। यही सामूहिकता की भावना, मिल-जुलकर काम करने की भावना पनपती और फलती-फूलती है। एक-दूसरे के सुख-दुख में काम आने की भावना संयुक्त परिवार में ही पनपती है। संयुक्त परिवार बुजुर्ग सदस्यों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है।

परिवार के अन्य सदस्य उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं जिससे उन्हें बुढ़ापा कष्टकारी नहीं लगता है। संयुक्त परिवार व्यक्ति को अकेलेपन का शिकार नहीं होने देते हैं। आपसी सुख-दुख बाँटने, हँसी-मजाक करने के साथी संयुक्त परिवार स्वतः उपलब्ध कराते हैं। इससे लोग स्वस्थ, प्रसन्न और हँसमुख रहते हैं।

मोबाइल फ़ोन के लाभ एवं हानि

संकेत बिंदु -

- विज्ञान की अद्भुत खोज
- फोनों की बदलती दुनिया
- संचार क्षेत्र में क्रांति
- लाभ और हानियां

विज्ञान का एक और वरदान मोबाइल फोन आज हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग बनता जा रहा है। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि हम टेलीफोन को हाथ में लेकर भी घूम सकेंगे। आज यह सुविधा हमें आश्चर्यचकित करती है। दुनिया के किसी कोने में खड़े रहकर हम किसी से भी बात कर सकते हैं। अफसर से लेकर सड़क पर ठेला लेकर चलने वाला, सामान सिर पर लेकर चलने वाला कुली, हर कोई आज इस सुविधा का फ़ायदा उठा रहा है। बच्चे से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक हर कोई मोबाइल फोन के जरिए अपने लोगों से सहज ही जुड़ा रहता है।

इस फोन से अन्य ढेरों सुविधाएँ प्राप्त हैं। घड़ी, कैलेंडर, अलार्म, तरह-तरह के गेम, फोन बुक, समाचार, चुटकुले, सभी तरह के संदेश सहज रूप से आप तक पहुँच सकते हैं। आज आप अपने सभी बिलों का भुगतान इससे पल भर में कर सकते हैं। अपने लिए रेल या हवाई जहाज़ की टिकट खरीद सकते हैं।

जहाँ इस सुविधा से लोगों को अपार फ़ायदा होता है, वहीं लोग इसका दुरुपयोग भी करते हैं। मोबाइल फोन पर कार चलाते समय बात करने वाले लोग स्वयं अपनी जान तो जोखिम में डालते हैं, साथ ही दूसरों के लिए ख़तरा बन जाते हैं। आज मोबाइल

फोन की स्थिति भी वही है। यदि इसका उपयोग सही रूप में किया गया तो यह हम सभी के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध होगा और दुरुपयोग करने पर अभिशाप।

विज्ञान ने मानव जीवन को विविध रूपों में प्रभावित किया है। शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ विज्ञान ने हस्तक्षेप न किया हो। समय-समय पर हुए आश्चर्यजनक आविष्कारों ने मानव जीवन को बदलकर रख दिया है। विज्ञान की इन्हीं अद्भुत खोजों में एक है मोबाइल फ़ोन जिससे मनुष्य इतना प्रभावित हुआ कि आप हर किशोर ही नहीं हर आयु वर्ग के लोग इसका प्रयोग करते देखे जा सकते हैं।

वास्तव में मोबाइल फ़ोन इतना उपयोगी और सुविधापूर्ण साधन है कि हर व्यक्ति इसे अपने पास रखना चाहता है और इसका विभिन्न रूपों में प्रयोग भी कर रहा है। संचार की दुनिया में फ़ोन का आविष्कार एक क्रांति थी। तारों के माध्यम से जुड़े फ़ोन पर अपने प्रियजनों से बातें करना एक रोमांचक अनभव था। शरू में फ़ोन महँगे और कई उपकर लाना-ले-जाना संभव न था।

हमें बातें करने के लिए इनके पास जाना पड़ता था पर मोबाइल फ़ोन जेब में रखकर कहीं भी लाया-ले जाया जा सकता है। अब यह सर्वसुलभ भी बन गया है। वास्तव में मोबाइल फ़ोन का आविष्कार संचार के क्षेत्र में क्रांति से कम नहीं है। आज मोबाइल फ़ोन पर बातें करने के अलावा फ़ोटो खींचना, गणनाएँ करना, फाइलें सुरक्षित रखना जैसे बहुत से काम किए जा रहे हैं क्योंकि यह जेब का कंप्यूटर बन गया है।

कुछ लोग इसका दुरुपयोग करने से नहीं चूकते हैं। असमय फ़ोन करके दूसरों को परेशान करना, अवांछित फ़ोटो खींचना जैसे कार्य करके इसका दुरुपयोग करते हैं। इसके कारण छात्रों की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा है। इसका आवश्यकतानुरूप ही प्रयोग करना चाहिए।

पत्र लेखन

पत्र लेखन क्या है?

एक व्यक्ति अपनी भावनाओं को एक कागज के पत्र पर लिखकर दूसरे व्यक्ति के सामने प्रकट करता है, उस प्रोसेस को पत्र लेखन कहा जाता है। पत्र लेखन को चिठ्ठी भी कहा जाता है।

पत्र कैसे लिखते हैं?

नीचे कुछ बिंदु दिए गए हैं जो पत्र लिखने के लिए बहुत ही आवश्यक है-

1. **सरलता से पत्र लिखें** - पत्र लेखन हमेशा सरल, सीधा और स्पष्ट भाषा में होना चाहिए । पत्र लेखन में कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
2. **पत्र लेखन में अपना उद्देश्य अच्छे से लिखें** - पत्र में अपना उद्देश्य को अच्छे से समझाएं, उसमें किसी भी प्रकार की शंका या जिज्ञासा नहीं होनी चाहिए।
3. **स्पष्टता के साथ पत्र लिखें** - पत्र के द्वारा हम जो भी बात बताना चाहते हैं वह स्पष्ट वाक्य में लिखें, उसके अंदर सरल और सीधे वाक्यों का प्रयोग कीजिए।
4. **पत्र लेखन हमेशा प्रभावित होना चाहिए** - जब भी सामने वाले हमारा पत्र लेखन अच्छे से समझ जाता है और पढ़ पाता है तब हमारा पत्र प्रभावित कहलाता है। पत्र लेखन में अच्छे शब्द और मुहावरों का प्रयोग करके उसे प्रभावशाली बना सकते हैं।
5. **संक्षिप्तता से भरा पत्र लेखन होना चाहिए** - पत्र लेखन में हमेशा काम की चीजें लिखी होनी चाहिए। अनावश्यक शब्दों का प्रयोग होना उचित नहीं होता।
6. **पत्र लेखन में मौलिकता होना आवश्यक है** - मौलिकता का गुण बहुत ही अनिवार्य है जब हम पत्रलेखन लिखते हैं । पत्र लेखन लिखते समय पढ़ने वाले के विषय के बारे में ज्यादा से ज्यादा लिखें ।

पत्र प्रेषक - पत्र भेजने वाला को पत्र प्रेषक कहते हैं

पत्र प्राप्त कर्ता - पत्रों को प्राप्त करने वाले को पत्र प्राप्त कर्ता कहते हैं ।

पत्र लेखन मैं अलग-अलग प्रकार के अंग होते हैं । पत्र लेखन लिखते समय कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत ही जरूरी है ।

1. **पत्र प्रेषक का नाम और उस दिन की दिनांक** - ऊपर बताए गए दोनों चीजों को दाएँ कोने में लिखा जाता है । साथ ही जब भी हम किसी व्यवसाय और कार्यालय को पत्र लिखते हैं तब प्रेषक का नाम लिखना भी अनिवार्य है
2. **पत्र पाने वाले का नाम और पता** - प्रेषक लिखने के बाद पत्र पाने वाले के बारे में लिखा जाता है । पत्र पाने वाले के बारे में नीचे बताए गए चीजों लिखें
    - पत्र पाने वाले का नाम
    - उनका पद नाम
    - कार्यालय का नाम
    - वहां का स्थान
    - वहां का शहर , जिला और साथ में पिन कोड भी लिखें
3. **पत्र लेखन लिखने का विषय संकेत** - विषय संकेत में पत्र लेखन कौन से विषय में लिखा जा रहा है उसकी जानकारी देना बहुत ही आवश्यक है।
4. **पत्र लेखन में संबोधन करना आवश्यक है** - विशेषण के लिखने के बाद पत्र के बाई तरफ संबोधन का प्रयोग होता है। जैसे:
    1. प्रिय भाई

2. प्रिय मित्र
3. आदरणीय
    1. **बड़ों के लिए नीचे बताए गए शब्दों का प्रयोग करते हैं**:
       पूजनीय
       मान्यवर
       आदरणीय
       माननीय

5. **पत्र लेखन में अभिवादन करें** - कार्यालय और व्यावसायिक जगह पर जब हम पत्र लिखते हैं तब अभिवादन का प्रयोग नहीं करते। हमारे रिश्तेदारों को अभिवादन शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे-
    - सादर
    - नमस्ते
    - नमस्कार
    - प्रणाम
6. **मुख्य सामग्री लिखें** - संबोधन लिखने के बाद हम पत्र लेखन में मूल सामग्री का प्रयोग करते हैं इसके अंदर समय , परिस्थिति के अनुसार विषय लिखते हैं
7. **पत्रलेखन में समाप्त के समय समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करें** - जब हम पत्र लेखन का समापन करता है तभी कुछ शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे:
    - आपका
    - आपका प्रिय
    - आपका आज्ञाकारी
    - स्नेही
    - भवदीय
8. **हस्ताक्षर और नाम भी लिखें** - समापन शब्दों के बाद पत्र लिखने वालों को हस्ताक्षर और अपना पूरा नाम लिखना आवश्यक है।

पत्र लेखन के प्रकार

1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र

१- अपनी बहन को पत्र लिखकर योगासन करने के लिए प्रेरित कीजिए।

परीक्षा भवन,
अ. ब. स.

दिनांक- 27 अप्रैल, 2023

प्रिय बहन,
सदा खुश रहो।

मैं यहाँ कुशल हूँ, आशा है वहाँ पर भी सभी कुशल होंगें। अभी-अभी मुझे पिता जी का पत्र प्राप्त हुआ और उनसे घर के सभी समाचार ज्ञात हुए। साथ ही साथ यह भी पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखा करो। तुम्हें तो पता ही है कि पहला सुख स्वस्थ शरीर को कहा जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि तुम हमेशा योगासन किया करो। भाग-दौड़ भरी जिंदगी में व्यस्त रहने के कारण कोई भी स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देता। योग एक ऐसा माध्यम है जो शरीर को स्वस्थ रखने में महत्पूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए मैं तुम्हें यही सलाह दूँगी कि तुम नियमित रूप से योगा किया करो जिससे तुम्हारा शरीर चुस्त और फुर्तीला हो जाएगा और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ेगी।
आशा करती हूँ कि तुम मेरी इस सलाह को मानोगी तथा अपने जीवन में योग को महत्त्व दोगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम जल्द ही स्वस्थ हो जाओगी। माता-पिता को प्रणाम और भाई को मेरा प्यार देना।

तुम्हारी बहन
आशा

२ -चाचा को जन्मदिन के उपहार का धन्यवाद करने के लिए पत्र लिखें-

चन्द्रशेखर हॉस्टल,
समरहिल, शिमला,
हिमाचल प्रदेश।

दिनांक 01.06.2023

पूजनीय चाचा जी,
चरणस्पर्श

मैं यहां पर कुशल मंगल हूँ, और आशा करता हूँ कि आप भी वहां कुशल होंगे। आदरणीय चाचा जी पिछले सप्ताह मेरा जन्मदिन था और मुझे वह पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपने न आने का कारण बताया था, मैं उस बात को लेकर बहुत ही ज्यादा नाराज हूँ। मैं आपके आने की उम्मीद लगाकर बैठा था और आपने न आकर सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया।
आपने उस पत्र के साथ मेरे जन्मदिन का उपहार भी भेजा था, हालांकि कोई भी उपहार आपकी मौजूदगी से ज्यादा शायद ही मुझे खुशी देता, लेकिन यह उपहार पाकर मैं बहुत ज्यादा खुश और संतुष्ट महसूस कर रहा हूं। चाचाजी आप यह जानते हैं कि मैं समय का कितना अधिक पाबन्द हूँ और इसलिए आपने यह घड़ी मुझे भेंट स्वरूप देकर, मेरे इरादों को और भी ज्यादा मजबूत किया है। आपकी यह घड़ी मुझे अनुशासन और समय के महत्व के बारे में सदैव बताती रहेगी। मैं यह घड़ी पाकर बहुत ज्यादा खुश हूं और यह प्रार्थना करता हूं कि मेरे अगले जन्मदिन पर आप भी मौजूद रहें।
चाची जी को चरण स्पर्श कहियेगा और नेहा और अभय को मेरा बहुत सारा स्नेह दीजिएगा। छुट्टियाँ होते ही मैं आप सभी से अवश्य ही मिलने आऊँगा।

आपका आज्ञाकारी भतीजा

३-मित्र को परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र

परीक्षा भवन,
अ. ब. स.

20-जून-2023

प्रिय मित्र दीपक,
सदा सुखी रहो।

मैं कुशल-मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि वहाँ पर भी सभी कुशल-मंगल होंगें। काफी समय हो गया था न तो तुमसे बात हो पाई और न ही तुम्हारे घर पर किसी से बात कर पाया।
तुम्हारे पिता को फोन किया, तो उनसे ज्ञात हुआ की तुम बोर्ड परीक्षा में मुरादाबाद जिले में प्रथम आये हो। इस समाचार को सुनकर मन ख़ुशी से भर गया। मुझे तो पहले से ही विश्वास था की तुम प्रथम श्रेणी में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होंगे लेकिन यह जानकार की तुमने परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ-साथ जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है ,मेरी प्रसन्नता की सीमा न रही। इस परीक्षा के लिए तुम्हारे परिश्रम और नियमितता ने ही वास्तव में ऊँचाई तक पहुँचाया है। मुझे पूरी आशा थी की तुम्हारा परिश्रम रंग दिखायेगा और मेरा अनुमान सच साबित हुआ। तुमने प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया की दृढ संकल्प और कठिन परिश्रम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।
मैं सदैव यह कामना करूँगा की तुम्हें जीवन में हर परीक्षा में प्रथम आने का सौभाग्य प्राप्त हो और तुम इसी प्रकार परिवार और विद्यालय का गौरव बढ़ाते रहो। इस प्रकार मेहनत करते रहो और सभी को प्रसन्नता प्रदान करते रहो।

तुम्हारा मित्र
आकाश

४-आपका एक मित्र शिमला में रहता हैं। आप उसके आमंत्रण पर ग्रीष्मावकाश में वहाँ गए थे और प्राकृतिक सौंदर्य का खूब आनंद उठाया था। घर वापस लौटने पर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।

दिनांक 23 मार्च 20XX

प्रिय मित्र नीरज,
सस्नेह अभिवादन,

मैं कुशलतापूर्वक दिल्ली पहुँच गया हूँ। आशा है तुम भी ठीक होंगे। बहुत बहुत धन्यवाद मित्र। इस ग्रीष्मकाल के अवकाश को तुमने यादगार बना दिया। मैंने स्वपन में भी इस तरह का नजारा नहीं देखा जो तुमने मुझे शिमला में दिखाया। तुम्हारे व तुम्हारे परिवार के सहयोग द्वारा ही हमारी यह मात्रा यादगार बनी। सच में तुम तो प्रकृति की गोद में ही रहते हो। इतना सुंदर दृश्य तुमने हमें पहाड़ियों से दिखाया जैसे स्वर्ग हो।

मैं अपने शब्दों द्वारा भी उस प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन नहीं कर सकता। यहाँ आकर के मुझे दोबारा तुम्हारे साथ बिताए गए समय का स्मरण हो रहा है। मेरे माता-पिता जी भी तुम्हारे व तुम्हारे परिवार वालों को याद कर रहे हैं। मेरी माता तो तुम्हारी माता जी की मित्र ही बन गई थी। सच में दो परिवारों के साथ मिलकर की गई यात्रा यादगार ही बन जाती है। आशा है तुम भी परिवार सहित दिल्ली आओ तो हम सभी साथ मिलकर मथुरा-वृंदावन घूमने चलेंगे। चाचा जी व चाची जी को मेरा प्रणाम कहना एवं बहन को स्नेह देना। तुमसे पुनः मिलने की आशा में।

तुम्हारा मित्र
ऋषि

५-आपकी बहन कस्बे से अपनी पढ़ाई पूरी कर आगे शिक्षा के लिए बड़े नगर में गई है नगर के वातावरण में संभावित परेशानियों की चर्चा करते हुए उनसे बचने के तरीके उसे पत्र द्वारा समझाइए।

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।

दिनांक- 15 मार्च 20XX

प्रिय बहन अर्पिता
सस्नेह,

आशा करती हूँ कि तुम कुशल मंगल होगी और चिंताओं से मुक्त अध्ययनरत होगी।
प्रिय अर्पिता! माँ से कल फोन पर वार्तालाप हुआ और मुझे पता चला कि तुम पढ़ाई करने के लिए नगर गई हो। मुझे ख़ुशी है कि तुम शिक्षा प्राप्त करने के लिए तत्पर हो, किन्तु अब कस्बे से दूर नगरीय जीवन में तुम्हारा प्रवेश हो गया है, जहाँ का वातावरण और जीवन शैली बिल्कुल है। ध्यान रखना, कि व्यक्तित्व की परख बाह्य शृंगारिक चीजों से नहीं होती बल्कि शालीनता से होती है। नगर की चकाचौंध और भागदौड़ से बचकर रहना। स्वयं को फैशन की दौड़ में शामिल मत करना वरना अपने उद्देश्य से भटक सकती हो। नगर के लोगों से सावधान रहते हुए दूरी बनाए रखना। कस्बे में अपने लोगों के बीच रहकर अपनेपन की आदत बनाए रखना अच्छा था, परन्तु नगर में ऐसे लोग बहुत मिलेंगे जो सिर्फ अपना स्वार्थ पूरा करना जानते हैं। विद्यार्थी जीवन का समय अमूल्य होता है। इस समय को न गंवाते हुए अपने उद्देश्य को पूरा करना और परिवार का सम्मान बढ़ाना। आगे तुम स्वयं समझदार हो। आशा है मेरी सलाह को तुम जरूर समझोगी।

तुम्हारी बड़ी बहन
क.ख.ग

औपचारिक पत्र

१-विद्यालयों में योगपत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 20,
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर।

दिनांक 5 जनवरी, 20XX

विषय- योग-शिक्षा का महत्त्व।

महोदय,
जन-जन की आवाज, जन-जन तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ। योग शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगे। योग शिक्षा उनके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा बाहर निकाल सकते हैं। जिससे सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर, वह स्वयं को ऊर्जावान महसूस कर सकते हैं। योग के द्वारा कई। लाइलाज बीमारियों को भी जड़ से समाप्त किया जा सकता है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए जीवनदायिनी औषधि की भाँति है।
आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।

सधन्यवाद!

भवदीया
नीतू
आगरा।

२-अपने क्षेत्र में जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
आगरा नगर निगम,
आगरा।

दिनांक 20 जनवरी, 20XX

विषय- जलभराव की समस्या हेतु।

महोदय,

मैं लोहामंडी क्षेत्र की निवासी हैं तथा आपका ध्यान अपने क्षेत्र में जलभराव से हो रही समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। वर्षा ऋतु के पश्चात् जगह-जगह सड़कों पर जलभराव हो गया जिसके कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है साथ ही आने-जाने वालों की गाड़ियों में पानी चले जाने के कारण खराब हो जाती हैं तथा वे दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। जल भराव से संपूर्ण क्षेत्र में दुर्गंध फैल रही है। ऐसा नहीं है कि हमारे क्षेत्र में सफाई कर्मचारी नहीं आते अपितु वे नियमित रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करते थे, परंतु वे उस जलभराव की समस्या का समाधान नहीं करते हैं। कई बार मौखिक रूप से क्षेत्रीय सफाई निरीक्षक से भी कहा तथा लिखित रूप में भी इसकी चर्चा की, परंतु किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। वर्षा के पानी का भराव गंदी नालियों और सफाई न होने के कारण पूरे क्षेत्र में मलेरिया के फैलने की भी संभावना बढ़ गई है। चिंता का विषय है।

अतः आप से अनुरोध है कि लोहामण्डी क्षेत्र के निवासी की इस समस्या के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों तथा कर्मचारियों को उचित निर्देश देने की कृपा करें। जिससे कि पूरा क्षेत्र इस जलभराव की समस्या से बच सके।
मुझे आशा है कि आप हमारे क्षेत्र की सफाई करवाने के लिए तुरंत आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

भवदीया
अ ब स

३-परीक्षा के दिनों में विद्युत आपूर्ति नियमित न होने से हो रही कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए विद्युत प्रदाय संस्थान के मुख्य प्रबंधक को तुरंत इसे ठीक करने का अनुरोध कीजिए।
सेवा में,
विद्युत प्रदाय संस्थान,
रोहिणी सेक्टर-7, दिल्ली।

दिनांक:10 अप्रैल 20XX

विषय: विद्युत आपूर्ति नियमित न होने की समस्या
निवेदन यह है कि हम रोहिणी सेक्टर-7 के निवासी बिजली की अनियमितता से बहुत परेशान हैं। आजकल बच्चों की परीक्षाएँ चल रही हैं। उनकी वर्ष भर की मेहनत इन्हीं दिनों की पढ़ाई पर निर्भर है। इन दिनों बिजली घण्टों-घण्टों तक गुल हो जाती है। इस कारण बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। हमारा निवेदन है कि कृपा करके विद्युत की आपूर्ति नियमित करें।
धन्यवाद!

भवदीय,
श्रीराम गुप्ता
अध्यक्ष सुधार समिति
सेक्टर-7 रोहिणी दिल्ली।

४-आपके क्षेत्र में डेंगू फैल रहा है। जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

19-कौशलपुर,
कानपुर।

दिनांक : 29-3-20XX

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी।

महोदय,
सविनय निवेदन इस प्रकार है कि मैं वाराणासी क्षेत्र का निवासी हूँ इस पत्र के द्वारा आपका ध्यान अपने क्षेत्र की स्वास्थ्य समस्या की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में डेंगू प्रबल रूप से फैलता ही जा रहा है जिस कारण अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं की सख्त कमी है। उचित स्वास्थ्य सुविधाएँ और डॉक्टरों की कमी के कारण मरीजों की मृत्यु हो रही है।
अतः आप से निवेदन है कि हमारे क्षेत्र के अस्पताल में उचित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए और दवाएँ उपलब्ध करवाई जाए जिसमें डेंगू से पीड़ित मरीजों की जान बचाई जा सके।
यदि आपने मेरी समस्या पर अमल किया तो मैं और मेरे क्षेत्र के निवासी आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
सधन्यवाद !

भवदीय,
नन्द कुमार

५-'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने की अपील करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

425, मुखर्जी नगर,
नई दिल्ली।

दिनांक 5 मई, 20XX

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली।

विषय- 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने हेतु।

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से सभी लोगों का ध्यान 'स्वच्छ भारत अभियान' की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। गाँधी जी की 145 वीं जयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान के आरम्भ करने की घोषणा की थी। इस स्वच्छ्ता अभियान में हम सभी भारतीयों का कर्त्तव्य है कि हम इस अभियान को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान दें। 'स्वच्छ भारत अभियान' वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों स्तर पर अत्यधिक लाभप्रद होगा।

अतः मेरी सभा से अपील है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए स्वयं को, अपने घर को, अपने पड़ोस को, अपने मोहल्ले को, अपने जिले को, अपने राज्य को और अपने देश को स्वच्छ रखने में सहयोग दें।

धन्यवाद।

भवदीया
ऋतिका

स्ववृत्त लेखन

स्ववृत्त लेखन किसे कहते हैं ?

आवेदक का वैयक्तिक / स्ववृत्त किसी व्यक्ति का संक्षिप्त और सारगर्भित विवरण है जिसमें व्यक्ति"विवरण, शैक्षणिक योग्यता अंक प्रतिशत, कार्य अनुभव आदि सभी समाहित होते हैं। अंग्रेजी में इसे BIO DATA कहा जाता है।

स्ववृत्त में क्याक्या विशेषताएँ होती है-?

स्ववृत्त में ईमानदारी होनी चाहिए -**1** । अतिशयोक्ति बाते अपेक्षित नहीं है।

.2अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पहलुओं पर बल देना चाहिए।.

.3स्ववृत्त आवश्यकता से अधिक नहीं होना चाहिए ।

.4परिचय में नाम स्थायी घर का पता ,पत्र व्यवहार का पता,जन्मतिथि आयु,, टेलीफोन नंबर , ईमेल आईडी इत्यादि लिखें।

.5शैक्षिक योग्यता में विद्यालय का नाम , बोर्ड का नाम , विश्वविद्यालय का नाम, परीक्षा का वर्ष , प्राप्तांक, श्रेणी एवम् प्रतिशत का उल्लेख करें

.6 अपनी विशेष रुचि एवम् अनुभव के प्रमाण पत्र का उल्लेख करें और स्ववृत के साथ संलग्न करें।

.7स्ववृत्त साफ सुथरा एवम् सुंदर लेख में होना चाहिए।

उदाहरण पद पर आवेदन करने के लिए स्ववृत्त (हिन्दी) पीजीटी :1 -

वैयक्तिक विवरण -

नाम जगदीश लाल -

पिता का नाम प्रेमलाल -

माता का नाम किशना -

जन्मतिथि 30 -जुलाई 1994

वर्तमान पता 525 -ए, गली नंबर 9, गीता कॉलोनी, दिल्ली 110011

दूरभाष 12345678-011

मोबाइल संख्या 9999999999

ईमेल -jagdishlal123@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय बोर्ड /	विषय
1	दसवीं	2008	CBSE	हिन्दी ,सामाजिक विज्ञान ,विज्ञान ,अंग्रेजी, गणित
2	बारहवी	2010	CBSE	हिन्दीनागरिकशास्त्र ,अंग्रेजी, अर्थशास्त्र,इतिहास
3	स्नातक	2013	University of Delhi	हिन्दी अर्थशास्त्र , इतिहास,
4	बी एड .	2015	University of Delhi	हिन्दी इतिहास,
5	परास्नातक	2017	University of Delhi	हिन्दी

अन्य योग्यताएँ -

- कंप्यूटर में वर्ष 1का डिप्लोमा
- मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा माह का 6
- हिंदी अंग्रेजी जर्मनी स्पेनिश भाषा की जानकारी।
- योगा के क्षेत्र में माह का प्रशिक्षण। 6

उपलब्धियाँ -

- विद्यालय स्तर पर एनसीसी में उच्च प्रशिक्षण।
- भारत को जानो प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर द्वितीय पुरस्कार।
- गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने का पुरस्कार।

कार्येत्तर गतिविधियां और अभी रुचियाँ-

- योगाभ्यासशास्त्रीय संगीत गायन वादन में विशेष रूचि। ,क्रिकेट ,
- सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजन करने का अनुभव तथा रुचि ।
- आधुनिक तकनीकों का प्रयोग सीखना तथा समाज के लिए उपयोगी बनाना।

उदाहरण :2क्लर्क के पद पर आवेदन करने के लिए स्ववृत्त ।

वैयक्तिक विवरण -

नाम गीतांजली शर्मा -

पिता का नाम कृष्णलाल शर्मा -

माता का नाम मीना शर्मा -

जन्मतिथि 15 -अगस्त 1990

वर्तमान पता 16/256 -गोपाल गंज, भोपाल, मध्य प्रदेश।

दूरभाष 9999999999 - मोबाइल संख्या 12345678-0755 -

ईमेल -geeta_sharma@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय / बोर्ड	विषय	प्रतिशत
1	दसवीं	2005	CBSE	हिन्दी ,सामाजिक विज्ञान, विज्ञान,अंग्रेजी, गणित	%65
2	बारहवी	2007	CBSE	हिन्दी अर्थशास्त्र,इतिहास,अंग्रेजी,	%69
3	डिप्लोमा	2009	आइटीआई	हिन्दी शॉर्ट्हैन्ड	%77

अन्य योग्यताएँ -

- कंप्यूटर में एक वर्ष का डिप्लोमा।
- हिंदी, अंग्रेजी भाषा की जानकारी।
- हिन्दी टाइपिंग गति शब्द प्रति मिनट । 30
- अंग्रेजी टाइपिंग गति शब्द प्रति मिनट। 40

उपलब्धियाँ -

- 'मेरे हाथ का हुनर प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार।

कार्येत्तर गतिविधियां और अभी रुचियाँ -

- शास्त्रीय संगीत, गायन, वादन में विशेष रूचि। सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजन करने का अनुभव तथा रुचि।
- आधुनिक तकनीकों का प्रयोग सीखना तथा समाज के लिए उपयोगी बनाना।

उदाहरण 3आंगनवाड़ी के पद पर आवेदन करने के लिए स्ववृत्त। :

वैयक्तिक विवरण -

नाम प्रतिभा शर्मा -

पिता का नाम विराज शर्मा -

माता का नाम शशि शर्मा -

जन्मतिथि 07 -जुलाई 1997

वर्तमान पता 19/287 -रानी गंज, प्रतापगढ़ , उत्तर प्रदेश।

दूरभाष 12345678-05342 -मोबाइल संख्या 9999999999 -

ईमेल -pratibhasharma789@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय / बोर्ड	विषय	प्रतिशत
1	दसवीं	2012	CBSE	हिन्दी ,सामाजिक विज्ञान, विज्ञान,अंग्रेजी, गणित	%60
2	बारहवी	2014	CBSE	हिन्दी अर्थशास्त्र,इतिहास,अंग्रेजी,	%60
3	बी ए	2016	डी ए वी कॉलेज अजमेर	हिन्दी इतिहास ,संस्कृत ,	%60

अन्य योग्यताएँ -

- कंप्यूटर का ज्ञान
- हिंदी, अंग्रेजी भाषा की जानकारी।

उपलब्धियाँ -

- राज्य स्तर पर गायन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान ।

कार्येत्तर गतिविधियां और अभी रुचियाँ -

- समाज सेविका के रूप में कार्यरत ।
- शास्त्रीय संगीत, गायन, वादन में विशेष रूचि।

उदाहरण 4 :चिकित्सक पद के लिए आवेदन करने के लिए स्ववृत्त।

वैयक्तिक विवरण -

नाम अंजली गुप्ता डॉ -

पिता का नाम विकास गुप्ता -

माता का नाम शशि गुप्ता -

जन्मतिथि 17 -जुलाई 1997

वर्तमान पता 19/87 -रानी गंज, कानपुर , उत्तर प्रदेश।

दूरभाष 12345878-0512 -मोबाइल संख्या 9999998899 -

ईमेल -anjaligupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय / बोर्ड	विषय	प्रतिशत
1	दसवीं	2006	CBSE	हिन्दी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान,अंग्रेजी, गणित,	% 80
2	बारहवी	2008	CBSE	जीव विज्ञान रसायन ,भौतिक विज्ञान , गणित ,अंग्रेजी ,विज्ञान	% 87
3	एम बी बी एस	2014	मेडिकल कॉलेज , जयपुर	प्री ,पैरा क्लीनिकल, क्लीनिकल-anatomy ,biochemistry पैथोलॉजी, गायनोकोलॉजी । सर्जरी	% 89
4	एम एस)gyn (	2016	मेडिकल कॉलेज , जयपुर	गायनोकोलॉजी	% 90

अन्य योग्यताएँ अन्य संबंधित योग्यताएँ -

- फोर्टीज अस्पताल में रेजीडेंट के पद पर (2020-2018) वर्ष के लिए कार्यरत् 3, वर्तमान में एपेक्स अस्पताल में कार्यरत्
- स्वास्थ्य संबंधी कैंपों में प्रतिभागिता लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन
- विज्ञान प्रदर्शनी में सक्रिय भागीदारी

उपलब्धियों

- विज्ञान क्विज विद्यालयी स्तर प्रथम पुरस्कार (2007)
- अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान प्रतियोगिता (2009) द्वितीय पुरस्कार (क्लीव लैंड में आयोजित)

कार्येत्तर गतिविधियों तथा अभिरुचियों

- स्वास्थ्य संबंधी पत्रिकाओं का नियमित पठन
- स्वास्थ्य संबंधी कैंपों का आयोजन व उनमें सक्रिय भागीदारी
- स्वास्थ्य संबंधी कार्यशालाओं में भाग लेकर जनसामान्य का मार्गदर्शन-

संदर्भित व्यक्तियों का विवरण

- डॉमहावीर प्रसाद जैन ., एसोसिएट, प्रोफेसर एसमेडिकल कॉलेज .एस.एम., जयपुर।
- डॉ .सुशीला खुटेटों, वरिष्ठ डॉक्टर (प्रसूति विभाग)
- फोर्टीज हॉस्पिटल**, जयपुर।**

उदाहरण 5 अंग्रेजी अध्यापिका पद के लिए आवेदन करने के लिए स्ववृत्त। :

वैयक्तिक विवरण -

नाम अंबिका गुप्ता -

पिता का नाम विकास गुप्ता -

माता का नाम रश्मी गुप्ता -

जन्मतिथि 17 -मार्च 1991

वर्तमान पता 19/87 54 -किशनगंज, कानपुर , उत्तर प्रदेश।

दूरभाष 127845878-0512 -मोबाइल संख्या 9789998899 -

ईमेल -ambikagupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय / बोर्ड	विषय	प्रतिशत
1	दसवीं	2012	CBSE	हिन्दीसामाजिक विज्ञान ,विज्ञान,अंग्रेजी, गणित	% 65
2	बारहवी	2014	CBSE	हिन्दी अर्थशास्त्र,इतिहास,अंग्रेजी,	% 67
3	बी ए	2017	राजस्थान कॉलेज , जयपुर	अंग्रेजी इतिहास,भूगोल,	% 69
4	बी .एड.	2019	राजस्थान कॉलेज , जयपुर	अंग्रेजी	% 70

- **अन्य संबंधित योग्यताएँ**
- कंप्यूटर का ज्ञान
- हिंदी, अंग्रेजी भाषा की जानकारी।

उपलब्धियाँ -

- वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

कार्येत्तर गतिविधियां और अभी रुचियाँ -

- **दो वर्ष का अनुभव कानपुर, राजकीय बालिका इन्टर कॉलेज -**
- शास्त्रीय संगीत, गायन, वादन में रूचि।

उदाहरण :6कंपनी में मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव पद के आवेदन करने के लिए स्ववृत्त।

वैयक्तिक विवरण -

नाम नेहा शर्मा -

पिता का नाम विजय शर्मा -

माता का नाम रश्मी शर्मा -

जन्मतिथि 22 -मार्च 1995

वर्तमान पता , 402 मकान नंबर -सेक्टर 14, गुरुग्राम हरियाणा,

दूरभाष 127845878-0124 -मोबाइल संख्या 9789998899 -

ईमेल -neha34@gmail.com

शैक्षणिक योग्यता -

क्रम संख्या	कक्षा	वर्ष	विद्यालय बोर्ड /	विषय	प्रतिशत
1	दसवीं	2012	CBSE	हिन्दी ,सामाजिक विज्ञान ,विज्ञान,अंग्रेजी, गणित	% 65
2	बारहवी	2014	CBSE	हिन्दी अर्थशास्त्र,इतिहास,अंग्रेजी,	% 67
3	बी कॉम	2017	हरियाणा विश्वविद्यालय	अंग्रेजी इतिहास,भूगोल,	% 69
4	एमबीए	2019	हरियाणा विश्वविद्यालय	मार्केटिंग	% 75

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान
- कंप्यूटर का **ज्ञान (ऑफिस .एस.इंटरनेट व एम)**

उपलब्धियाँ

- आशुभाषण प्रतियोगिता 2011 द्वितीय पुरस्कार वर्ष (स्तरीय-राज्य)
- अखिल भारतीय वादविद्यालय में हैड गर्ल ,में प्रथम पुरस्कार (2013) विवाद प्रतियोगिता-

कार्येत्तर गतिविधियाँ तथा अभिरुचियाँ

- **समाचार पत्र व व्यापारिक-पत्रिकाओं का नियमित पठन**
- **देश भ्रमण का शौक**
- **इंटरनेट सर्फिंग**
- **ऐमज़ान कंपनी में दो वर्ष का अनुभव**

संदर्भित व्यक्तियों का विवरण

- **डॉरमेश चंद्र शर्मा ., प्रोफेसर, एमविश्वविद्यालय .एस .डी., हरियाणा**
- **श्रीमती रश्मि मिश्रा, प्रिंसिपल, ब्लू बेल्स स्कूल, गुरुग्राम।**

ई मेल-लेखन

- ई-मेल की परिभाषा इलेक्ट्रॉनिक मेल। यह एक डिजिटल संचार पद्धति है । इंटरनेट के माध्यम से, हम कुछ ही मिनटों में जानकारी और संदेश भेज सकते है ।

ई-मेल-लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान दें -

- भाषा स्पष्ट एवं सारगर्भित
- संक्षिप्त एवं बोधगम्य
- विषय संबंद्ता
- शिष्टाचार एवं औपचारिकता का निर्वहन

जानकारी

- प्रेषक (From) : मेल भेजने वाले का ई-मेल पता।
- प्रेषिती (To) : मेल प्राप्त करने वाले का ई-मेल पता।
- संबंधित जानकारी लिखने से पूर्व अभिवादन शब्द का प्रयोग करें ।
- विषय - संक्षिप्त रूप लिखें ।
- यदि कोई फ़ाइल अटैच कर रहे है तो संलग्नक प्रति लिखे

प्रारूप एवं लेखन

1-आप राज गोपाल है,आपके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है ,आप ई-मेल द्वारा अपने विद्यालय के प्राचार्य महोदय को शुल्क से मुक्ति पाने हेतु आवेदन भेजिए ।

प्रेषक	rajgopal@gmail .com
प्रेषिती	kv 123@gmail .com
बिषय	शुल्क से मुक्ति पाने हेतु

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य
के वि,नं -1 .
कानपुर,उत्तर प्रदेश
महोदय ,

सविनय निवेदन है कि मैं राज गोपाल कक्षा दसवीं का छात्र हूँ । मेरे पिता जी फल बेचते है, फल बेचने से इतनी आमदनी नहीं होती कि मेरी फीस भर सके ,मेरे दो भाई बहन भी इसी विद्यालय में पढ़ते है । मेरे पिता जी को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है । अत: आपसे प्रार्थना है कि मेरा शुल्क माफ करने की कृपा करें ।

धन्यवाद ।

आपका छात्र
हस्ताक्षर ---------
राज गोपाल
कक्षा दसवीं
के वि, नं -1 .
कानपुर, उत्तर प्रदेश
दिनांक-------

-2हिन्दी व्याकरण पुस्तक मगवाने हेतु मेल कीजिए-को ई "कनिका पुस्तक भंडार"।

प्रेषक	aanandravat14 @gmail .com
प्रेषिती	kanika @gmail .com
बिषय	पुस्तक मगवाने हेतु

सेवा में,
कनिका पुस्तक ,विक्रेता
नई ,दिल्ली

मैं आनंद कक्षा दसवीं का छात्र ,कर्नाटक के शहर गदक का निवासी हूँ मेरे शहर में हिन्दी व्याकरण की पुस्तक उपलब्ध नहीं है ।हिन्दी व्याकरण पुस्तक न होने के कारण अध्ययन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है ।   अत:आपसे निवेदन है कि नीचे लिखे गए अवासीय पता पर "नवयुग हिन्दी व्याकरण" पुस्तक भेजने की कृपा करें ।

धन्यवाद ।
भवदीय
हस्ताक्षर ----
पता -मकान नं ,45
लाइन -7
गदक, कर्नाटक
दिनांक -------

-3आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्यमंत्री -को dfpd@gov.in पर एक ईमेल लिखकर इस समस्या के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए ¡

प्रेषक	pawan@mycbseguide.com
प्रेषिती	dfpd@gov.in
बिषय	खाद्य पदार्थों में मिलावट कि समस्या के संदर्भ में -

सेवा में ,
मान्वयर खाद्य-मंत्री
खाद्य-मंत्रालय ,सरकार
कर्नाटक

महोदय,

जागरूक नागरिक होने के नाते मैं इस बात से अवगत करना चाहता हूँ कि त्योहारों के दिनों में जो खाने का सामान दुकानदारों द्वारा बाजार में बेचे जा रहे है उनमें दुकानदार काफी कुछ ऐसा सामान मिला दे रहे है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी हानिकारक है । खाने का बाद काफी लोग बीमार हो रहे है । अत: आपसे निवेदन है कि विभाग के कर्मचारियों को निर्देशित करें और छापा मारकर खाद्य सामानों की जाँच करवाने की कृपया करें ।

धन्यवाद ।
भवदीय
हस्ताक्षर ----
पवन
दिनांक-------

-4आप अवनि है आपको बहन के विवाह के लिए तीन दिन का अवकाश चाहिए मेल भेजिए- अपने विद्यालय के प्राचार्य को ई, ।

प्रेषक	Avini26@gmail.com
प्रेषिती	Kvraipur@gmail.com
विषय	अवकाश हेतु आवेदन -

सेवा में,
श्रीमान प्राचार्य
के वि रायपुर
रायपुर

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं की छात्रा अवनि हूँ । मेरी बहन का विवाह 10 अप्रैल 2024 को होना निश्चित हुआ है । विवाह में सम्मिलित होने के लिए मुझे तीन दिन का अवकाश चाहिए । अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे दिनांक 10-04-24 से 12-04-24 तक अवकाश प्रदान करने की महती कृपा करें ।

धन्यवाद ।

आपकी छात्रा
अवनि
कक्षा दसवीं
के वि रायपुर
दिनांक -----

-5वन महोत्सव के अवसर पर आप पौधा लगाना चाहते हैं। उद्यान विभाग के अधिकारी को ईअच्छे पौधे -मेल भेजिए अच्छे- भेजने के लिए।

प्रेषक	vani26@gmail.com
प्रेषिती	Vanvibhagraychur@gmail.com
विषय - पौधारोपण के लिए पौधा कि व्यवस्था हेतु-	

सेवा में,
उद्यान विभाग अधिकारी
गंगवाती
महोदय,
मैं ग्रीन हाउस सोसाइटी की अध्यक्षा हूँ । हमारे आस -पास के क्षेत्र में बहुत कम पेड़ - पौधें है । मैं पौधें लगाकर अपने आस - पास को हरा-भरा बनाना चाहती हूँ । अतः आपसे अनुरोध है कि आस -पास के वातावरण को हरित और सुंदर बनाने हेतु, आप पौधे उपलब्ध कराने की कृपा करेंगे । मैं सदा आपकी आभारी रहूँगी ।

धन्यवाद ।

भवदीया हस्ताक्षर----- वाणी दिनांक -------

-6 आप रोहित है । आप अपना बैंक खाता दूसरी शाखा में ट्रांसफर कराना चाहते हैमेल - इस संदर्भ में बैंक प्रबंधक को ई , -लिखिए

प्रेषक	rohanb @gmail.com
प्रेषिती	sbiraypur@gmail.com
विषय	बैंक खाता ट्रांसफर कराने हेतु आवेदन -
सेवा में, श्रीमान बैंक प्रबंधक शाखा - बेंगलूरू महोदय, मेरा नाम रोहित हैं और मैं आपके स्टेट बैंक का एक खाताधारक हूँ । मेरा ट्रांसफर हो गया है और मैं अपना बैंक खाता दूसरे बैंक खाता में ट्रांसफर करना चाहता हूँ । आपसे निवेदन है कि इस संबंध में कौन-कौन से दस्तावेज चाहिए होंगे,यह जानकारी देने की कृपा करें ताकि मैं अपने बैंक खाता को दूसरे बैंक में ट्रांसफर कर सकूँ । आपकी इस सेवा के लिए मैं सदा आभारी रहूँगा । धन्यवाद । भवदीय हस्ताक्षर --- रोहित बेंगलूरू दिनांक ------	

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन एक ऐसा माध्यम जिसके द्वारा हम किसी सामग्री या व्यक्ति विशेष के प्रति जन सामान्य को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं।

विज्ञापन शब्द 'ज्ञापन' में 'वि' उपसर्ग लगाने से बना है, 'वि' का अर्थ है- 'विशेष' तथा 'ज्ञापन' का अर्थ है- 'जानकारी देना' अर्थात उत्पादित वस्तुओं, सेवाओं आदि की विशेष जानकारी देना ।

विज्ञापन का उद्देश्य :-

विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है, जन सामान्य तक जानकारी पहुँचाना। विज्ञापन एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से कम से कम खर्च में अधिक से अधिक लोगों तक अपनी बात पहुँचाई जा सकती है। विज्ञापन के अनेक उद्देश्य माने गए हैं, जैसे- विज्ञापन द्वारा अपना परिचय देना, ध्यान आकर्षण करना, विश्वसनीयता जगाना, जनमत जागृत करना आदि ।

विज्ञापन के कार्य :-

1. नवीन वस्तुओं और सेवाओं की सूचना प्रदान करना।

2. विशेष छूट आदि की जानकारी देना।

3. उपभोक्ताओं में वस्तुओं के प्रति रुचि तथा विश्वास उत्पन्न करना, जागरूकता बढाना |

4. विज्ञापन का कार्य है, नए ग्राहक बनाना।

विज्ञापन तैयार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-

- विज्ञापन लिखते समय सबसे पहले जरुरी जानकारी को एकत्रित कर लेना चाहिए|
- सर्वप्रथम एक बाक्स-सा बनाकर ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए|
- दाएँ एवं बाएँ किनारों पर सेल,धमाका,खुशखबरी,खुल गया जैसे लोक लुभावने शब्दों को लिखना चाहिए|
- कुछ प्रेरक वाक्य- आज ही खरीदिए! ,सोचिए मत!,जल्दी कीजिए!,सुनहरा मौका!,स्टॉक सिमित है!,सफलता की गारंटी!,पहले आओ,पहले पाओ! आदि का प्रयोग करें|
- बाई ओर मध्य में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करें|
- ऊपर ही या नीचे जगह देखकर कोई छोटी-सी तुकबंदी भी करें जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए|
- कम से कम शब्दों में विज्ञापन होना चाहिए| शब्दों में गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए|
- भाषा सरस,रोचक तथा प्रभावपूर्ण होनी चाहिए| भाषा काव्यात्मक रहे तो बेहतर रहेगा|
- बॉक्स के दाहिनी तरफ विज्ञापित वस्तु का आकर्षक चित्र बनाएँ|
- विज्ञापन में सबसे नीचे आवश्यकतानुसार पता,मोबाइल नंबर आदि लिखें|
- प्रभावशाली विज्ञापन बनाने के लिए रंगीन पैंसिल का प्रयोग करें|

अंक विभाजन

कुल अंक - 4
विषय वस्तु - 2 अंक
भाषा - 1 अंक
प्रस्तुति - 1अंक

विज्ञापन के प्रारूप /उदाहरण

1. हम सब का रक्षक हेलमेट पर 40 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए।

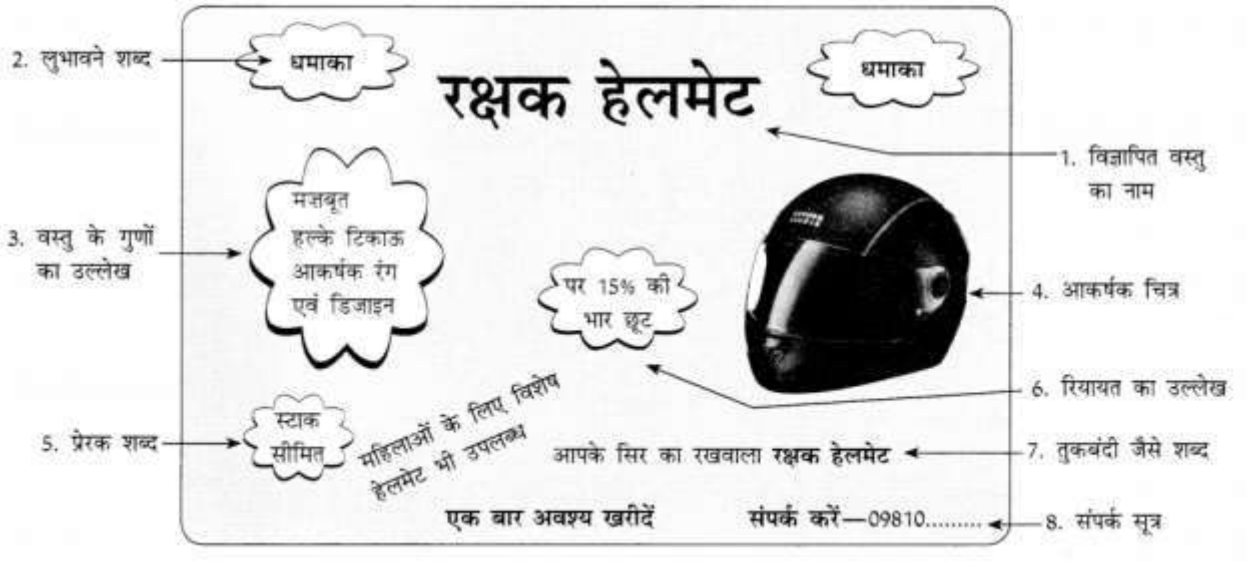

2 . हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी पर एक विज्ञापन तैयार करें।

3. जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

4 . महिला व बाल विकास मंत्रालय द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए

5 . टेलीविजन की बिक्री हेतु 40 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए।

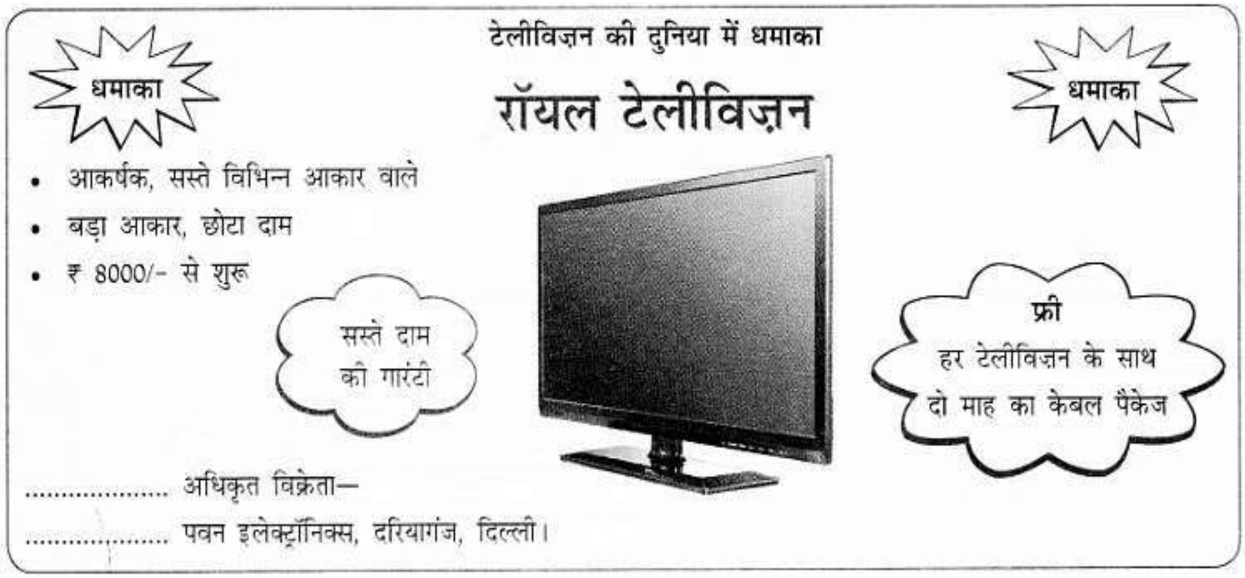

6. स्कूल बैग की बिक्री हेतु 40 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए।

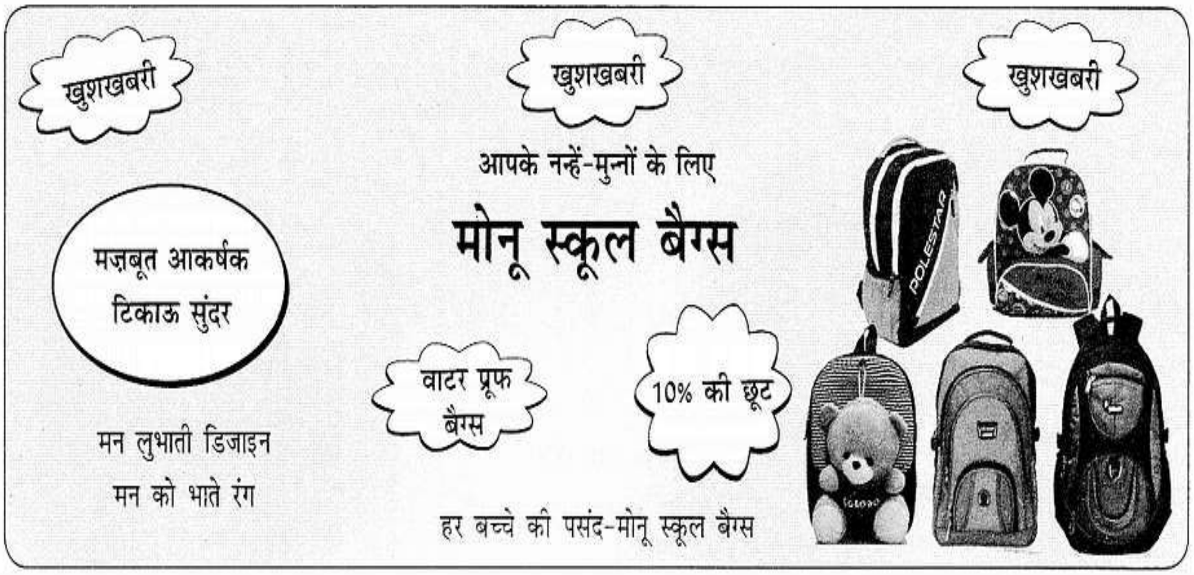

7 . नए एवं आकर्षक डेल कम्प्यूटर की बिक्री हेतु 40 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए।

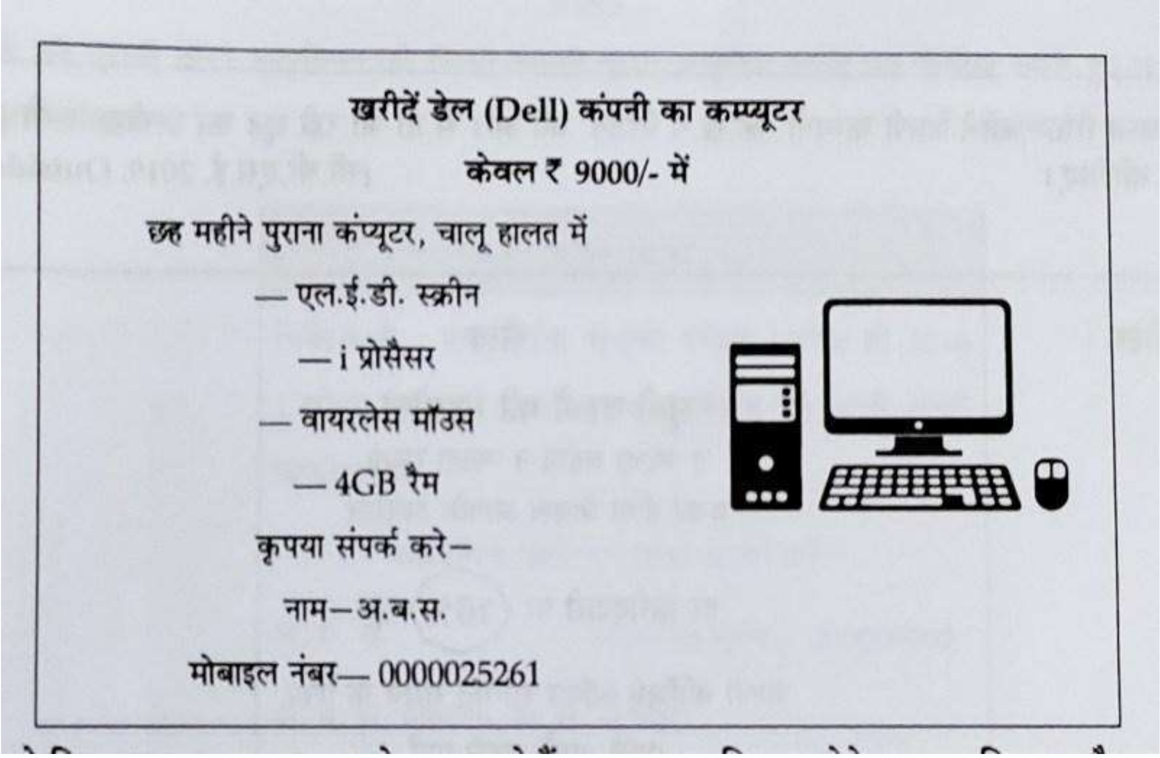

8 बॉल पेन की बिक्री हेतु 40 शब्दों मे विज्ञापन तैयार कीजिए।

9. **कम कीमत मे गर्मी दूर भगाने वाले पंखों प्र एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।**

10. **चुनाव आयोग द्वारा 'मेरा वोट मेरा अधिकार' विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए|**

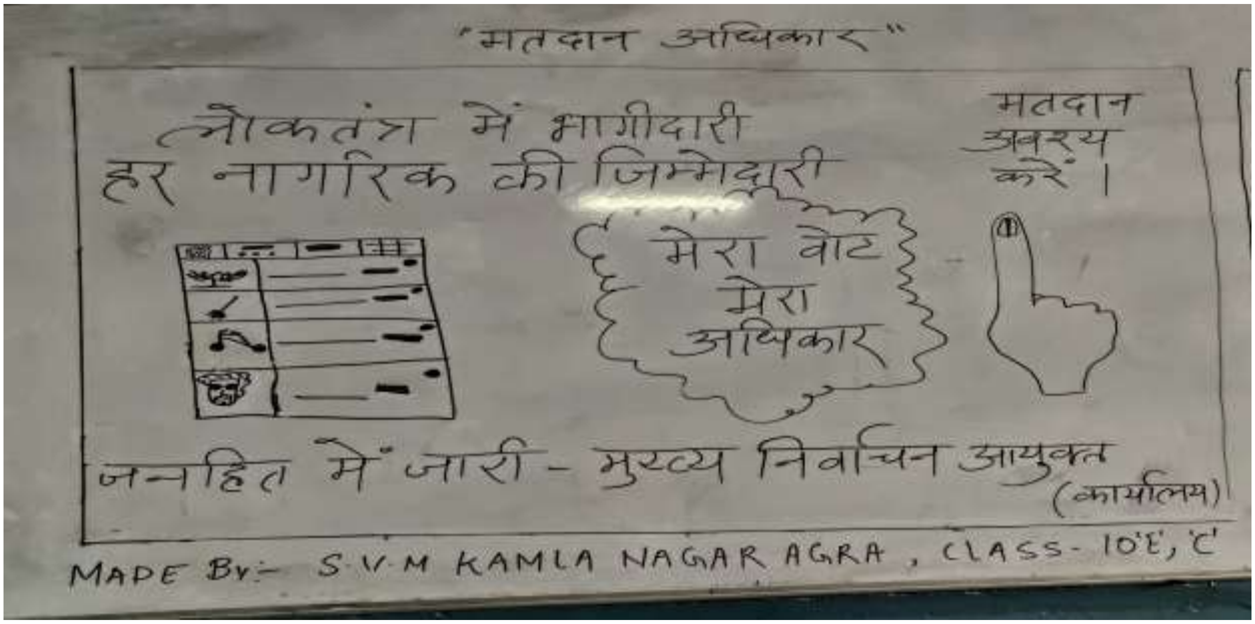

विज्ञापन के अन्य अभ्यास प्रश्न :-

1. बहुत कम कीमत में स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनी के लिए लगभग 40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
2. अपने पुराने कार को बेचने संबंधी लगभग 40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
3. पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने' के लिए लगभग 40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
4. बाल हस्तशिल्प मेले के लिए लगभग 40 शब्दों के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

संदेश लेखन

संदेश का तात्पर्य (अर्थ) -

संदेश को अंग्रेज़ी में मैसेज' कहा जाता है। संदेश शब्द का अर्थ है खबर या समाचार प्राप्त करना और दूसरे व्यक्तियों तक पहुँचाना। जब किसी परिस्थिति में कोई व्यक्ति अपनी कोई बात या जानकारी किसी दूसरे व्यक्ति तक सीधे नहीं पहुँचा सकता तब वह अपनी बात या जानकारी को संदेश के माध्यम से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाता है।

संदेश एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से जानकारी को किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किसी अन्य व्यक्ति या समूह तक पहुँचाया जा सकता है। संदेश दुखद और सुखद दोनों तरह के हो सकते हैं, संदेश व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

संदेश लेखन के प्रकार -संदेश लेखन के भी पत्र की तरह दो प्रकार प्रचलित है।

क. औपचारिक

ख. अनौपचारिक

औपचारिक संदेश-

औपचारिक संदेश उन संदेशों को कहते है जिन्हें किसी अधिकारी या किसी ऑफिस के कर्मचारी या आम जनमानस के लिए सार्वजनिक रूप में लिखा जाता है।

अनौपचारिक संदेश-

अनौपचारिक संदेश मित्र ,परिवार तथा शुभचिंतकों को लिखा जाता है। जिसमें जन्मदिन, किसी शुभ अवसर, विवाह, बधाई, धन्यवाद आदि के रूप में अनौपचारिक संदेश लिखा जाता है।

संदेश निम्न प्रकार के होते हैं:-

• **शुभकामना संदेशः**- शुभकामना संदेश मुख्य रूप में किसी व्यक्ति के जन्मदिन सालगिरह ,विद्यार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त करने पर तथा कर्मचारियों की पदोन्नति होने पर भेजे जाने वाले संदेश इसी श्रेणी में आते हैं।

• **पर्व व त्यौहार संदेशः**- इस तरह के संदेश विशेष पर्व व त्यौहार के वक्त भेजे जाते हैं। जैसे -दीपावली, होली क्रिसमस, स्वतंत्र दिवस आदि विशेष अवसर पर।

• **शोक संदेशः** इस तरह के संदेश किसी व्यक्ति की पुण्यतिथि या मृत्यु पर लोगों को भेजे जाते हैं।

• **व्यक्तिगत संदेशः** परिजनों को बधाई व शुभकामना देने वाले संदेश व्यक्तिगत संदेश की श्रेणी में आते हैं।

• **सामाजिक संदेशः** धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़े आयोजनों के संदर्भ में दिए जाने संदेश

• **मिश्रित संदेश**:- मिश्रित संदेश में किसी महामारी से संबंधित , डेंगू मलेरिया से संबंधित ,बाढ़ या भूकंप से सबंधित।

संदेश लेखन के अंगः-

- शीर्षक.
- दिनांक
- समय
- अभिवादन

- मुख्य विषय
- प्रेषक

संदेश लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-

> संदेश लेखन की शब्द सीमा 40 शब्दों के बीच में रखें।

> संदेश लेखन किसी सीमा रेखा (बॉक्स) के अंदर लिखा जाना चाहिए।

> संदेश के प्रारंभ में संदेश का शीर्षक' जैसे -शुभकामना संदेश, बधाई संदेश, शोक संदेश इत्यादि अवश्य लिखे जाने चाहिए, उसके बाद दिनांक, समय, अभिवादन आदि लिखे जाने चाहिए।

> फिर मुख्य विषय को जितना हो सके कम से कम शब्दों में लिखना चाहिए।

> व्याकरण एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियों से बचे।

> संदेश लेखन की भाषा सरल व संक्षिप्त होनी चाहिए।

> संदेश लिख लेने के बाद अंत में संदेश लिखने वाले का नाम अवश्य होना चाहिए।

अंक विभाजन

कुल अंक - 4

विषय वस्तु - 2 अंक

भाषा - 1 अंक

प्रस्तुति - 1 अंक

संदेश लेखन का प्रारूप :-

संदेश (शीर्षक/विषय)
दिनांक......... समय......... संबोधन अभिवादन विशेष (जिस विषय हेतु संदेश दे रहे हैं)............... .... प्रेषक का नाम क ख ग

संदेश लेखन के उदाहरण-

उदाहरण - 1 नव वर्ष के शुभ अवसर पर नई दिल्ली निवासी अपने मित्र रोहन को लगभग 40 शब्दों में एक शुभकामना संदेश लिखिए।

शुभकामना संदेश

दिनाक: 1 जनवरी , 2024
समय - 7:00 बजे

प्रिय मित्र रोहन,

सप्रेम नमस्ते

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। नया वर्ष तुम्हारे जीवन में खुशियाँ और उत्साह लेकर आए।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी तुम सफलता प्राप्त कर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहो। नववर्ष की इन्हीं

मंगलमय शुभकामनाओं के साथ पुनः नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र,

क. ख. ग.

उदाहरण-2

भारत के प्रधानमंत्री की तरफ़ से स्वतंत्रता दिवस पर देशवासियों के नाम एक शुभकामना संदेश लिखिए।

शुभकामना संदेश

दिनांक: 15 अगस्त , 2023
समय :- 7:30 बजे

प्रिय प्रदेशवासियों,

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। इस अवसर पर हमें अपने प्यारे भारत देश के लिए कुछ करने का संकल्प लेना चाहिए। हम सभी संविधान के मूलभूत आदर्शों की रक्षा के लिए संकल्पबद्ध हो । साथ ही इन संकटकालीन परिस्थितियों का एक साथ मिलकर मुकाबला करें।

एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

प्रधानमंत्री

उदाहरण-3

शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने शिक्षक के लिए लगभग 40 शब्दों में एक संदेश तैयार कीजिए।

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

दिनांकः- 5 सितंबर, 2023
समय:-10:00 बजे

परम श्रद्धेय गुरुजी,

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

जो बनाएँ हमें, अच्छा और सच्चा इंसान,

दें सही गलत की पहचान

आप सभी शिक्षकों को कोटि-कोटि प्रणाम। आपने अपने असीमित ज्ञान से सदैव हमारा मार्ग प्रदर्शित किया है। हम सदैव आपके स्नेह एवं मार्गदर्शन के लिए आपके ऋणी रहेंगे । आप सभी को पुनः शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका शिष्य,

क.ख. ग.

उदाहरण-4

दीपावली के पावन पर्व पर अपने मित्र को शुभकामना संदेश लिखिए।

शुभकामना संदेश

दिनांक-23 अक्टूबर 2023।
समयः- 10:00 बजे

'दीपावली की रात है आई, खुशियों की सौगात है लाई ।

आज नभ ने रंग बिखेरा, जैसे सितारों की बारात हो आई ॥'

प्रिय मित्र रमेश,

दीपावली के पावन पर्व पर तुम्हें और सभी परिवार जनों को हार्दिक बधाई। दीपों का प्रकाश तुम्हारा मार्ग पग-पग पर आलोकित करे और माँ लक्ष्मी तुम पर सदा अपनी कृपा बनाए रखें। आप सभी को पुनः हृदय की गहराइयों से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ |

तुम्हारा मित्र,

क ख ग

उदाहरण-5 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने मित्र को लगभग 40 शब्दों में बधाई संदेश लिखिए।

बधाई संदेश

दिनांक-23 अक्टूबर 2023
समयः- 10:00 बजे

प्रिय मित्र,

सप्रेम नमस्ते

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। तुम इसी प्रकार मेहनत करते रहो और सफलता की राह पर आगे बढ़ते रहो। ईश्वर तुम्हारी हर मनोकामना पूर्ण करें। तुम सदैव प्रसन्न रहो। इस सफलता पर हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत बधाई।

तुम्हारा मित्र,

क ख ग

उदाहरण-6 अपने मित्र को होली के त्योहार पर शुभकामना संदेश लिखें।

शुभकामना संदेश

दिनांक- 15 मार्च 2023।
समयः- 10:00 बजे

प्रिय मित्र,

प्रिय मित्र होली के इस पावन पर्व की आपको बहुत सारी शुभकामनाएं। मैं इस अवसर पर कामना करती हूं कि आपका जीवन रंग-बिरंगे रंगों की तरह खुशहाली के रंगों से भरा रहे। आप अपने जीवन में प्रगति और सफलता प्राप्त करें।

तुम्हारा मित्र,

क ख ग

उदाहरण-7

अपनी छोटी बहन को उसके जन्मदिन की बधाई के लिए लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए।

जन्मदिन पर शुभकामना संदेश

दिनांक-23 अक्टूबर 2023।
समयः- 10:00 बजे

तुम जियो हजारों साल,

साल के दिन हो पचास हजार

प्रिय छोटी बहन आपको जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं |मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि वह आपको निरोग व लंबी आयु प्रदान करें और आप अपने जीवन में हर वह मुकाम हासिल करें जो आप चाहते हैं।

तुम्हारी बड़ी बहन,

क ख ग

उदाहरण 8 अपने छोटे भाई को दसवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई संदेश लिखें।

बधाई संदेश

दिनांक- 23 जून 2023
समयः- 10:00 बजे

प्रिय अनुज

रोहन

प्रिय छोटे भाई रोहन, आपने मेहनत और लगन से दसवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है ।इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं ।आपकी सफलता से पूरा परिवार गदगद हैं ।आप इसी तरह मेहनत करते रहो और जीवन में सफलता प्राप्त करते रहो ।

आपका बड़ा भाई,

क ख ग

उदाहरण 9

दादा जी की मृत्यु का समाचार देते हुए एक शोक संदेश लिखिए।

शोक संदेश

दिनांक-12 अप्रैल 2023।
समयः- 10:00 बजे

मान्यवर,अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मेरे दादाजी अरुण तिवारी जी का स्वर्गवास दिनांक 10 अप्रैल 2024 को हो गया था। उनकी आत्मा की शांति के लिए श्रद्धा का आयोजन 25 अप्रैल 2024 को सुनिश्चित किया गया है ।अतः आपसे निवेदन है कि आप इस अवसर पर आकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर हमें कृतार्थ करें।

शोकाकुल परिवार

क ख ग

उदाहरण 10 हिंदी दिवस के अवसर पर शुभकामना संदेश लिखें।

हिंदी दिवस की शुभकामना हेतु संदेश

दिनांक-14 सितंबर 2023।
समयः- 10:00 बजे

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। हिंदी हमारी संस्कृति की पहचान है। हिंदी भाषा के प्रति सम्मान को बनाए रखें तथा हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें ताकि राष्ट्र का गौरव सदैव बना रहे। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा से होती है। इसलिए हिंदी का प्रयोग कर भारत की पहचान को बुलंदियों तक पहुंचाएं।

हिंदी अध्यापिका,

क ख ग

अभ्यास हेतु संदेश -

1. प्राचार्य की ओर से बालदिवस की शुभकामनाएँ देते हुए लगभग 40शब्दों में एक संदेश लिखिए
2. साहसिक कार्य के लिए वीरता पुरस्कार से सम्मानित होने वाले अपने मित्र पियूष गोयल को लगभग 40 शब्दों में एक बधाई सदेश लिखिए।
3. प्रधानमंत्री जी का 'कोरोनावायरस' से बचाव को लेकर राष्ट्र के नाम लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए ।
4. भैया- भाभी को विवाह की वर्षगाँठ पर लगभग 40 शब्दों में एक बधाई संदेश लिखिए ।
5. देशभक्ति की प्रेरणा देते हुए अपने छोटे भाई को लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए ।

अभ्यास

प्रश्न-पत्र

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलूर संभाग
आदर्श प्रश्न पत्र सत्र 2024-25
विषय- हिंदी - पाठ्यक्रम अ (कोड -002)
कक्षा : दसवीं

समय-3.00घंटे **पूर्णांक-80**

सामान्य निर्देश: निम्न लिखित निर्देशों का पालन कीजिए -

कृपया जाँच करें कि इस प्रश्न पत्र में 15 प्रश्न हैं ।

- **इस प्रश्न पत्र में चार खंड हैं -क ,ख ,ग और घ । चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य हैं ।**
- **प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व सही प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और दिए गए प्रश्न निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**
- **प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा ।**
- **10.15 बजे से पत्र को- बजे तक परीक्षार्थी केवल प्रश्न 10.30पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर पुस्तिका में कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।-**

खंड अपठित बोध) क -)

1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर के विकल्प को चुनिए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1+1+1+2+2=7

संस्कृत में एक कहावत है कि दुर्जन दूसरों के राई के समान मामूली दोषों को पहाड़ के समान बड़ा बनाकर देखता है और अपने पहाड़ के समान बड़े पापों को देखते हुए भी नहीं देखता। सज्जन या महात्मा ठीक इससे विपरीत होते हैं। उनका ध्यान दूसरों की बजाए केवल अपने दोषों पर जाता है। अधिकांश व्यक्तियों में कोई न कोई बुराई अवश्य होती है। कोई भी बुराई न होने पर व्यक्ति देवता की कोटि में आ जाता है। मनुष्य को अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, न कि दूसरों की कमियों को लेकर छींटाकशी करने या टीका-टिप्पणी करने का। अपने मन की परख को पवित्र करने का सबसे उत्तम साधन है-आत्मनिरीक्षण। यह आत्मा की उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। महात्मा कबीर ने कहा है कि जब मैंने मन की पड़ताल की, तो मुझे अपने जैसा कोई बुरा न मिला। महात्मा गाँधी ने कई बार स्पष्ट रूप से कहा था-"मैंने जीवन में हिमालय जैसी बड़ी भूलें की हैं।" अपनी भूलों पर ध्यान देना या उन्हें स्वीकार करना आत्मबल का चिह्न है। जो लोग दूसरों के सामने अपनी भूल नहीं मानते और न ही अपने को दोषी स्वीकार करते हैं, वे सबसे बड़े कायर हैं। जिसका अंतःकरण शीशे के समान उजला है, उसे झट अपनी भूल महसूस हो जाती है। मन तो दर्पण है। मन में पाप है, तो पाप दिखाई देता है। पवित्र आचरण वाले अपने मन को देखते हैं, तो उन्हें लगता है कि अभी इसमें कोई कमी रह गई है, इसलिए वे अपने मन को बुरा कहते हैं। यही उनकी नम्रता की साधना है।

(i). दूसरों के राई के समान दोषों को पहाड़ के समान कौन देखता है?

(A) सज्जन (B) महात्मा

(C) दुर्जन (D) देवता

(ii). महात्माओं का ध्यान किसके दोषों की तरफ़ जाता है?

(A) सभी लोगों के (B) सारे संसार के

(C) केवल अपने (D) केवल दूसरों के

(iii). जिन्हें अपनी भूल तुरंत महसूस हो जाती है, उनका अंतःकरण होता है -

(A) पत्थर के समान (B) शीशे के समान

(C) हिमालय के समान (D) देवताओं के समान

(iv) लेखक के अनुसार अपने मन को पवित्र करने का उत्तम साधन क्या है?

(v) कोई भी बुराई न होने पर व्यक्ति किस कोटि में आ जाता है?

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर के विकल्प को चुनिए और प्रश्नोंके उत्तर लिखिए। 1+1+1+2+2=7

फिर से नहीं आता समय, जो एक बार चला गया,
जग में कहीं बाधा-रहित कब कौन काम हुआ भला ।
'बहती नदी सूखे अगर उस पार इसके मैं चलूँ' -
इस सोच में बैठा पुलिन पर, पार जा सकता भला ?
किस रीति से क्या काम, कब करना, बनाकर योजना,
मन में लिए आशा प्रबल, दृढ़ जो वही बढ़ जाएगा ।
उसको मिलेगा तेज बल, अनुकूलता सब ओर से,
वह कर्मयोगी, वीर, अनुपम साहसी सुख पाएगा ।।
यह वीरभोग्या, जो हृदय तल में बनी वसुधा सदा,
करती रही आह्वान है, युग-वीर का, पुरुषत्व का ।
कठिनाइयों में खोजकर पथ, ज्योति-पूरित जो करे,
विजयी वही होता धरणी-सुत वरण कर अमरत्व का ।।

(i) समय की क्या विशेषता है?

)A) समय धीरे धीरे जाता है (Bस (मय कर्मयोगी है

)C) बीता समय वापस नहीं आता (Dसमय बाधा रहित है (

(ii) कौन सा मनुष्य पार नहीं जा सकता है?

)A(जो पुलिन पर बैठा हो)Bजो योजना बनाता हो (

)C(जो साहसी हो)Dजो (मेहनती हो

(iii) वसुधा सदैव किसका आह्वान करती है?

)A(विजयी का) B(युग वीर का

)C(समय का)B(हृदय का

(iv) धरती किसका आह्वान करती रही है?

(v) अमरत्व प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपनी राह कैसे निकालता है?

खंड- ख (व्यावहारिक व्याकरण)

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1x4=4

(i) जब गौरव चार दिन गाँव में रहा तब सबका प्रिय हो गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ii) सूर्योदय हुआ और अँधेरा गायब हो गया । (सरल वाक्य में बदलिए)

(iii) ज्यों ही संध्या हुई त्यों ही सारे पशु लौटने लगे । (वाक्य का भेद पहचान कए लिखिए)

(iv) विद्यार्थी परिश्रमी होता है तो अवश्य सफल होता है । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(v) शहर में जिनकी आय कम होती है वे दुखी ही रहते हैं । (वाक्य - भेद बताइए)

4- निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित पाँच पदों में से किन्हीं चार पदों का पद परिचय दीजिए। 1x4=4

(i) हम अपने देश पर मर मिटेंगे ।

(ii) अहा! उपवन में सुन्दर फूल खिले हैं ।

(iii) एवरेस्ट संसार का सबसे ऊँचा शिखर है ।

(iv) भूषण वीर रस के कवि थे ।

(v) रमेश वहां दसवीं कक्षा में बैठा है ।

5. निर्देशानुसार "वाच्य" पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1x4=4

(i) आज घूमने चलें -(भाववाच्य में बदलिए)

(ii) मुझसे उठा नहीं जा सकता-(कर्तृवाच्य में बदलिए)

(iii) पक्षी आकाश में उड़ेंगे-(कर्मवाच्य में बदलिए)

(iv) लड़का तैरता है-(भाववाच्य में बदलिए)

(v) कलाकार द्वारा मूर्ति गढ़ी जाती है- (वाच्य पहचानकरभेद लिखिए)

6. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त पाँच अलंकारों में से किन्हीं चार अलंकारों को पहचानकर लिखिए। 1x4=4

(i) कार्तिक की एक हँस मुख सुबह,
नदी तट से लौटती गंगा नहाकर।

(ii) भूप सहस दस एकहिं बारा ।
लगे उठावन टरत न टारा ॥

(iii) सुविरण को खुजत-फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।

(iv) पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा उतरे कैसे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार,

(v) मानो माई घनघन अंतर दामिनि ।
घन दामिनि दामिनि घन अंतर सोभित हरि भामिनि ।

खंड- ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए : 1x5=5

किंतु खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे -साधु के सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को साहब मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो -टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगडा मोल लेते। वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज़ साहब की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लाद कर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते -जो उनके घर से चार कोस दूरी पर था-एक कबीरपंथी मठ से मतलब ! दरबार में 'भेंट' रूप रख लिया जाता। 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते।

(i) प्रस्तुत गद्यांश में बालगोबिन भगत के “साहब” कौन थे -

(A) पिता (B) निराकार ईश्वर

(C) कबीर (D) कृष्ण

(ii) साहब के दरबार से मतलब है –------- से ।

(A) मंदिर (B) मस्जिद

(C) गुरुद्वारे (D) कबीरपंथी मठ

(iii) बालगोबिन भगत के विषय में कौन सा कथन सत्य नहीं है

(A) खरा व्यवहार रखते (B) कभी झूठ नहीं बोलते

(C) दो-टूक बात करते (D) खामखाह झगडा मोल लेते

(iv) लेखक ने गद्यांश में बालगोबिन भगत को------माना है ।

(A) नेता (B)कृषक

(C) साहब (D)साधू

(v) गृहस्थ होते हुए भी भगत साधु थे क्योंकि------------ थे ।

(A) वे पीले वस्त्र पहनते थे (B) खेतीबारी करते

(C) साधु के सब परिभाषाओं पर खरे उतरने वाले (D) प्रतिदिन मंदिर जाते थे

8. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए : 2x3=6

(क) संस्कृति निबंध का प्रतिपाद्य/ उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) ‘नेताजी का चश्मा’ पाठ के आधार पर सपष्ट कीजिए कि देश प्रेम प्रकट करने के लिए सैनिक होना ही आवश्यक नहीं है?

(ग) लेखिका का ‘पड़ोस कल्चर’ से क्या तात्पर्य है? आधुनिक जीवन में ‘पड़ोस कल्चर’ विच्छिन्न होने से हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(घ) बिना विचार घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? लेखक के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

9. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए : 1x5=5

बादल, गरजो!-
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा , नूतन कविता
फिर भर दो-
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल, गरजो!

(i) बादलों के बीच कौन-सी शक्ति छिपी हुई है। ।

(A) नूतन कविता -सी (B) वज्र की-सी

(C) विद्युत-सी (D) बल कल्पना-सी

(ii) "जल" का संकेतार्थ ------हो सकता है ।

(A) दुख (B) क्रोध

(C) सुख, शांति (D) बेचैन

(iii) कवि शीतलता लाने के लिए किसका आहवान कर रहा है?

(A) वर्षा को (B) भगवान को

(C) बादल को (D) सकल जन को

(iv) 'तप्त धरा' का क्या आशय है?

(A) प्यासी धरती (B) संतुष्ट धरती

(C) दुखी धरती (D) जलती धरती

(v) कवि बादलों से क्या निवेदन करता है?

(A) धरती पर गरजो। (B) धरती को शीतल कर दो।

(C) धरती पर छा जाओ। (D) इनमें से कोई नही

10. निर्धारित कविताओं के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए : 2x3=6

(क) उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की- कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

(ख) 'संगतकार'कविता के आधर पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुणसम्पन्न होकर भी समाज में अग्रिम पंक्ति में न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं?

(ग) पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

(घ) गोपियों को राजधर्म की याद क्यों दिलानी पड़ी?

11. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए : 4x2=8

(क) हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरूपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरूपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है ?

(ख) "कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं" इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है ?

(ग) माँ के प्रति अधिक लगाव न होते हुए भी विपत्ति के समय भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शांति पाता, इसका आप क्या कारण मानते हैं ?

खंड- घ (रचनात्मक लेखन)

12- निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। 6

(क) मिशन अमृत महोत्सव -

संकेत बिंदु -पृष्ठभूमि, अमृत महोत्सव उद्देश्य, उपलब्धियाँ, उपसंहार ।

(ख) मन के हारे हार है , मन के जीते जीत

संकेत बिंदु- मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति, आशा -निराशा, मन पर विजय पाने का मार्ग, मानसिक विजय ही वास्तविक विजय ।

(ग) जल जीवन मिशन (हर घर नल से जल)

संकेत बिंदु -पृष्ठभूमि, उद्देश्य, स्वच्छ पानी, जीवन में जल का महत्त्व, जल- संकट के कारण एवं समस्याएँ, समाधान

13- छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें योग एवं प्राणायाम का महत्व बताया गया हो और नियमित रूप से इनका अभ्यास करने का सुझाव दिया गया हो। लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए । 5x1=5

अथवा

आपके नगर की प्रसिद्ध डेयरी में दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थों में मिलावट की जाती है । नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र द्वारा जानकारी देते हुए उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध कीजिए |

14- अपने क्षेत्र में एक पार्क विकसित करने के लिए एक ई-मेल द्वारा नगर निगम अधिकारी को पत्र लिखिए । नगर निगम का ई- मेल पता- **knnbcm.co.in** (80 शब्दों में ई- मेल लिखिए) **1x5=5**

अथवा

आप अपने शहर के राजकीय विद्या निकेतन में अध्यापक पद के लिए स्ववृत्त लेखन लिखिए: (80शब्दों में अपना एक संक्षिप्त स्ववृत्त लिखिए)

15- पर्यावरण विभाग की ओर से जल संरक्षण का आग्रह करते हुए आम जनता के लिए एक विज्ञापन 40 शब्दों में लिखिए। 1x4=4

अथवा

शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने हिंदी शिक्षक के लिए एक भावपूर्ण संदेश 40 शब्दों में लिखिए |

******

केन्द्रीय विद्यालय संगठन बेंगलुरु संभाग

आदर्श प्रश्न-पत्र - 2024-25

विषय - हिन्दी- पाठ्यक्रमकोड) अ- : 002)

निर्धारित समय : 03 घंटे पूर्णांक : 80

सामान्य निर्देश :

(1) इस प्रश्न पत्र में चार खण्ड हैं- क, ख, ग और घ।

(2) सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(3) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए ।

खण्ड) 'क'अपठित अंश(

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 7=2+2+1+1+1

लाखों वर्षों से मधुमक्खी जिस तरह छत्ता बनाती आई है वैसे ही बनाती है। उसमें फेर-बदल करना उसके लिए संभव नहीं है। छाता तो त्रुटिहीन बनता है लेकिन मधुमक्खी अपने अभ्यास के दायरे में आबद्ध रहती है। इस तरह सभी प्राणियों के संबंध में प्रकृति के व्यवहार में साहस का अभाव दिखाई पड़ता है। ऐसा लगता है कि प्रकृति ने उन्हें अपने आँचल में सुरक्षित रखा है ,उन्हें विपत्तियों से बचाने के लिए उनकी आंतरिक गतिशीलता को ही प्रकृति ने घटा दिया है।

लेकिन सृष्टिकर्ता ने मनुष्य की रचना करने में अद्भुत साहस का परिचय दिया है। उसने मानव के अंतःकरण को बाधाहीन बनाया है। हालाँकि बाह्य रूप से उसे विवस्त्र ,निरस्त्र और दुर्बल बनाकर उसके चित्त को स्वच्छंदता प्रदान की है। इस मुक्ति से आनंदित होकर मनुष्य कहता है" -हम असाध्य को संभव बनाएँगे। "अर्थात जो सदा से होता आया है और होता रहेगा ,हम उससे संतुष्ट नहीं रहेंगे। जो कभी नहीं हुआ ,वह हमारे द्वारा होगा। इसीलिए मनुष्य ने अपने इतिहास के प्रथम युग में जब प्रचंडकाय प्राणियों के भीषण नखदंतों का सामना किया तो उसने हिरण की तरह पलायन करना नहीं चाहा ,न कछुए की तरह छिपना चाहा। उसने असाध्य लगने वाले कार्य को सिद्ध किया - पत्थरों को काटकर भीषणतर नखदंतों का निर्माण किया। प्राणियों के नखदंत की उन्नति केवल प्राकृतिक कारणों पर निर्भर होती है। लेकिन मनुष्य के ये नखदंत उसकी अपनी सृष्टि क्रिया से निर्मित थे। इसलिए आगे चलकर उसने पत्थरों को छोड़कर लोहे के हथियार बनाए। इससे यह प्रमाणित होता है कि मानवीय अंतःकरण संधानशील है। उसके चारों ओर जो कुछ है उस पर ही वह आसक्त नहीं हो जाता। जो उसके हाथ में नहीं है उस पर अधिकार जमाना चाहता है। पत्थर उसके सामने रखा है पर वह उससे संतुष्ट नहीं। लोहा धरती के नीचे है ,मानव उसे वहाँ से बाहर निकालता है। पत्थर को घिसकर हथियार बनाना आसान है लेकिन वह लोहे को गलाकर ,साँचे में डाल ढालकर ,हथौड़े से पीटकर ,सब बाधाओं को पार करके ,उसे अपने अधीन बनाता है। मनुष्य के अंतःकरण का धर्म यही है कि वह परिश्रम से केवल सफलता ही नहीं बल्कि आनंद भी प्राप्त करता है।

.1 प्रकृति ने मधुमक्खियों को एक ही दायरे में बंद क्यों रखा है?

(क) साहस की कमी के सहित (ख) कौशल विकसित करने के लिए

(ग) उसे बाहरी संकटों से बचाने के लिए (घ) प्रतिभा की कमी के कारण।

.2 मनुष्य ने नखदंत कैसे विकसित किए?

(क) नुकीले पत्थरों से (ख) पत्थरों को काटकर

(ग) नाखूनों से पत्थर तराश कर (घ) दाँतों से पत्थर तराश कर।

.3 मनुष्य को संतोष किससे मिलता है?

(क) नई-नई वस्तुएँ पाकर (ख) साधनों का उपयोग करके

(ग) नए साधन विकसित करके (घ) जो मिले ,उसी में।

4. ‘असाध्य को संभवबनाने का ' क्या अर्थ हैस्पष्ट कीजिए। ?

5. मनुष्य की भीतरी और बाहरी बनावट किस प्रकार पर है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 7=2+2+1+1+1

जून का महीना झुलसते दिन रात ,और उधर मसूरी में रिमझिम बरसात !
मैं व्यंग्य से मुस्कराया और पास बैठे बेटे को समझाया
बेटा ! तू भी मसूरी सा बन ,जलते रेगिस्तान में नंदनवन सा तन
लोगों की आहों से एक फव्वारा बना और उसमें खूब नहा !
पानी के खेल खेल ,झरने बहा ,घर सजा ,शृंगार कर
झुलसने दे अभागों को ,तू अपना घर भर!
सुनकर यह व्यंग्य की बोली ,मसूरी चीखकर बोली-
सुन ! न तो मैं आग बरसाती हूँ ,न किसी को तपाती हूँ
ये तो तुम्हारी ही आहें हैं ,जो किसी बड़े का कंधा खोजती हैं
जिस पर सर रखकर वे रो सकें !
और मैं ! जिसे तुम अपनी आहों का शोषक कहते हो
मैं तुम्हारी आहों को आँखों में बसाती हूँ
उनमें डूबती हूँ छटपटाती हूँ
उनमें बसे आँसुओं को अपनी आँखों में लिए बरस जाती हूँ।
फिर भी तुम मेरे वक्ष पर मँडराते मेघों को कहते हो मेरा श्रृंगार।
दरअसल जब भी कोई किसी के दुख-दर्द को गले लगाता है
बहुत प्यारा हो जाता है ,उसके नयनों का पोर-पोर उज्ज्वल हो जाता है।
और फिर मैं तुम्हारे जल को खुद कहाँ पीती हूँ
पूरा का पूरा झर जाती हूँ ,तुम्हारे लिए एक नदी बनाती हूँ
झरने बहाती हूँ ,पेड़ ,पत्तियाँ और फूल उगाती हूँ
फिर भी अपनी महिमा कहाँ गाती हूँ!

.1 आशय स्पष्ट कीजिए। 'मैं तुम्हारी आहों को आँखों में बसाती हूँ'

)क (मैं तुम्हारी पीड़ाओं को निहारती हूँ।)ख (मैं तुम्हारी पीड़ाओं को प्रेम करती हूँ।

)ग (मैं तुम्हारी पीड़ाओं को अपने हृदय में धारण करती हूँ।)घ (मैं तुम्हारी पीड़ाओं को समझती हूँ।

.2 बड़ा व्यक्ति कौन होता है ,जो-

)क (दुखियों को गले लगाता है।)ख (दुखियों की सुनता है।

)ग (दुखियों का नेतृत्व करता है।) घ (दुखियों को प्रेरित करता है।

.3 आपकी नजरों में मसूरी क्या है?

)क (शोक)ख (शोषित

)ग (शोषितों की सहायक)घ (शोषितों की नेता

4. कवि किस दृश्य को देखकर व्यंग्य करता है?

5. व्यक्ति किस प्रकार प्रिय बनता है?

खण्ड) 'ख'व्यावहारिक व्याकरण(

प्रश्न 3. निर्देशानुसार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं 'रचना के आधार पर वाक्य भेद'<u>चार प्रश्नों</u> के उत्तर दीजिए। 4=4×1

1. रहीम बोला कि<u> मैं कर्नाटक जा रहा हूँ।</u>रेखांकित उपवाक्य का ना) म बताइए (
2. हमारे घर से बाहर निकलते ही बारिश होने लगी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

3. सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई डरा नहीं सकता। (वाक्य भेद बताइए)
4. जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है उसे कहते हैं?
5. जो देश की रक्षा करते हैं, उन्हें राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार दिए जाते हैं। (सरल वाक्य में बदलिए)

प्रश्न 4. निर्देशानुसार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं 'वाच्य'चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4=4×1

1. रमेश अब दूध नहीं पी रहा है। (वाच्य पहचान कर लिखिए)
2. लड़की आँगन में सो रही थी। (भाववाच्य में बदलिए)
3. क्या सुरेंद्र के द्वारा सिनेमा देखा गया) ?वाच्य पहचान कर लिखिए बदलिए (
4. मैं इस धूप में नहीं चल सकता। (भाववाचक में बदलिए)
5. छात्रों द्वारा पत्र लिखा जाता है। कर्तृवाच्य)में बदलिए (

प्रश्न 5. निर्देशानुसार पाँच में से किन्हीं चार वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। 4=4×1

1. मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।
2. वह यकायक चला गया।
3. राम धीरे-धीरे चल रहे थे।
4. भोलानाथ बाकी सभी लड़कों के साथ खेलने लगा।
5. पान वाला नया पान खा रहा था।

प्रश्न 6. निर्देशानुसार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं 'अलंकार'चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1x4=4

1. हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग।। काव्य पंक्तियों में अलंकार है।
2. मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ। काव्य पंक्ति में अलंकार है।
3. उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने लगा उसका
   मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जगा।
4. जहाँ किसी के बारे में इतना चढ़ा?बढ़ा कर कहा जाए जो सीमा से परे हो तो वहाँ अलंकार होता है-
5. जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
   बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरों होय॥

खण्ड) 'ग'पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक(

प्रश्न 7. निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उचित विकल्प चुनकर लिखिए। 1x5=5

अमीरुद्दीन की उम्र अभी 14 साल है। मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का। यह रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी ,कभी टप्पे ,कभी दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन और बतूलन जब गाती हैं तब अमीरुद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी है।

.1 'ठुमरी ,टप्पे और दादरा 'किनके नाम हैं?
)क (वाद्ययंत्रों के)ख (छंदों के
)ग (गायन-शैलियों के)घ (रागों के

.2 'अमीरुद्दीन 'कौन है?

)क (बिस्मिल्ला खाँ का पुत्र)ख (स्वयं बिस्मिल्ला खाँ
)ग (बिस्मिल्ला खाँ का पोता)घ (बिस्मिल्ला खाँ का पिता

.3 बिस्मिल्ला खाँ संगीत के अभ्यास के लिए कहाँ जाते थे?
)क (रसूलनबाई के घर)ख (बतूलनबाई के घर
)ग (बालाजी के मंदिर)घ (काशी विश्वनाथ के मंदिर

.4 बिस्मिल्ला खाँ की संगीत के प्रति रुचि कैसे जागी?
)क (अपने उस्ताद की कृपा से)ख (रसूलन और बतूलन के संगीत को सुनकर
)ग (काशी विश्वनाथ की कृपा से)घ (मंदिर की आरती से

.5 अमीरुद्दीन को रसूलनबाई और बतूलनबाई के घर वाला रास्ता क्यों भाता था?
)क (वह दोनों महिलाओं से प्रेम करता था।)ख (वह दोनों महिलाओं के संगीत को सुनना चाहता था।
)ग (यह रास्ता छोटा पड़ता था।)घ (वह स्वयं इन बहनों से परिचय बढ़ाना चाहता था।

प्रश्न 8. 'क्षितिज पाठ्यपुस्तक से गद्य पाठों पर आधारित चार प्रश्नों में से '<u>किन्हीं तीन प्रश्नों</u> के उत्तर शब्दों में 30 से 25 लिखिए। 6=3×2

1. पाठ के आधार पर सभ्यता एवं संस्कृति में अंतर स्पष्ट कीजिए। 'संस्कृति'
2. एक कहानी यह भी में लेखिका के पिता ने रसोई को ?कहकर क्यों संबोधित किया है 'भटियारखाना'
3. लेखक ने ऐसा "बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा" क्यों कहा है?
4. हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठेनेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए। ?

प्रश्न 9. निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उचित विकल्प चुनकर लिखिए। 1x5=5

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें ।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

.1 लक्ष्मण ने परशुराम को महाभट मानी वीर क्यों कहा?
)क (परशुराम की वीरता के सम्मान में।)ख (परशुराम के बड़बोलेपन की खिल्ली उड़ाने के लिए।
)ग (अपनी विनम्रता प्रदर्शित करने हेतु।)घ (सभा में अपना प्रभाव जमाने हेतु

.2 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। 'का अर्थ लिखिए-
)क (यहाँ कोई मूर्ख नहीं है।) ख (यहाँ आप पर विश्वास करने वाला कोई नहीं
)ग (यहाँ भी आपके सामने हम छुईमुई की तरह डरपोक नहीं हैं।)घ (हम छुईमुई के फूल की तरह कोमल नहीं हैं।

.3 रघुकुल की श्रेष्ठ परंपरा क्या है?
)क (रघुकुल में ब्राह्मणों को सुरापान नहीं कराया जाता।
)ख (रघुकुल में ब्राह्मणों ,देवताओं ,भक्तों और गाय को सुरापान नहीं कराया जाता।

)ग (रघुकुल में ब्राह्मणों ,देवों ,भक्तों और गायों पर प्रहार नहीं किया जाता।

)घ (रघुकुल में ब्राह्मणों ,देवों ,भक्तों और गायों से शत्रुता नहीं की जाती।

.4 लक्ष्मण ने परशुराम के धनुष-बाण और परसे को व्यर्थ का भार क्यों कहा?

)क (क्योंकि अब परशुराम बूढ़े हो चुके हैं।)ख (क्योंकि अब परशुराम इन्हें चला नहीं सकते।

)ग (क्योंकि परशुराम के वचन इन शस्त्रों से भी अधिक मारक हैं।)घ (क्योंकि अब उनसे कोई डरता नहीं है।

.5 भृगुबंसमनि किन्हें कहा गया है?

)क (लक्ष्मण को)ख (परशुराम को

(ग (राम को)घ (राजा जनक को।

प्रश्न 10. 'क्षितिज पाठ्यपुस्तक से काव्य पाठों पर आधारित चार प्रश्नों में से '<u>किन्हीं तीन प्रश्नों</u> के उत्तर शब्दों में 30 से 25 लिखिए। 6=3×2

1. गोपियों के मन की व्यथा क्या हैसूरदास के पद के आधार पर बताइए। ?वह मन में ही क्यों रह गई ?
2. संगतकार जैसा व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होकर भी समाज के अग्रिम पंक्ति में न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं ? संगतकार कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
3. नागार्जुन ने बच्चे की मुस्कान के सौंदर्य को किन-किन बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया?
4. वह किस समय की शोभा है जिससे कवि की आँख हटाने पर भी नहीं हटती' ?अट नहीं रही हैकविता के आधार पर ' ए।बताइ

प्रश्न 11. पाठ्य पुस्तक के पाठों के आधार पर तीन प्रश्नों 'कृतिका' में से किन्ही <u>दो प्रश्नों</u> के उत्तर शब्दों में लिखिए। 60 से 50 8=2×4

1. हिरोशिमा की घटना का उल्लेख करते हुए बताइए की मनुष्य किन-किन रूपों में विज्ञान का दुरुपयोग करने में प्रवृत्त होता जा रहा है?
2. सिक्किम की यात्रा करते समय लेखिका को बौद्ध धर्म संबंधी किन आस्थाओं और विश्वासों की जानकारी प्राप्त हुई तथा लेखिका ने उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की?
3. वर्णित खेल खिलौने की दुनिया वर्तमान खिलौने की दुनिया से बेहतर थी पाठ में 'माता का अंचल', क्यों? कारण सहित उत्तर दीजिए।

खण्ड) 'घ'रचनात्मक लेखन(

प्रश्न 12. निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए। 120 6

(क) लोकतंत्र में मीडिया का उत्तरदायित्व

संकेत बिंदु :-

प्रस्तावना), मीडिया का प्रमुख उत्तरदायित्व, लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका, आगे बढ़ने की होड़ में कर्त्तव्यपथ से भटकता मीडिया, उपसंहार(

(ख) स्मार्ट कक्षा की उपयोगिता

संकेत बिन्दु :-

प्रस्तावना), शिक्षा की नई तस्वीर, विषय वस्तु का अधिगम प्रभावशाली, छात्रों की अधिक सक्रियता, उपसंहार(

(ग) ओलम्पिक खेलों में सुधार के उपाय

संकेत बिन्दु :-

खेलों के प्रति रुझान में बदलाव), खेल नीति में परिवर्तन, राजनीति से दूरी, खेल वातावरण का निर्माण(

प्रश्न 13. किसी एक विषय पर लगभग लिखिएशब्दों में पत्र 100 5

आप अपनी नगर में एक रक्तदान शिविर का आयोजन करना चाहते हैं नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर इस कार्य के लिए डॉक्टरों की समुचित व्यवस्था हेतु अनुरोध कीजिए।

अथवा

अपनी छोटी बहन को जल संरक्षण का महत्त्व समझते हुए जल का दुरुपयोग रोकने की प्रेरणा देने वाला एक पत्र लिखिए।

प्रश्न 14. आप राजेश/रजनी हैं, आपने पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है। किसी प्रसिद्ध समाचार पत्र के कार्यालय में पत्रकार पद के लिए आवेदन करने हेतु लगभग शब्दों में अपना स्ववृत्त लेखन प्रस्तुत कीजिए। 80 5

अथवा

आप मोहन/मोहित हैं। पंजाब नेशनल बैंक की स्थानीय शाखा में लॉकर की सुविधा प्राप्त करने का अनुरोध करते हुए बैंक के प्रबंधक को लगभग शब्दों में एक ई 80-मेल कीजिए।

प्रश्न 15. स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत का संदेश देते हुए जन जागरण हेतु लगभग शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार 40 कीजिए। 5

अथवा

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए अपने भाई को शब्दों में संदेश लिखिए। 40

*****

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलुरु संभाग

आदर्श प्रश्नपत्र25-2024 -

कक्षा -वी हिन्दी10 पाठ्यक्रम - अ (002 कोड)

निर्धारित समय 3:घंटे पूर्णांक80 :

सामान्य निर्देश निम्न लिखित निर्देशों का पालन कीजिए :-

- कृपया जाँच करें कि इस प्रश्न पत्र में प्रश्न हैं। 15
- इस प्रश्न पत्र में चार खंड हैं- क ,ख ,ग और घ। चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व सही प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और दिए गए प्रश्न निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
- प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए मिनट का अतिरिक्त समय दिया 15जाएगा।
- बजे तक परीक्षार्थी केवल प्रश्न 10.30 बजे से 10.15-पत्र को पढ़ेंगे और
- इस अवधि के दौरान वे उत्तर -पुस्तिका में कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

खंड-अपठित बोध (क)

I निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1+1=1+2+2=7

वर्तमान सांप्रदायिक संकीर्णता के विषम वातावरण में संतदास साहित्य की उपादेयता बहुत है। संतों में शिरोमणि कबीर-भारतीय धर्मनिरपेक्षता के आधार पुरुष हैं। संत कबीर एक सफल साधक, प्रभावशाली उपदेशक, महा नेता और युगद्रष्टा थे। -उनका समस्त काव्य विचारों की भव्यता और हृदय की तन्मयता तथा औदार्य से परिपूर्ण है। उन्होंने कविता के सहारे अपने विचारों को और भारतीय धर्म निरपेक्षता के आधार को युगयुगान्तर के लिए अमरता प्रदान की। कबीर ने धर्म को मानव धर्म के -सागर और वाणी में-रूप में देखा था। सत्य के समर्थक कबीर हृदय में विचार अभूतपूर्व शक्ति लेकर अवतरित हुए थे। उन्होंने लोक रचना की।-कल्याण कामना से प्रेरित होकर स्वानुभूति के सहारे काव्य-

वे पाठशाला या मकतब की देहरी से दूर जीवन के विद्यालय में 'मसि कागद छुयो नहिं' की दशा में जीकर सत्य, ईश्वर विश्वास, प्रेम, अहिंसा, धर्मनिरपे-क्षता और सहानुभूति का पाठ पढ़ाकर अनुभूति मूलक ज्ञान का प्रसार कर रहे थे। कबीर ने समाज में फैले हुए मिथ्याचारों और कुत्सित भावनाओं की धज्जियाँ उड़ा दीं। स्वकीय भोगी हुई वेदनाओं के आक्रोश से भरकर समाज में फैले हुए ढोंग और ढकोसलों, कुत्सित विचारधाराओं के प्रति दो टूक शब्दों में जो बातें कहीं, उनसे समाज की आँखें फटी की फटी रह गईं और साधारण जनता उनकी वाणियों से चेतना प्राप्त कर उनकी अनुगामिनी बनने को बाध्य हो उठी। देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान वैयक्तिक जीवन के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न संत कबीर ने किया।

(1) आज संतना गया हैसाहित्य को उपयोगी क्यों मा-?
कधार्मिक वातावरण बनाने के लिए (सांप्रदायिक संकीर्णता की अधिकता के कारण ख (
ग भगवान के भजन के (लिए घउपरोक्त मे से कोई नहीं (

(2) कबीर के व्यक्तित्व एवं काव्य की क्या विशेषता थी?
क(सत्य का समर्थन ख (लोक कल्याण की कामना
ग सागर-हृदय में अगाध विचार (घउपरोक्त सभी (

(3) सामान्य जनता कबीर की वाणी को मानने को क्यों बाध्य हो गई?
क मिथ्याचारों पर कड़ा प्रहार करने के कारण (वाणी में अभूतपूर्व शक्ति के कारण ख (
गधर्मनिरपेक्षता और सहानुभू (ति का पाठ पढ़ाने के कारण घ(उपरोक्त सभी

(4 (संतशिरोमणि किसे माना गया है और क्यों-?

(5)   अपने जीवन के माध्यम से कबीर ने किन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया?

II   निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1+1+1+2+2=7

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी॥
यह समाधि यह लघु समाधि है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है-
लक्ष्मी मर्दानी की॥
यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजयसी-माला-
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है वह स्मृतिसी॥-शाला-
सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बालासी।-
आहुतिसी गिर चढ़ी चिता पर-
चमक उठी ज्वालासी॥-
बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से॥
रानी से भी अधिक हमें अब
यहाँ समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिंगारी॥

(1)   समय की क्या विशेषता है?
(A) समय धीरे धीरे जाता है   )B) समय कर्मयोगी है
(C) बीता समय वापस नहीं आता   )D) समय बाधा रहित है

(2 (रानी लक्ष्मीबाई को वीर बाला क्यों कहा गया है?
क(वह मरते दम तक लड़ती रही थी   ख(क्योंकि उसकी समाधि बनाई गई है
ग   क्योंकि रानी ने आज़ादी दिलवाई (घ ई नहींइनमे से को (

((3   'जलकर जिसने स्वतंत्रता की दिव्य आरती फेरी' का क्या अर्थ है?
क स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी (ख देश के लोगों में आजादी प्राप्ति की आशा जगा दी (
ग उपरोक्त में से कोई नहीं (घ   क और ख दोनों (

((4अंतिम लीलास्थली किसे कहा गया है और क्यों-?

(वीर का मान कब बढ़ जाता है (5?

खंड-व्यावहारिक व्याकरण (ख)

III. निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1x4=4

.1 जो देश के लिए मर मिटता है वही सच्चा देशभक्त होता है। रचना के आधार पर वाक्य का कौन सा भेद है?

न दोसुभाषचंद्र बोस ने कहा था कि तुम मुझे खू 2 , मैं तुम्हें आजादी दूँगा। (आश्रित उपवाक्य का भेद बताइए)

.3 सूर्योदय होते ही कुहासा जाता रहा। (संयुक्त वाक्य में परिवर्तित कीजिए)

.4 पाठ समाप्त हुआ और घंटी बज गई।)रचना के आधार पर वाक्य का कौन सा भेद है?)

.5 परिश्रमी व्यक्ति अच्छे लगते हैं। (मिश्र वाक्य में परिवर्तित कीजिए)

IV. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1x4=4

1. चलो, अब सोते हैं।)भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए(

.2रमेश पत्र लिखता है। इस वाक्य में कौन सा वाच्य भेद है)?)

.3मैंने प्रेमचंद का उपन्यास 'कर्मभूमि' पढ़ा। कर्मवाच्य)में परिवर्तित कीजिए(

4. कमला द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा। (वाच्य भेद बताइए)

5 . 'उमेश हँसा'भाववाच्य) में परिवर्तित कीजिए(

V. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1x4=4

.1 अपने <u>गाँव</u> की मिट्टी छूने के लिए मै तरस गया। रेखांकित पद का परिचय दीजिए।

.2 <u>मधु</u> यहाँ बच्चों को पढ़ाती थी। रेखांकित पद का परिचय दीजिए।

.3 वह <u>दौडकर</u> विद्यालय गया। रेखांकित पद का परिचय दीजिए।

.4 भारतीय सैनिक रणक्षेत्र में <u>वीरता</u> दिखाते हैं और शत्रुओं को सबक सिखाते हैं। रेखांकित पद का परिचय दीजिए।

.5 <u>यह</u> पुस्तक मेरे मित्र की है। रेखांकित पद का परिचय दीजिए।

VI. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- 1x4=4

1. अतिशयोक्ति अलंकार का कोई एक उदाहरण दीजिए।
2. सुनत जोग लागत हैं ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी। । (इस पंक्ति में कौन सा अलंकार है?)
3. श्लेष अलंकार का कोई एक उदाहरण दीजिए।
4. पट-पीत मानहूँ तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावरं। (इस पंक्ति में कौन सा अलंकार है?)
5. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। (अलंकार का नाम लिखिए।)

खंड- (ग) पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

VII. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1x5=5

बारबार सोचते -, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घरज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर -जवानी-गृहस्थी-भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूंढती है। दुखी हो गए।पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ख्याल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य प्रतिस्थापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।और कैप्टन मर गया। सोचा ....क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। ......, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राईवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोकोजीप स्पीड में ! थी, ड्राईवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकतेतेज़ -रुकते हलदार साहब जीप से कूदकर तेज़-न-ठीक सामने जाकर अटेन्शन में खड़े हो गए। कदमों से मूर्ति की तरफ लपके औए उसके
मूर्ति की आँखों पर सरकंडे का बना छोटा सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं।
हलदार साहब भावुक हैं। इतनी सी बात पर उनकी आँखें भर आई।

1. हालदार साहब के दुखी होने का क्या कारण था?
   क) क्योंकि उन्हे हर पंद्रह दिन में कस्बे मे आना पड़ रहा था।
   ख) क्योंकि लोगों के मन में देशभक्तों व शहीदों के प्रति सम्मान कम हो गया है।
   ग) क्योंकि हलदार साहब की जीप खराब हो गई थी।
   घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।
2. कस्बे में किसकी मूर्ति लगी हुई थी?
   क) महात्मा गांधी की
   ख) जवाहर लाल नेहरू की
   ग सुभाष चंद्र बोस की (
   घ (हालदार साहब की
3. गदयांश में युवा पीढ़ी के लिए निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।
   क) देशभक्तों व शहीदों के प्रति सम्मान की भावना बनाएँ रखे।
   ख) नेताजी की मूर्ति को चश्मा पहनाते रहें।
   ग) देशभक्तों व शहीदों का मज़ाक उड़ाए।
   घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।
4. सरकंडे का चश्मा किसने बनाया होगा?
   क पान वाले ने (
   खहलदार साहब ने (
   ग कैप्टन ने (
   घकिसी बच्चे ने (
5. हालदार साहब भावुक क्यों हो गए?
   क) बच्चे के मन में देशभक्ति की भावना को देखकर।
   ख) मूर्ति पर लगा हुआ सरकंडे का चश्मा देखकर।
   ग क्योंकि वो स्वयं भी सच्चे देशभक्त थे। (
   ग) उपरोक्त सभी।

VIII. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर मे शब्दों 30-25ं लिखिए।
2 x3=6

(1) 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने यात्रा करने के लिए सेकेंड क्लास का टिकट

क्यों खरीदा?

(2) व्यक्तित्व और वेषभूषा के आधार पर बालगोबिन भगत का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए।-

(3) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

(4) वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

IX. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1x5=5

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीतिनदी मैं पाउँ न बोरयौ-, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

1. गोपियों ने अपनी तुलना किससे की है?
   क फूल पर बैठे भँवरे से (खगुड़ पर लगी चीटियों से (
   ग कमल के पत्ते से (घ उपरोक्त सभी से (
2. गोपियों ने उद्धव को बड़भागी क्यों कहा है?
   क अत्यधिक ज्ञानी होने पर (कृष्ण के पास रहकर भी उनसे प्रेम न करने पर ख (
   ग इनमें से कोई नहीं (योग संदेश का ज्ञान देने पर घ (
3. गोपियों ने उद्धव की तुलना किससे की है?
   क (गुड़ पर लगी चीटियों से खतेल की गागरी से (
   ग कमल के पत्ते से (घ ख एवं ग दोनों से (
4. प्रीतिनदी में कौन सा अलंकार है -?
   क) यमक ख श्लेष (
   ख) उपमा घ रूपक (
5. प्रस्तुत पद के कवि कौन हैं?
   क) तुलसीदास खनरहरि दास (
   ग) सूरदास घ उपरोक्त में से कोई नहीं (

X. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर शब्दों में लिखिए। 30-25 2x3=6

1) संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन किन क्षेत्रों मे दिखाई देते हैं?
2) कवि बादल से फुहार, रिमझिम, या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए क्यों कहता है?
(3 कवि आत्मकथ्य लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?
4) लक्ष्मण ने वीर योध्दा की क्याक्या विशेषताएं बताई-?

XI. पूरक पाठ्य पुस्तक के पाठों के आधार पर निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नोंके उत्तर ।लिखिए में 60-50 4x2=8

1) साना साना हाथ जोड़ि पाठ के आधार पर बताइए कि कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग?अलग अवसरों की ओर संकेत करता है-
2) लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है क्यों?
3) पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य प्रकट हुआ है उसे अपने-पाठ में माता 'माता का अंचल' शब्दों में लिखिए।

खंड-रचनात्मक लेखन (घ)

XII. निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए। 120 6x1=6

क) राष्ट्रीय एकता का महत्व।
संकेत बिन्दुउपसंहार* सांप्रदायिकता* विविधता में एकता* राष्ट्रीय एकता का अर्थ* -

ख) पराधीन सपनेहु सुख नाही।
संकेत बिन्दु * पराधीनता के प्रभाव * पराधीनता से तात्पर्य* -स्वतन्त्रता मनुष्य का जन्म सिद्ध अधिकार उपसंहार * पराधीनता से मुक्ति के उपाय*

ग) दैनिक जीवन में विज्ञान।
संकेत बिन्दुविज्ञान से उत्पन्न समस्याएँ* आधुनिक विज्ञान की देन* विज्ञान का अर्थ एवं महत्व* - *निष्कर्ष

XIII. अपने मोहल्ले में फैली गंदगी की शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी को लगभग शब्दों में एक 100 पत्र लिखिए । 5X1=5

अथवा

आपके मित्र ने दसवीं कक्षा में जिले भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उसे बधाई देते हुए लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए ।

XIV. आप मनीषनगर में गणित .ग .ख .है। आपको सरस्वती विद्या मंदिर क .एड .बी .ए .मनीषा हैं। आप एम / /अध्यापक अध्यापिका के पद के लिए आवेदन करना है। इसके लिए आप अपना एक संक्षिप्त स्ववृत 80 लगभग (डाटा-बायो) शब्दों में तैयार कीजिए। 5X1=5

अथवा

विद्यालय में पानी की समुचित व्यवस्था करने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को लगभग मेल लिखिए।-शब्दों में एक ई 80

XV. आपके शहर रायपुर के गांधी मैदान में हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्तवपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 40 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए। 4X1=4

अथवा

आप रम्या/ राम है। दीपावली के शुभ अवसर पर बधाई देते हुए अपने मित्र को सखी/लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखें।

*****

सेट 4-

केंद्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलुरु संभाग

आदर्श प्रश्न पत्र25-2024-

विषय हिन्दी- पाठ्यक्रमअ-)कोड(002-

कक्षा -दसवीं

निर्धारित समय -3.00 घंटे पूर्णांक - 80

सामान्य निर्देश निम्न लिखित निर्देशों का पालन कीजिए :–

- कृपया जाँच करें कि इस प्रश्न पत्र में प्रश्न हैं । 15
- इस प्रश्न पत्र में चार खंड हैं –क, ख, ग और घ । चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य हैं ।
- प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व सही प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और दिए गए प्रश्न निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
- प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा । 15
- बजे तक परीक्षार्थी केवल 10.30 बजे से 10.15प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका में कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

खंड क अपठित)- बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 7=2+2+1+1+1

लोकतंत्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी ,हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव- शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूंजी उपयोगी बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महान बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफाई की बात हो, जहाँ तहाँ हम-लोगों को गन्दगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दें।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किये हैंइसे , अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं खोली हैं, विशाल बाँध बनवाएँ हैं ,फौलाद के कारखाने खोले हैं आदि-आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सकता है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी अपनी सूझ-बूझ के साथ आतंरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें और फिर सरकार उसमे आवश्यक मदद करे। उदहारण के लिए -गाँव वाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगेपर , वे लोग जरूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिएकहाँ , सिंचाई की जरुरत हैकहाँ , पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

क. लोकतंत्र का मूल तत्व क्या है ?

i) संस्कार निभाना ii) कर्तव्य पालन

iii) सरकार पर दोषारोपण करना iv) इनमें से कोई नहीं

ख . किसी देश की महानता किस पर निर्भर करती है ?

i) सरकार पर ii) देश के नागरिकों पर

iii) दोनों पर iv) दोनों पर नहीं

ग . 'बेतरतीब'में निहित उपसर्ग और मूल शब्द बताइए|

i) तरईब , ii) अ ,रत

ii) बे तरतीब , iv) ई बे ,

घ .	सरकार ने कौन कौन से कार्य किये हैं?

ड .	सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है ?

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 7=2+2+1+1+1

निर्मम कुम्हार की थापी से कितने रूपों में कुटी-पिटी
हर बार बिखेरी गई किन्तु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी।
आशा में निश्छल पल जाएछलना , में पड़कर छल जाए
सूरज दमके तो तप जाए ,रजनी ठुमके तो ढल जाए
यों तो बच्चों की गुड़िया-सीभोली , मिट्टी की हस्ती क्या
आँधी आए तो उड़ जाए ,पानी बरसे तो गल जाए।
फसलें उगतींफसलें , कटती लेकिन धरती चिर उर्वर है।
सौ बार बने सौ बार मिटे लेकिन धरती अविनश्वर है।
मिट्टी की महिमा मिटने में मिट-मिट हर बार सँवारती है।
मिट्टी-मिट्टी पर मिटती है-मिट्टी ,मिट्टी को रचती है।

क. धरती के सदा उर्वर रहने का क्या प्रमाण है?

i) मिट्टी का गीला रहना	ii) कुम्हार द्वारा प्रयोग में लाना
iii) मिट्टी का तपना	iv) फसलों का उगना और कटना

ख. मिटाने का प्रयास करने पर भी धरती कैसी रहती है ?

i) नश्वर	ii) अनश्वर
iii) नगण्य	iv) महान

ग. सूरज के दमकने पर मिट्टी पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

i) मिट्टी उर्वर होती है	ii) मिट्टी मिट जाती है
iii) मिट्टी उड़ जाती है	iv) मिट्टी तप जाती है

घ. भोली’ मिट्टी की हस्ती क्याकवि ने ’ ऐसा क्यों कहा है?

ड. वे कौन सी परिस्थियाँ हैं जो ,मिट्टी के स्वरुप को मिटाने में असफल रहती हैं?

खंड खव्यावहारिक)- व्याकरण (

3. ’रचना के आधार पर वाक्य भेद’ के निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1 x4=4

क - रचना के आधार पर भेद पहचानिए -
रामसेवक पवनपुत्र हनुमान ने सोने की लंका को जला दिया |

ख - मैं‘ उस विद्यार्थी को भली प्रकार जानता हूँजिसे , आपने पुरस्कार दिया था इस | वाक्य में आश्रित उपवाक्य कौन सा है?

ग - चरवाहे का बेटा गणेश दिनभर घास पर लेता रहा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

घ - वाक्यों .... में उपवाक्य स्वतंत्र और समानाधिकरण समुच्चय बोधकों से जुड़े होते हैं।

ङ- -दिन‘रात मेहनत करने वालों को सोच-समझकर खर्च करना चाहिए ’|इस वाक्य को संयुक्त वाक्य में रूपांतरित कीजिए।

4. निर्देशानुसार ‘वाच्य’ पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क -सकर्मक और अकर्मक दोनों ही प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग वाच्य .... में होता है।
ख अनेक‘ -श्रोताओं द्वारा कविता की प्रशंसा की गई। इस पंक्ति में निहित वाच्य का भेद बताइए।

ग -निम्नलिखित को कर्तृवाच्य में बदलिए। -
बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किये गए।
घ- बच्चों द्वारा शांति का पाठ किया जाता है।) वाच्य पहचानकर भेद लिखिए (
ड -कौन-से वाच्य में क्रिया अकर्मक और वाक्य नकारात्मक होता है।

5. निर्देशानुसार ‘पद परिचय’ पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4
क -<u>बच्चे</u> को खिलाने पिलाने की व्यवस्था की गई।रेखांकित) पद का उचित परिचय दीजिए (
खसुभाष - पालेकर ने <u>प्राकृतिक</u> खेती की जानकारी अपनी पुस्तकों में दी है। रेखांकित) पद का उचित परिचय दीजिए (
ग -<u>नेताजी</u> की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा चढ़ा था। (रेखांकित पद किस संज्ञा का बोध कराता है।)
घ .जब शब्द व्याकरणिक नियमों में बंध जाता है तो उसे कहते .... हैं ।
ड .<u>सत्य की</u> सदा जीत होती है। रेखांकित का पद परिचय बताइए ।

6. निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क . पद्मावती सब सखी बुलाई। जनु फुलवारी सबै चली आई। इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?
ख . ‘चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न स्नेह गंभीर।
को घटि या वृषभानुजा, वे हलधर के वीर। (इस पंक्ति में निहित अलंकार का नाम बताइए(
ग . प्रकृति वधू ने असित वसन बदला सित पहना ,।
तन से दिया उतार तारकावली का गहना ।
उपर्युक्त) पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है(?
घ . रूपक अलंकार में अत्यंत समानता के कारण उपमेय पर उपमान का ....कर दिया जाता है |
ड . ‘हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग।)निहित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए। (

खंड- ग)पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक(

.7 पठित गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए - x15= 5

नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर ख़म कर लेना पड़ा- यह है ख़ानदानी तहज़ीब,नफासत और नजाकत। हम गौर कर रहे थेखीरा , इस्तेमाल करने के इस तरीके को खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म , नफीस या एब्स्ट्रैक्ट तरीका जरूर कहा जा सकता है परन्तु ,क्या ऐसे तरीके से उदर की तृप्ति भी हो सकती है? नवाब साहब की ओर से भरे पेट के ऊँचे डकार का शब्द सुनाई दिया और नवाब साहब ने हमारी ओर देखकर कह दिया’ ,खीरा लज़ीज होता हैलेकिन , होता है सकीलनामुराद , मेदे पर बोझ डाल देता है।‘
ज्ञान-चक्षु खुल गए-पहचाना ! ये हैं नई कहानी के लेखक !

क (शब्द ’लज़ीज’ का अर्थ क्या है ?
(iतहज़ीब (iiनिकृष्ट
(iiiस्वादिष्ट (ivव्यर्थ

ख (इस पाठ के लेखक कौन हैं?
(iयशपाल (iiयतीन्द्र मिश्र
(iiiरामवृक्ष बेनीपुरी (ivगिरिराज

ग (नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर क्यों लेट गए?
(iवे बहुत थक गए थे (ii अपनी नवाबी का प्रदर्शन करने के लिए
(iiiउदर की तृप्ति के लिए (ivडकार बहार निकलने के लिए

घ (	नवाब साहब के खीरे के इस्तेमाल को क्या कहा जा सकता है ?

(iउदर की तृप्ति | (iiनवाबी प्रदर्शन

(iiiसूक्ष्म नफ़ीस या एब्स्ट्रैक्ट | (ivमेदे पर बोझ डालना

ड (	नई‘ कहानी के लेखक’ से क्या तात्पर्य है ?

(iलेखक | (iiमेदा

(iiiखीरा | (ivनवाब साहब

8. निम्नलिखित गद्य पाठों के आधार पर पूछे गए चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में दीजिए- 23x= 6

क. 'देश प्रेम की भावना किसी भी व्यक्ति में हो सकती है ,उसके लिए हथियार उठाना ही उचित नहीं है।‘ 'नेता जी का चश्मा 'पाठ के आधार पर इस बात को सिद्ध कीजिए।

ख. लखनवी‘ अंदाज’ पाठ के नवाब साहब पतनशील सामंती वर्ग के जीते जागते उदहारण हैं। स्पष्ट कीजिए।

ग. 'पड़ोस कल्चर' छूट जाने से आज की पीढ़ी को क्या हानि हुई है- एक कहानी यह भी पाठ में लिखित इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

घ . बिस्मिल्लाह खां के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित कियाआप? इनमें से किन विशेषताओं को अपने जीवन में अपनाना चाहेंगे?

9 . पठित पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए- x15= 5

वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीनकाल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपनी ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है|

क - मुख्य गायक की गरज में कौन अपनी गूँज मिलाता आया है ?

i) शिष्य | ii) भाई

iii) रिश्तेदार | iv) संगतकार

ख - जटिल-तानों के जंगल से कवि का क्या अभिप्राय है ?

i) कांपता हुआ सुर | ii) गरज से युक्त सुर

iii) सुर में लीन होना | iv) सुर से भटक जाना

ग - ‘जटिलतानों के जंगल- में, कौन-सा अलंकार है?

i) अनुप्रास | ii) रूपक

iii) उपमा | iv) अतिश्योक्ति

घ . संगतकार का क्या काम है?

i) मुख्य गायक की भारी भरकम आवाज को कौशलता प्रदान करना

ii) मुख्य गायक का सामान समेटना

iii) मुख्य गायक को बचपन की याद दिलाना

iv) मुख्य गायक के सुर में सुर मिलाना

ड . मुख्य गायक तथा संगतकार की आवाजो के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग हुआ है ?

i) भारी और कमजोर ii) गरज और गूँज

iii) अनहद और अंतरा iv) सरगम और स्थायी

9. निम्नलिखित पद्य पाठों के आधार पर पूछे गए चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर 30-25 शब्दों में दीजिए - 23 x = 6

क -गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने प्रेमभाव की गहनता को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

ख -परशुराम के क्रोध करने लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के कौनकौन से तर्क दिए-?

ग -बच्चे की मुसकान और बड़े की मुसकान में क्या अंतर है?

घ -कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?

11. पूरक पाठों के आधार पर निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 60-50 शब्दों में दीजिए - 4x2-8

क - 'माता का आँचल' पाठ में मूसन तिवारी कौन थे? उनके साथ बाल मंडली ने शरारत क्यों की थी और उसका क्या परिणाम हुआ? अपने विचारानुसार बताइए कि बच्चों द्वारा यह शरारत करना उचित था?

ख - प्राकृतिक सौन्दर्य के अलौकिक दृश्यों में डूबकर मनुष्य अपनी परेशानियाँ भूल जाता है। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर अपने मत प्रस्तुत कीजिए।

ग- लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

खंड रचनात्मक)-(घ) लेखन(

12 . निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :- 6

(क) मेक इन इंडिया

संकेत बिंदु:

,प्रगतिशील भारत ,भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ,भारत का स्वप्न ,भूमिका) उपसंहार(

(ख) योग और मानव जीवन

संकेत बिंदु:

(उपसंहार ,योग और निरोगी काया ,योग की विविध क्रियाएँ ,योग का अर्थ)

(ग) भ्रष्टाचार का दानव

संकेत बिंदु :

भूमिका, भ्रष्टाचार के कारण , रोकने के प्रयास , उपसंहार

13 . आप राहुलनई दिल्ली के निवासी हैं। आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में ,राधा है और आप तिलक नगर/ शब्दों में पत्र लिखकर इस समस्या की 100 मिलावट का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्य मंत्री को ओर आकृष्ट कीजिए। 5

अथवा

अपने मित्र को पत्र लिखकर विद्यालय द्वारा चलाए जा रहे साक्षरता अभियान के अंतर्गत आपके द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारें में बताते हुए पत्र लिखिए।

.14बैंकिंग सेवा बोर्ड शब्दों 80 नई दिल्ली के सचिव को लिपिक के पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए,में स्ववृत्त तैयार कीजिए। 5

अथवा

आपसे आपके बचत खाते की चेक बुक खो गई है निवेदन करते हुए इस सम्बन्ध में तत्काल उचित कार्यवाई करने का | | मेल लिखिए-बैंक प्रबंधक को ई

. 15 मतदान अधिकार के प्रति जागरूक करने के लिए मुख्य निर्वाचन अधिकारी की ओर से समाचार पत्र के लिए आकर्षक विज्ञापन 40 शब्दों में बनाइए। 4

अथवा

अपने मित्र/ सहेली को रामनवमी की शुभकामना देते हुए बधाई सन्देश लिखिए |

उत्तर पत्रक

सेट-1

आदर्श प्रश्न पत्र 2024-25

खंडअपठित बोध) क -)

1. प्रस्तुत गद्यांश पढ़कर पूछे गए विकल्पों में से सही विकल्प छांटिए 1+1+1+2+2= 7

(i) C- दुर्जन

)ii) C- केवल अपने

)iii (B- शीशे के समान

)iv(लेखक के अनुसार, मनुष्य को अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, न कि दूसरों की कमियों को लेकर छींटाकशी करने या टीकाआत्मन-टिप्पणी करने का। अपने मन की परख को पवित्र करने का सबसे उत्तम साधन है-िरीक्षण। यह आत्मा की उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

)v(अधिकांश व्यक्तियों में कोई न कोई बुराई अवश्य होती है। कोई भी बुराई न होने पर व्यक्ति देवता की कोटि में आ जाता है।

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढकर पूछे गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटिए - 1+1+1+2+2= 7

(i) A- समय धीरे धीरे जाता है।-

)ii) A- जो पुलिन पर बैठा हो।

)iii (B- युग वीर का

(iv) युग वीर, पुरुषत्व का धरती आह्वान करती रहती है।

(v) अमरत्व प्राप्त करने वाला व्यक्ति कठिनाइयों में खोज पथ,ज्योतिपूरित करे, विजयी वही होता है।

खंड -ख (व्यावहारिक व्याकरण)

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :1x4=4

(i) गौरव चार दिन गाँव में रहा और सबका प्रिय हो गया।

(ii) सूर्योदय होने पर अँधेरा गायब हो गया ।

(iii) मिश्र वाक्य

(iv) जो विद्यार्थी परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।

(v) संयुक्त वाक्य

4. निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित पदों का पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1x4=4

(i) मर मिटेंगे कर्तृवाच्य ,भविष्यत काल ,बहुवचन ,पुल्लिंग ,अकर्मक क्रिया -

(ii) सुन्दर -गुणवाचक विशेषण ,'फूल' विशेष्य बहुवचन ,पुल्लिंग ,जातिवाचक संज्ञा - फूल|,कर्ता कारक, 'खिले हैं' क्रिया का कर्ता|

(iii) व्यक्तिवाचक संज्ञाकर्ता कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग ,,| क्रिया कर्ता "है"

(iv) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग ,एकवचन ,"थे| क्रिया का कर्ता "

(v) वहां दसवींस्थानवाचक क्रियाविशेषण -, संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचकएकवचन। ,स्त्रील्लिंग ,

5. निर्देशानुसार :पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए "वाच्य" 1x4=4

(i) आज घूमने चला जाए ।
(ii) मैं उठ नहीं सकता ।
(iii) पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाएगा ।
(iv) लड़के से तैरा जाता है ।
(v) कर्मवाच्य

6. निम्नलिखित काव्यपंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का- किन्हीं चार नामोल्लेख कीजिए : 1x4=4

(i) मानवीकरण
(ii) अतिशयोक्ति
(iii) श्लेष अलंकार
(iv) अतिशयोक्ति अलंकार
(v) उत्प्रेक्षा

खंड - ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. निम्नलिखिए गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के रूप में सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1x5=5
(i) C- कबीर
(ii) D- कबीरपंथी मठ
(iii) D खामखाह झगड़ा मोल लेते -
(iv) D- साधू
(v) C- साधु के समान सब परिभाषाओं पर खरे उतारने वाले

8. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए : 2 x3=6

(क संस्कृति निबंध् का उद्देश्य सभ्यता और संस्कृति शब्दों की व्याख्या करना है। सभ्यता और संस्कृति शब्दों का -उत्तर (अर्थ स्पष्ट करना तथा मानव संस्कृति को अविभाज्य बताकर उसे मनुष्य के लिए कल्याणकारी बताना है।

बड़े नारों की आवश्यकता नहीं है-देश प्रेम प्रकट करने के लिए बडे -उत्तर (ख)| न ही सैनिक होने की आवश्यकता है| देश प्रेम तो छोटीछोटी बातों से प्रकट हो सकता है-| यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

पड़ोस कल्चर -उत्तर (ग)' से लेखिका का तात्पर्य हैघर के आसपास रहने वालों की संस्कृति। आधुनिक जीवन में अत्यधिक - व्यस्तता के कारण महानगरों के फ्लैट में रहने वालों की संस्कृति ने परम्परागत 'पड़ोस कल्चर' से बच्चों को अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

हम लेखक के इस विचार से बिल्कुल भी सहमत नही है कि बिना विचार घटना और पत्रों -उत्तर (घ) के भी कहानी लिखी जा सकती है। किसी भी कहानी के लिये उसकी आत्मा होता है- कथानक। यह कथानक अनिवार्य रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है, जिसे पत्रों के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है।

9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

(i) B-वज्र की-सी

(ii) C- सुख शांति-

(iii) C-बादल को

(iv) D- जलती धरती

(v) B-धरती को शीतल कर दो।

10. निर्धारित कविताओं के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए : 2x3=6

(क(उत्तरकवि कहना चाहता है कि निजी प्रेम के मधुर क्षण सबके सामने प्रकट करने योग्य नही होते। यह व्यक्ति के निजी - अनुभव होते हैं। अतः इस बारे में कुछ कहना सही नहीं है।

(ख) उत्तर -'संगतकार' प्रवृत्ति के लोग छलप्रपंच से दूर होते हैं। वे मुख्य कलाकार के सहयोगी ह-ोते हैं। अपने प्रति विश्वास को खत्म नहीं करना चाहते है। दूसरे की विशेषताओं को तराशने और सुधारने में लगे रहते हैं और इसे ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

(ग) उत्तरतुलसीदास की भाषा अवधी है। इसमें दोहा -, चौपाई शैली को अपनाया गया है । गेय पद है उनकी भाषा में संस्कृत के द्वारा काव्य को कोमल और संगीतात्मक बनाने का प्रयास किया है। कोमल ध्वनियों का प्रयोग किया है।

(घ) उत्तर संदेश को भेज कर प्रेम की -योग :प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें भूलकर कृष्ण अनीति पर उतर आए हैं। अत - मर्यादा के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं। इसलिएउन्हें राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम नीति पर लाने का प्रयास किया गया।-

11. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए : 4x2=8

(क) उत्तरआजकल विज्ञान का दुरूपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार भर में - मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं। विज्ञान के दुरूपयोग से चिकित्सक, गर्भ में ही भ्रूण परीक्षण कर रहे हैं। इससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। विज्ञान के दुरूपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़क कर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं। विज्ञान के उपकरणों के कारण ही वातावरण में गर्मी बढ़ रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है, बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है।

(ख) उत्तरलेखिका ने यह कथन उन पहाड़ी श्रमिक महिलाओं के विषय में कहा है -, जो पीठ पर बंधी डोको में (बड़ी टोकरी) अपने बच्चों को संभालते हुए कठोर श्रम करती हैं।

वास्तव में यह एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके सड़को, पुलों, रेलवे लाइनों का निर्माण करते हैं या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं, उन्हें बदले में बहुत कम मजदूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका श्रम देश की प्रगति में बड़ा सहायक होता है। हमारे देश की आम जनता बहुत कम पाकर भी देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाती है।

(ग) उत्तरयह बात सच है कि बच्चे को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन पालन ही नहीं करते थे - लेकिन उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी अत्यधिक ममता और माँ की गोद की जरूरत थी उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती है, पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी की याद आती है ।

खंड रचना) घ-त्मक लेखन(

12 .निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों का एक अनुच्छेद लिखिए।

प्रस्तुतीकरण (1) विषयवस्तु (3) भाषा की शुद्धता (1) उपसंहार या समापन)1 (= 6

13 पत्र लेखन-

प्रारंभ एवं समापन (1) विषयवस्तु (3) भाषा की शुद्धता (1) = 5

14. ई मेल व-स्ववृत्त लेखन किसी एक विषय पर ---शब्दों में 80

प्रारूप (1) विषयवस्तु (3) भाषा की शुद्धता (1) = 5

15. विज्ञापन व संदेश लेखन किसी एक विषय पर ---शब्दों में 40

विषयवस्तु (2) भाषा की शुद्धता (1) प्रस्तुति)1 (= 4

सेट-2

आदर्श प्रश्न पत्र 2024-25

खंडअपठित बोध) क -)

प्रश्न 1. अपठित गद्यांश

1. (गउसे बाहरी संकटो से बचाने के लिए (
2. पत्थरों को काटकर (ख)
3. नए साधन विकसित करके (ग)
4. असाध्य का अर्थ है -बनाने का आशय है 'असाध्य को संभव' जिसे साधा नहीं जा सकता या किया नहीं जा सकता। - असंभव से लगने वाले कठिन कार्य को कर दिखाना।
5. मनुष्य की बाहरी बनावट निरस्त्र और दुर्बल हैपरंतु आंतरिक बनावट बहुत शक्तिशाली ,, मुक्त और स्वछंद है। उसका मन नई से नई युक्तियाँ खोजकर अपनी बाधाओं पर विजय पा लेता है।

प्रश्न 2. अपठित पद्यांश

1. (गमैं तुम्हारी पीड़ाओं को अपने ह्रदय से धारण करती हूँ। (
2. दुखियों को गले लगाता है। (क)
3. शोषितों की सहायक। (ग)
4. जून के महीने में चारों ओर घनघोर गर्मी और ताप का वातावरण था और मसूरी पर शीतल जल की वर्षा हो रही थी। इस असमान व्यवहार को देखकर कवि व्यंग्य करने लगा।
5. व्यक्ति तब प्रिय बनता है जब वह औरों के दुख-दर्द को गले लगाता है।

व्याकरण

प्रश्न 3.

1. संज्ञा उपवाक्य।
2. हम घर से बाहर निकलें और बारिश होने लगी।
3. सरल वाक्य
4. विशेषण उपवाक्य
5. देश की रक्षा करने वालों को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार दिए जाते हैं।

प्रश्न 4.

1. कर्तावाच्य
2. लड़की के द्वारा आँगन में सोया जा रहा था।
3. कर्मवाच्य
4. मुझसे इस धूप में नहीं चला जाता।
5. छात्र पत्र लिखते हैं।

प्रश्न 5.

1. विशेषण, संख्यावाची, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन विशेष्य का विशेषण। 'कक्षा'
2. क्रिया विशेषण।
3. रीतिवाचक क्रिया विशेषण, क्रिया की विशेषता। 'चल रहे थे'
4. व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक।
5. गुणवाचक विशेषण,विशेष्य 'पान' , एकवचन पुल्लिंग। ,

प्रश्न 6.

1. अतिशयोक्ति।
2. मानवीकरण
3. उत्प्रेक्षा अलंकार ।
4. अतिशयोक्ति अलंकार ।
5. श्लेष अलंकार ।

पाठ्य-पुस्तक

प्रश्न 7.

1. गायन (ग)-शैलियों के।
2. स्वयं बिस्मिल्ला खान। (ख)
3. बालाजी के मंदिर। (ग)
4. रसूलन और बतूलन के संगीत को सुनकर। (ख)
5. वह दोनों महिलाओं के संगीत को सुनना चाहता था। (ख)

प्रश्न 8.

1. सभ्यतालोक व्यवहार के तरीके आदि सभ्यता के ,हमारे आवागमन के साधन ,सहन के तरीके-रहन ,पान-हमारे खान - अन्तर्गत आते हैं। सभ्यता स्थूल गुण है। यह संस्कृति का परिणाम है।
   संस्कृति मनन आदि प्रवृत्तियाँ आती ,चिंतन ,संस्कृति एक सूक्ष्म गुण है। इसके अन्तर्गत विचार -हैं। संस्कार संस्कृति के ही प्रत्यक्ष रूप हैं।
2. भटियारखाने के दो अर्थ हैं -12 अर्थात् चूल्हा चढ़ा रहता है। ,जहाँ हमेशा भट्ठी जलती रहती है .. जहाँ बहुत शोरगुल - रहता है। भटियारे का घर। कमीने और असभ्य लोगों का जमघट। पाठ के संदर्भ में यह शब्द पहले अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। रसोईघर में हमेशा खानाचौके तक -गृहस्थी या चूल्हे-पकाना चलता रहता है। पिताजी अपने बच्चों को घर-सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे उन्हें जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए भटियारखाना अर्थात् प्रतिभा को नष्ट करने वाला कह दिया है।
3. जिस दिन बालगोबिन भगत का बेटा मरासाधना अपनी चरम ऊँचाई पर थी। वे पूरी -उस दिन भगत जी की संगीत , तरह तल्लीन होकर गाए जा रहे थे। वे जन्म मरण में विश्वास नहीं करते थे। उन्हें विश्वास था कि उनके बेटे की आत्मा परमात्मा में लीन हो गई है। अतः यह चरम आनंद का अवसर है। वे इस अवसर पर उत्सव की तरह गाए जा रहे थे।

4. हालदार साहब के लिए सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाना बात नहीं थी। यह उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। 'सी-इतनी' प-कस्बे में देशभक्ति जीवित है। देश की नई पीढ़ी में देश-यह बात उनके मन में आशा जगाती थी कि कस्बे्रेम जीवित है। इस खुशी और आशा से वे भावुक हो उठे।

प्रश्न 9.

1. परशुराम की बड़बोलेपन की खिल्ली उड़ाने के लिए। (ख)
2. यहाँ भी आपके सामने हम छुईमुई की तरह डरपोक नहीं है। (ग)
3. देवों ,रघुकुल में ब्राह्मणों (घ), भक्तों और गायों से शत्रुता नहीं की जाती।
4. क्योंकि परशुराम के वचन इन शस्त्रों से भी अधिक मारक है। (ग)
5. परशुराम को। (ख)

प्रश्न 10.

1. गोपियों के मन की व्यथा हैकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को प्रकट न कर पाना। कृष्ण उनसे दूर चले जाएँगे ।ऐसा उन्होंने - कभी सोचा नहीं था। वे तड़पती रह गईं। वे यदि अपने वियोग की वेदना को किसी से कहना चाहें तो भी नहीं कह सकतीं। क्योंकि श्री कृष्ण के अलावा कोई उनके प्रेम को समझने वाला नहीं है।

2. किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग मुख्य कलाकार नहीं बन पाते। कारण स्पष्ट है। वे मुख्य गायक के सहायक के रूप में आते हैं। हाँ ,यदि कभी उन्हें स्वतंत्र रूप से अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेउनका गायन , तभी वे मुख्य स्थान प्राप्त कर सकेंगे। इस बात के अवसर कम ,उनका तबला या हारमोनियम ही सुना जाए ,सुना जाए होते हैं।

   मुख्य कलाकार बनने में जहाँ प्रतिभा चाहिए वहाँ लोगों के बीच संबंध भी ,चाहिए। कुछ लोग उसके प्रशंसक होने चाहिए। उसे ऊपर उठाने वाले होने चाहिए। जो कलाकार गरीब होते हैंवे प्रायः शीर्ष स्थान से वंचित ,साधनहीन होते हैं , रह जाते हैं। उन्हें स्वयं को स्थापित करने के अवसर बहुत कम मिलते हैं।

3. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है-
   1. बच्चे की मुसकान से मृतक में भी जान आ जाती है।
   2. यों लगता है मानो झोंपड़ी में कमल के फूल खिल उठे हों।
   3. यों लगता है मानो चट्टानें पिघलकर जलधारा बन गई हों।
   4. यों लगता है मानो बबूल के पेड़ से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

4. फागुन मास की शोभा ऐसी मोहक होती है कि कवि की आँख उस पर से हटती नहीं है। कहीं सरफड़ाती हवा -फड़ ,सराती- कहीं सुगंधित फूलों की बहार छा गई है। जहाँ भी देखो हरियाली ही ,चल रही है। कहीं डालियाँ पत्तों से भर गई हैं हरियाली नजर आ रही हैं। सब ओर फागुन मास की शोभा छा गई है।

प्रश्न 11.

1. आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसारभर में मनचाहे - विस्फोट कर रहे हैं। कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है। कहीं मुंबई बम विस्फोट किए जा रहे हैं। कहीं गाड़ियों में आग लगाई जा रही है। कहीं शक्तिशाली देश दूसरे देशों को दबाने के लिए उन पर आक्रमण कर रहे हैं। जैसे , नहस कर डाला।-अमरीका ने इराक पर आक्रमण किया तथा वहाँ के जनजीवन को तहस

   विज्ञान के दुरुपयोग से चिकित्सक बच्चों का गर्भ में भ्रूणपरीक्षण कर रह-े हैं। इससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़ककर अपनी फसलों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के उपकरणों के कारण ही वातावरण में गर्मी बढ़ रही है ,प्रदूषण बढ़ रहा है , बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है तथा रोजरोज भयंकर दुर्घटनाएँ हो रही हैं।-

2. सिक्किम की यात्रा के दौरान लेखिका को पता चला कि जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तो उनके अनुयायी उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ बाँध-देते हैं। किसी नए काम की शुरुआत में भी ये पताकाएँ फहराई जाती हैं। लेखिका को पता चला कि हर बुद्धिस्ट के घर में एक धर्मचक्र होता है -जिसे लोग घुमाते रहते हैं। ऐसा करने से उनके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।
लेखिका को लगा कि इस वैज्ञानिक युग में भी सभी समाजों में ये आस्थाएँविश्वास और धारणाएँ जीवित रहती हैं। ,

3. पाठ में वर्णित खेल और खिलौने आज देखने में नहीं आते। आज न तो किसी के पास समय हैन निश्छल मस्ती। , दुलार ,स्नेह ,पिता का निश्छल प्यार-सभी अपने बच्चों को कमाऊ पूत बनाने की जुगत में लगे हैं। पहले बच्चे को माता और समय मिलता था। माताउनके खेलों में रुचि लेते ,चूमते थे ,पिता बच्चों के साथ बच्चे बन जाते थे। उन्हें छूते थे-पिता बाज़ार से खिलौने खरीदकर घर भर देते हैं किंतु स्वयं उनमें रुचि नहीं लेते। इसलिए वह आनंद भी -थे। आज माता वह ममता और दुलार भी नहीं मिल ,नहीं मिलताता। सचमुच पाठ में वर्णित खेलखिलौनों की दुनिया आज से बेहतर -है।

लेखन

प्रश्न 12. अनुच्छेद लेखन -
प्रस्तावना या भूमिका)1(, विषयवस्तु)3(, भाषा) शैली-1(, उपसंहार या समापन)1 (6

प्रश्न 13. पत्रलेखन-
प्रारंभ)1(, विषयवस्तु)2(, भाषा) शैली-1(, समापन)1 (5

प्रश्न 14. ई लेखन-मेल लेखन अथवा स्ववृत्त-
ई)मेल या स्ववृत्त लेखन प्रारूप-2(, विषयवस्तु)2(, भाषा) शैली-1(5

प्रश्न 15. प्रस्तुति)1(, विषयवस्तु)2(, भाषा) शैली-1 (4

(क(

स्वच्छ'भारत स्वच्छ भारत'

'अपने घर ,विद्यालय ,परिसर और सम्पूर्ण पर्यावरण को स्वच्छ रखें'

स्वच्छ रहेगा पर्यावरण ,तभी तो स्वस्थ रहेगा हर एक जन

अथवा

(ख)

संदेश

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

15अगस्त ,20XX

प्रातः5 : 00बजे

आदरणीय अग्रज

देश की एकता और अखंडता के प्रतीक76 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ इस तिरंगे से ही देश की शान है ,ये देश हमारी पहचान है। न आए अपने वतन पर आँच कभी ,बस दिल में यही अरमान है । हमें गर्व है कि हम सब भारतीय हैं।

आपका भाई

अ ब स

आदर्श प्रश्न पत्र 2024-25

खंडअपठित बोध) क -)

1- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1+1+1+2+2=7

i (क (सांप्रदायिक संकीर्णता की अधिकता के कारण

iiउपरोक्त सभी (घ (

iii) घउपरोक्त सभी (

iv संत शिरोमणि कबीर को (माना गया है क्योंकि वे किसी धर्म के कट्टर समर्थक न होकर सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखते थे। वे भारतीय धर्मनिरपेक्षता के आधार पुरुष थे जो धार्मिक भेदभाव से कोसों दूर रहते थे।-

v) कबीर ने अपने जीवन के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियाँ, धार्मिक कट्टरता मिथ्याचार, वाह्याडंबर, ढकोसलों के अलावा देश की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत
किया।

2- निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1+1+1+2+2= 7

i- ख (रानी लक्ष्मीबाई की

ii- क वह मरते दम तक लड़ती रही थी (

iii- घ क और ख दोनों (

iv- अंतिम लीलापास के उस स्थल को कहा गया है-स्थली समाधि के आस-, जहाँ रानी लक्ष्मीबाई का अंग्रेजों के साथ भीषण युद्ध हुआ था। यहीं रानी को वीरगति मिली थी। यह रानी का अंतिम युद्ध था, इसलिए उसे अंतिम लीला स्थली कहा गया है।-

vकरते वह अपना बलिदान दे देता है। उसका -वीर का मान तब बढ़ जाता है जब वह अपने देश की रक्षा के लिए युदध करते - यह बलिदान देशवासियों में देशभक्ति और देशप्रम की भावना जगाते है। इससे दूसरे लोग भी अपने देश के लिए कुछ कर गुज़रने के लिए प्रेरित हो उठते हैं।

खंडव्यावहारिक व्याकरण (ख) -

3- निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये। 1 x4=4

i- मिश्र वाक्य
ii- संज्ञा उपवाक्य
iii- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।
iv- संयुक्त वाक्य
v- जो व्यक्ति परिश्रम करते हैं अच्छे लगते हैं।

4- निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1 x4=4

i चलो अब चला जाए।.
iiकर्तृवाच्य.
iii मेरे द्वारा प्रेमचंद का उपन्यास कर्मभूमि पढ़ा गया। .
iv कर्मवाच्य .
v उमेश से हँसा गया। .

5- निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1×4 =4

i- संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक 'की'
ii- व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'पढ़ाती थी' का कर्ता।
iii- पूर्वकालिक क्रिया, रीतिवाचक क्रियाविशेषण
iv- भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक।
v- विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'पुस्तक'

6- निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पीय प्रश्नों में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये। 1×4 =4

i- देख लो साकेत नागरी है यही स्वर्ग से मिलने गगन मे जा रही
ii- उत्प्रेक्षा अलंकार
iii- श्लेष अलंकार - पानी गए न उबरै मोती, मानुस चून।
iv- उत्प्रेक्षा अलंकार
v- मानवीकरण अलंकार

खंड- ग पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

7-. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1x5=5

i- ख (क्योंकि लोगों के मन में देशभक्तों व शहीदों के प्रति सम्मान कम हो गया है।
ii- ग सुभाष चंद्र बोस की (
iii- क देशभक्तों व शहीदों के प्रति सम्मान की भावना बनाएँ रखे। (
iv- घ(किसी बच्चे ने
v- घउपरोक्त सभी। (

8- गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर 25- शब्दो में लिखिए। 30 2x3=6

)i (लेखक ने यात्रा करने के लिए सेकंड क्लास का टिकट इसलिए खरीदा, क्योंकि उन्हें अधिक दूरी की यात्रा नहीं करनी थी। वे भीड़ से बचकर एकांत में यात्रा करते हुए नई कहानी के बारे में सोचना चाहते थे। वे खिड़की के पास बैठकर प्राकृतिक दृश्य का आनंद उठाना चाहते थे। सेकंड क्लास का कम दूरी का टिकट बहुत महँगा न था।

)ii (भगत कबीर के आदर्शों का पालन करने वाले व्यक्ति थे। गृहस्थ होने के बावजूद उनमें साधु वाले गुण थे। वह ना किसी से झगड़ा करते थे, ना किसी को कष्ट देना चाहते थे, बिना आज्ञा के किसी की वस्तु को नहीं छूते थे। सर्दी के मौसम में भी वे गंगा स्नान करके आते थे। इन गुणों के साथ साथ उनकी वेशभूषा भी साधुओं जैसी ही थी।

(iii) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि शहनाई की ध्वनि मंगलदायी मानी जाती है। इसका वादन मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से भी अधिक समय तक शहनाई बजाते रहे। उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक के रूप में की जाती है। उन्होंने शहनाई को भारत ही नहीं विश्व में लोकप्रिय बनाया।

)iv वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो अपना पेट भरा होने (तथा तन ढंका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठता है। वह अपने विवेक और बुद्धि से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है और समाज को अत्यंत उपयोगी आविष्कार देकर

उसकी सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरणार्थ न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। इसी तरह सिद्धार्थ ने मानवता को सुखी देखने के लिए अपनी सुख सुविधा छोड़कर जंगल की ओर चले-

9- निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1x5=5

iगुड़ पर लगी चीटियों से (ख -

ii कृष्ण के पास रहकर भी उनसे प्रेम न करने पर (क -

iii ख एवं ग दोनों से (घ -

iv रूपक (घ -

vसूरदास (ग -

10- गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर 25- शब्दों में लिखिए। 30

2 x3=6

(i) संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और भी बहुत से क्षेत्रों में होते हैं

- खेल में जीत का श्रेय कैप्टन को मिलता है जबकि विजेता बनाने में कई खिलाड़ियों का योगदान होता है। इसके अलावा उनके कोच और अन्य अनेक लोगों का योगदान होता है।
- राजनीति के क्षेत्र में चुनाव में जीत केवल उम्मीदवार विशेष की होती है, परंतु उसे विजयी बनाने में छोटे नेताओं के आलावा चुनावी चंदा देने वाले, प्रचार करने वाले जैसे बहुतों का योगदान होता है।
- किसी युद्ध को जीतने में सेनापति के अलावा बहुत से वीरों का योगदान होता है।

(ii) कवि ने बादल से फ़ुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं कहता बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है; क्योंकि कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि बादलों से पौरुष दिखाने की कामना करता है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

)iii(कवि आत्मकथा लिखने से इसलिए बचना चाहते है, क्योंकि -

1. आत्मकथा लिखने के लिए अपने मन की दुर्बलताओं, कमियों का उल्लेख करना पड़ता है।
2. अपनी सरलता के कारण उसने कई बार धोखा भी खाया है। वह अपने व्यक्तिगत जीवन को उपहास का कारण नहीं बनाना चाहता।
3. जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएँ हुई हैं, उन्हें याद करने से घाव फिर से हरे हो जाएँगे।

4- कवि अपने व्यक्तिगत अनुभवों को दुनिया के समक्ष व्यक्त नहीं करना चाहता।

(iv) वीर योद्धा अपनी वीरता और पौरुष का प्रदर्शन युद्धभूमि में अपने शत्रु के सामने उससे लड़कर दिखाता है। वह कहता नहीं करके दिखाता है। वीर योद्धा अपने मुँह सेअपनी तारीफ नहीं करता है।

11- पूरक पाठ्य पुस्तक के पाठों के आधार पर निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 50-शब्दों में 60 लिखिए। 4x2=8

(i) सफ़ेद बौद्ध पताकाएँ शांति व अहिंसा का प्रतीक हैं, यदि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं। कई बार किसी नए कार्य के अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। इसलिए ये पताकाएँ, शोक व नए कार्य के शुभांरभ की ओर संकेत करती हैं।

)ii (लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव वह होता है। तो हम घटित होते हुए देखते हैं परन्तु अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात् कर लेते हैं, यह वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं होता है। वह आँखों के आगे नहीं आया

होता। अनुभव की तुलना में अनुभूति उसके हृदय के सारे भावों को बाहर निकालने में उसकी मदद करती है। उसकी यह अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है इसलिए लेखक, लेखन के लिए अनुभूति को अधिक महत्व देता है।

(iii) माता का अँचल में माता-पिता के वात्सल्य का बहुत सरस और मनमोहक वर्णन हुआ है। इसमें लेखक ने अपने शैशव काल का वर्णन किया है। जैसे- भोलानाथ का अपने पिता के साथ आत्मीयता और सहचर लगाव का भाव, नित्य पूजा पाठ,चन्दन तिलक से दैनिक दिनचर्या की शुरुआत करना, पिता के कंधों पर सवारी, भोलानाथ के साथ बालसुलभ क्रीड़ा करते हुए जानबूझकर हार जाना उनके स्नेह व प्रेम को व्यक्त करता है। माता द्वारा भोलानाथ को ठूस-ठूसकर खाना खिलाना, ज्यादा से ज्यादा खाना खिलाने के लिए भिन्न-भिन्न तरह से स्वांग रचना यह माता के वात्सल्य,ममत्व और स्नेह को दर्शाता है। वही दूसरी तरफ अपने बेटे को लहुलुहान व भय से काँपता देखकर माँ भी स्वयं रोने लगती है और माता हृदय द्रवित हो उठता है।

खंड- घ रचनात्मक लेखन

12 लेखन-अनुच्छेद -

प्रस्तावना या भूमिका)1) विषयवस्तु (3) भाषा की शुद्धता (1) उपसंहार या समापन (1 (= 6

13-पत्रलेखन-

प्रारंभ)1) विषयवस्तु (2) भाषा की शुद्धता (1) समापन (1 (= 5

14- ई लेखन-मेल लेखन अथवा स्ववृत्त-

प्रारंभ एवं समापन) (औपचारिकताएँ)1) विषयवस्तु (3) भाषा की शुद्धता (1 (= 5

15- विज्ञापन लेखन -लेखन अथवा संदेश-

प्रस्तुतीकरण)1) विषयवस्तु (2) भाषा की शुद्धता (1 (= 4

आदर्श प्रश्न पत्र 2024-25

खंड- क अपठित बोध))

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 1+1+1+2+2=7

क कर्त्तव्य पालन (

ख देश के नागरिकों पर (

ग तरतीब , बे (

घ विशाल बाँध बनवाना तथा फौलाद के कारखाने खोलना आदि ,वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं खोलना (।

ड गाँव वालों द्वारा पंचवर्षीय योजनाओ को समझ न पाना। ,गाँव से जुडी समस्याओं में ग्रामीणों को नकारना (

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 1+1+1+2+2=7

क फसलों (का उगना और कटना |

ख अनश्वर (

ग | मिट्टी तप जाती है (

घ | बच्चों की गुडिया के समान मिट्टी के अस्तित्व को नगण्य बताकर उसकी विनम्रता और महानता को दर्शाना (

ड | पीटना और बिखरना,मिट्टी को नया स्वरुप लेने के लिए कुटना (

खंड ख -(व्यावहारिक व्याकरण(

3. 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' के निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क सरल वाक्य (

ख विशेषण आश्रित उपवाक्य -जिसे आपने पुरस्कार दिया था (

ग जो चरवाहे का बेटा गणेश है वह दिनभर घास में लेता रहा। (

घ संयुक्त वाक्य (

ड समझकर खर्च करते हैं।-रात मेहनत करते हैं और वे लोग सोच-लोग दिन (

4. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क कर्तृवाच्य (

ख कर्मवाच्य (

ग बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार करोड़ों खर्च करती है। (

घ कर्मवाच्य (

ड भाववाच्य (

5. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क संप्रदान कारक। ,एकवचन ,पुल्लिंग ,जातिवाचक संज्ञा -बच्चे (

खखेती।- विशेष्य , गुणवाचक विशेषण -प्राकृतिक (

ग व्यक्तिवाचक संज्ञा का (

घ पद (

ड भाववाचक - सत्य की (संज्ञा, पुल्लिंग संबंधकारक। ,एकवचन ,

6. निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित निम्नलिखित पांच प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए - 1x4=4

क उत्प्रेक्षा अलंकार (

ख श्लेष अलंकार (

ग मानवीकरण अलंकार (

घ श्लेष अलंकार (

ड अतिशयोक्ति अलंकार (

खंड(पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक) -ग -

7. पठित गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 1x5= 5

कवे सच्चे साधुओं जैसा ही उत्तम आचरण करत (े थे |

ख| जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना (

ग | वे कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे (

घ कबीरपंथी मठ में (

डकबीर (

8 गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर .25-30 शब्दों में दीजिए - 2x3=6

क ,गरीब था देशभक्ति की असीम भावना बिना चश्मे की मूर्ति को देखकर दुखी होना ,अपाहिज ,चश्मेवाला न कभी सेनानी था (| नया चश्मा लगाना आदि

ख बनावटी, दूसरों की संगति के लिए उत्साह नहीं ,सामाजिकता से दूर ,वास्तविकता से बेखबर ,बनावती जीवन शैली (भाव- | खाने की कल्पना मात्र से पेट भरना आदि उदहारण ,खीरा खाने में भी नजाकत ,खानदानी रईस बनने का अभिनय ,भंगिमा

ग डपटने का अधिकार परन्तु आज के परिदृश्य में -डाँटने ,पहले सभी के द्वारा बालकों को स्नेह करने ,संस्कार विहीन पीढ़ी (आपसी संबंधो में आत्मीय ,परिवर्तनता का अभाव |

घ | संगीत के प्रति लगन और समर्पण ,अहंकार शून्यता ,धार्मिक सौहार्दता ,सादगी ,व्यक्तित्व की सरलता (

9 . पठित पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 1x5=5

क संगतकार (

खसुर से भटक जाना (

ग अनुप्रास (

घ| मुख्य गायक की भारी भरकम आवाज को कौशलता प्रदान करना (

डगरज और गूँज (

1025 पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर .-30 शब्दों में दीजिए - 2x3=6

क-दिन ,वचन से श्रीकृष्ण को मन में धारण करना-कर्म-मन ,हारिल पक्षी के समान जीवनाधार ,गुड़ चींटी की भांति अनुरक्त (| योग सन्देश सुनकर व्याकुल होना आदि ,बैठते नाम रटना-उठते ,रात

ख परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण द्वारा धनुष के टूटने का तर्क देना (कि इस धनुष के तोड़ने से किसी को क्या लाभ या हानि हो सकती है। धनुष तो बहुत ही जीर्णशीर्ण पुराना था भैया राम के छूटे ही यह धनुष टूट गया इसमें भैया राम का कोई - भी दोष नहीं है।

गबच्चे की मुसकान निश्छल (, निष्कपट स्वार्थरहित होती है बच्चे की मुसकान में जादूसा होता है जो मृतक में भी जान डाल - देती है जबकि बड़ों की मुसकान में धूर्तता, व्यंग्य, उपहास, स्वार्थलोलुपता, बनावटीपन,कुटिलता आदि होता है।

घकवि अपने आपको साधारण व्यक्ति समझना (,कवि का जीवन अभावों, दुखों, मुसीबतों अपने साथ घटित चलप्रपंचों आदि से - भरा पड़ा है आत्मकथा लिखने का मतलब अपने दबे ज़ख्मों को उधेड़ना और हरा करना और व्यथित होना और लोगों के हँसी का पात्र बनना।

11. पूरक पाठों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 50- शब्दों में 60दीजिए - 4x2=8

क ढीट दोस्त बैजू के बहकावे में आकर उनको चिढ़ाना ,वृद्ध व्यक्ति जिन्हें आँखों से कम दिखाई देता था (, उनके द्वारा दौड़ाया जाना बैजू और भोलानाथ को पकड़कर पाठशाला बुलवानाग ,बैजू का भाग जाना ,ुरु जी द्वारा भोलानाथ की खबर लेना , | पिता के चिरौरी करने पर छोड़ना

ख ,आसमान छूते पर्वत शिखरों ,लेखिका द्वारा मौन भाव से शांत हो ऋषि की भाँति प्राकृतिक दृश्य को अपने भीतर समाना (इठलाती तीस्ता नदी क ,चाँदी की तरह कौंध मारती ,दूध की धार की तरह गिरते प्रपातोंो, फेन उगलते झरनों को देखकर आल्हादित होना| सारी तामसिक भावनाओं का धुल जाना आदि ,झरने की धारा में पाँव डुबाने पर मन का काव्यमयी हो जाना ,

ग बम के विनाशकारी परिदृश्यों-जब लेखक खुद जापान जाकर हिरोशिमा में हुए अणु (,रेडियम पदार्थ से झुलसे चट्टानों पर अंकित मानव आकृति को अपनी आँखों से देखा तो लेखक को ऐसी अनुभूति हुई कि मानो यह सब कुछ प्रत्यक्ष रूप से मेरे साथ सब कुछ घटित हुआ हो।

खंड घ -(रचनात्मक लेखन(

12-शब्दों में अनुच्छेद लिखिए 120 विषयों में से किसी एक विषय पर 3 निम्नलिखित . 6

भूमिका -(1) अंक
विषयवस्तु) -3 अंक (
भाषा की शुद्धता)1) अंक और उपसंहार या समापन (1 अंक (

13. कोई एक पत्र लिखिए - 5

आरम्भ और अंत -(1) अंक
विषयवस्तु -(3) अंक
भाषा की शुद्धता -(1) अंक

14. स्ववृत अथवा ई - मेल लेखन- 5

प्रस्तुतीकरण -(1) अंक
विषयवस्तु -(3) अंक
भाषा की शुद्धता -(1) अंक

15. विज्ञापन लेखन अथवा सन्देश लेखन - 4

प्रस्तुतीकरण -(1) अंक
विषयवस्तु -(2) अंक
भाषा की शुद्धता -(1) अंक

*****